Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - ५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मार्च (प्रथम) २०१३

ऋषि बोध दिवस (१० मार्च, २०१३)

बोध व सत्यग्राहिता की प्रेरणा

१

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कारगिल युद्ध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने पर महावीर चक्र प्राप्त श्री दिगेन्द्र कुमार जी का ऋषि उद्यान, अजमेर में आगमन।

अपनी छाती व अँगूठे पर गोलियों के निशान दिखाते हुए श्री दिगेन्द्र कुमार जी।

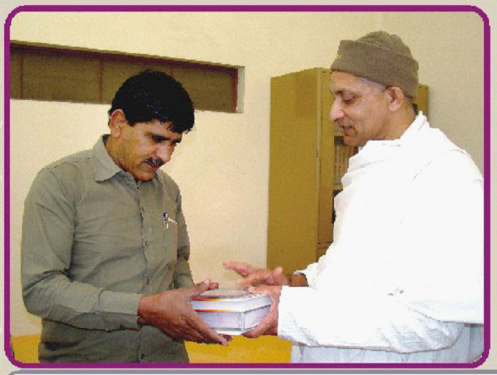

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ अंक : ०५
दयानन्दाब्द: १८८
विक्रम संवत्: फाल्गुन कृष्ण, २०६९
कलि संवत्: ५११३
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११३

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मार्च प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. भाषा: एक को उपयोग में लज्जा...	सम्पादकीय	०४
२. जिन्दगी से खेलो ना	सत्यजित्	०७
३. जिज्ञासा-समाधान-४३	सत्यजित्	०८
४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
५. नैष्ठिक अग्निव्रत के पत्र का उत्तर...	सत्यजित्	१६
६. हिन्दी में अशुद्ध वर्तन का बढ़ता...	भेरुसिंह राव	२४
७. गुरुमन्त्र गायत्री	उर्मिला राजोत्या	३०
८. पाठकों के विचार		३३
९. पाठकों की प्रतिक्रिया		३४
१०. संस्था समाचार	ब्र. प्रभाकर	३७
११. आर्यजगत् के समाचार		४०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- **उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं** -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

भाषा: एक को उपयोग में लज्जा आती है, दूसरा इससे घृणा करता है।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद देश के सामाजिक व राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में जो सबसे बड़ा अन्तर आया है, उनमें राष्ट्रीयता के आधार बदल गये हैं। देश को स्वतन्त्र कराने की लड़ाई लड़ते समय सोचा गया था कि जब देश स्वतन्त्र हो जायेगा, तब हम अपने विचारों, अपनी वस्तुओं को बढ़ावा देंगे, जिससे हमारा देश स्वतन्त्र होने के साथ दृढ़ भी हो, परन्तु हुआ सब इसके विपरीत। आज हमारे व्यवहार में हमारी कोई ऐसी पहचान नहीं, जो हमें इस देश का बनाती और बताती हो। हम एक विदेशी भाषा के लिए इतने लालायित रहे और प्रयत्नशील रहे, जो देश की स्वतन्त्रता के समय दो प्रतिशत लोगों की भी नहीं थी, आज उसे हम अपने देश की भाषा की मान्यता दे रहे हैं। जो भाषा इस देश के आधे से अधिक लोग जानते और बोलते थे, वह भाषा हमारे व्यवहार तो क्या चर्चा का विषय भी नहीं रह गई है।

देश की स्वतन्त्रता के समय राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत नेताओं के कारण पं. नेहरू की न चल सकी और वे अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा नहीं बना सके, परन्तु उनका वर्चस्व कम होते ही पं. नेहरू ने व्यावहारिक रूप में अंग्रेजी के वर्चस्व को इस देश में स्थापित कर दिया। स्वाभाविक है कि जो भी शिक्षा-पद्धति बनेगी, आने वाली पीढ़ी को उसी के आधार पर शिक्षित किया जायेगा। शासन और प्रशासन को अंग्रेजी का व्यवहार पसन्द था, सारी शिक्षा-पद्धति उसी के अनुसार बनाई गई। धीरे-धीरे भाषा ही नहीं, शिक्षा का माध्यम ही अंग्रेजी बन गया और अंग्रेजी शिक्षा देने वाले विद्यालयों की इस देश में बाढ़ आ गई। परिणाम स्वरूप जिन लोगों ने अपने गलत स्वप्नों के चलते हिन्दी, संस्कृत सीखने का प्रयास किया था, वे भौतिक प्रगति में पीछे रह गये या उससे किनारा कर लिया। परिणाम स्वरूप बड़े-बड़े हिन्दी-भाषी प्रदेश अपने पिछड़ेपन से तंग आकर हिन्दी का रास्ता छोड़कर अंग्रेजी का राजमार्ग पकड़ने में अपनी भलाई समझने लगे।

हमारे देश की भाषा के विषय में विचित्र परिस्थिति है। अन्तर्राष्ट्रीयता के नाम पर हमने संख्याओं को रोमन में लिखना स्वीकार किया। यह संख्या देखते-देखते हिन्दी के 'एक' से अंग्रेजी के 'वन' में बदल गई। जब संख्या एक से वन हो गई, तो पहाड़े 'दो एकम दो' से 'टू वन जा टू' क्यों नहीं होंगे। आज हमारे बच्चे न हिन्दी की संख्या जानते हैं न पहाड़े, क्योंकि हमने उनको सिखाया ही नहीं। यही क्रम चलते हमारी मूल शब्दावली की हिन्दी, अंग्रेजी वाली हिन्दी कैसे बन जाती है, उसका अच्छा उदाहरण दिल्ली की मैट्रो रेल है- इसका एक स्टेशन है 'यमुना बैंक'। पता नहीं यमुना की अंग्रेजी क्यों नहीं बनी। मैट्रो की लाल रेखा-रेड लाइन, नीली रेखा-ब्लू लाइन, पीली रेखा-येलो लाइन, बैंगनी रेखा-बैन्जाइन बनकर हिन्दी हो गई। जब हिन्दी को अंग्रेजी में पढ़ते हैं, तब राज्यसभा में सिंघवी का भाषण स्मरण हो आता है। वे संस्कृत के वितण्डावाद को अंग्रेजी में विट्टण्डवाद पढ़ते हैं। जब रेलवे के अधिकारी नामों की हिन्दी बनाते हैं, तब जीन्द को जिन्द, और बांदीकुई को बण्डीकुई चिल्लाते हैं। लोगों ने एक व्यंग्य बना रखा था कि हिन्दी की हिन्दी कर दी, परन्तु अधिक उचित है हिन्दी की अंग्रेजी कर दी।

भारत सरकार में अंग्रेजी और अंग्रेजपरस्त लोगों का वर्चस्व है जो कि पिछले पैंसठ वर्ष में दिन-प्रतिदिन दृढ़ ही होते गये हैं। आज उनका विरोध निरर्थक होकर रह गया है। फिर भी उनकी एक इच्छा अभी अधूरी है। वे अंग्रेजी को भारत की आधिकारिक राष्ट्रभाषा बनाने में समर्थ नहीं हुए, जिसके लिये वे बलपूर्वक लगे हुए हैं। इसके चलते उन्होंने शासन में जितनी हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने वाली संस्थायें थीं, या तो उन्हें समाप्त कर दिया अथवा निष्क्रिय कर दिया। पिछले दिनों इन लोगों ने सरकार से बड़ी सफलता प्राप्त की, जब हिन्दी में संस्कृत व प्रादेशिक भाषा के शब्दों के स्थान पर अंग्रेजी और उर्दू के शब्दों की स्वीकार्यता आधिकारिक रूप से मनवा ली। इससे उनका आधा उद्देश्य पूरा हो गया। आज समाचार पत्रों और दूरदर्शन से हिन्दी समाप्त हो गई है। केवल अंग्रेजी व उर्दू की खिचड़ी को हिन्दी के नाम पर परोसा जा रहा है, इससे पचास-साठ प्रतिशत शब्द बलपूर्वक अंग्रेजी के ठूंसे जाते हैं। जिससे यह भ्रम हो कि देश के सभी लोग अंग्रेजी शब्दावली को भली प्रकार से समझते हैं, अंग्रेजी उनके व्यवहार के लिये उपयोगी है।

अंग्रेजी स्थापित करने वाले तन्त्र की अगली इच्छा है कि हिन्दी की देवनागरी लिपि समाप्त करके रोमन लिपि में लिखा जाए, यह बात शासन के स्तर पर स्वीकार की जाये। इससे अंग्रेजी का वर्चस्व सदा के लिए इस देश में स्थापित हो जाये। इतना ही नहीं, यह नीति केवल हिन्दी ही नहीं

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अपितु सभी भारत की प्रादेशिक भाषाओं के साथ भी अपनाने का इनका विचार है। इस कार्य की सफलता में थोड़ी सी बाधा कुछ हिन्दी पक्ष के लोगों की है, जो धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं। जब देश स्वतन्त्र हुआ था, तब शासन में अंग्रेजी के साथ हिन्दी व संस्कृत के अच्छे जानकार लोग थे। उनका चिन्तन संस्कृत-संस्कृति से प्रेरित था। उस समय के जितने संस्थानों के उद्घोष वाक्य हैं, वे संस्कृत में है, पीछे ऐसे लोग आये जो संस्कृत अभिज्ञ तो नहीं थे, परन्तु उनके मन में संस्कृत के प्रति आदर भाव था। परन्तु आज की पीढ़ी उससे अनभिज्ञ तो है ही, उसके साथ यहां की भाषा-संस्कृति के प्रति उपेक्षा का भाव भी उनमें आ गया है। आज का व्यक्ति अपना नाम, अपना पता, व्यवसाय, कार्य सब कुछ अंग्रेजी में लिखना गौरव समझता है। उसे किसी नये मित्र से हिन्दी में बात करने में लज्जा का अनुभव होता है। भाषा की दुर्दशा के पीछे मुख्य कारण शासन की द्रोह-बुद्धि है, वहीं भाषा-भाषियों में उसके प्रति आत्मीयता का अभाव है। दिल्ली से प्रकाशित एक दैनिक समाचार-पत्र 'नेशनल इण्डिया' में सात फरवरी ०१३ को एक समाचार प्रकाशित हुआ है। बहुतों ने पढ़ा होगा, परन्तु विशेष प्रतिक्रिया नहीं हुई। समाचार था-मदुरई के जिलाधीश अंशुमान मिश्र ने धर्म-स्थलों पर जाने वाले मार्गों के सूचक नामपट्ट तीन भाषाओं में बनवा कर लगवाये, पहले तमिल, फिर अंग्रेजी, फिर हिन्दी। इस पर मदुरई के संगठनों ने आपत्ति की ''यह हिन्दी को बढ़ावा देना है। उन पर थोपना है।'' जिस देश के निवासियों की मानसिकता इस प्रकार की हो तो उस देश की राष्ट्रीयता कैसे बनेगी?

जिलाधीश ने नामपट्ट से हिन्दी हटाई और फेसबुक पर खेद व्यक्त किया कि उनका हिन्दी थोपने का कोई विचार नहीं, उन्होंने यात्रियों की सुविधा के लिए ऐसा किया था। इस देश में संस्कृत और हिन्दी के साथ जो व्यवहार है, वह है- ''हिन्दीभाषी उसके व्यवहार में लज्जा अनुभव करता है, तमिल जैसे राजनीति-प्रेरित लोग हिन्दी के प्रति घृणा पैदा करते हैं।'' एक बार पूर्व मुख्यमंत्री करुणानिधि ने कहा था, मेरे प्रदेश में हिन्दी रेलवे स्टेशन और डाकखाने के पट्ट के अतिरिक्त कहीं नहीं मिलेगी।

इस प्रकार की मानसिकता बढ़ती जा रही है। पहले केन्द्रीय विद्यालय के पाठ्यक्रम से संस्कृत को बाहर किया, फिर भारतीय सेवा की परीक्षाओं से संस्कृत को निकाला, प्रान्तीय सेवाओं से भी संस्कृत को हटाया गया। विद्यालय में संस्कृत विषय प्रायः नहीं खोले जाते। पिछली जनवरी में सम्पन्न 'विश्व संस्कृत सम्मेलन' में शिक्षामन्त्री कपिल सिब्बल ने कहा था ''वर्तमान में संस्कृत पढ़ने का कोई लाभ नहीं, जब तक उसे अंग्रेजी माध्यम से न पढ़ा जाए।'' इस परिस्थिति में हम केवल यह सुनकर सन्तुष्ट हो जाते हैं कि कम्प्यूटर की भाषा संस्कृत है। नासा ने वेद के बारे में महत्त्वपूर्ण बात लिखी है, संयुक्त राष्ट्र संघ ने ऋग्वेद को दुनिया की प्राचीन पुस्तक माना है। ठीक है माना है, परन्तु देश में तो भाषा समाप्त हो रही है, उस मान्यता का क्या?

ऐसा नहीं है कि इसका विकल्प नहीं है, विकल्प है, परन्तु कोई संगठन, कोई संस्था ऐसी नहीं जो इन बातों पर ध्यान दे और उसके प्रतिकार के लिए यत्न करे। इस देश में प्रजातन्त्र है, प्रजा का बल सबसे बड़ा है, परन्तु प्रेरित करने की आवश्यकता है। सरकार के भाषा-विरोधी कृत्यों का विरोध किया जाए। भाषा के उपयोग के लिए इन विषयों को विद्यालयों में पढ़ाये जाने की मांग की जाए। विद्यालयों में विषय खुलवाये जायें और पाठ्यक्रम में इनका समावेश निश्चित किया जाए, संसद और विधानमण्डलों में इसके लिए मांग की जाए। जो संस्थान इन विषयों की शिक्षा दे रहे हैं, उसमें पढ़ने वाले छात्र तथा पढ़ाने वाले अध्यापकों को आर्थिक अनुदान समानता के आधार पर दिया जाए। यदि संगठित प्रयत्न किया जाए तो स्थिति को बिगड़ने से रोका जा सकता है और उसे बदला भी जा सकता है।

इस समय एक बहुत अच्छा अवसर डॉ. रामप्रकाश (राज्य सभा के सदस्य) के माध्यम से प्राप्त हुआ है। संस्कृत-हिन्दी प्रक्रिया को उस पर कार्य करके उसका लाभ उठाना चाहिए। डॉ. रामप्रकाश ने अपने अतारांकित प्रश्न संख्या ८७१ तथा ८७८ में सरकार से जानकारी मांगी-

प्रश्न १. देश में राज्यवार कितने केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं?

उत्तर-मानव संसाधन विकास मंत्रालय के क्षेत्राधिकार में ४० केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं।

प्रश्न २. किस-किस केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग नहीं है?

उत्तर-हिन्दी विभाग रहित केन्द्रीय विश्वविद्यालय -१. जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, **२.** नागालैण्ड विश्वविद्यालय, **३.** सिक्किम विश्वविद्यालय, **४.** बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, **५.** जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **६.** कश्मीर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **७.** झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **८.** उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **९.** तमिलनाडू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **१०.**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय।

प्रश्न ३. किस-किस केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग नहीं है?

उत्तर-संस्कृत विभाग रहित केन्द्रीय विश्वविद्यालय- **१.** राजीव गांधी विश्वविद्यालय, **२.** तेजपुर विश्वविद्यालय, **३.** मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय **४.** अंग्रेजी और विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, **५.** जामिया मिलिया इस्लामिया, **६.** मिजोरम विश्वविद्यालय, **७.** पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, **८.** मणिपुर विश्वविद्यालय, **९.** नागालैण्ड विश्वविद्यालय, **१०.** सिक्किम विश्वविद्यालय, **११.** बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, **१२.** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, **१३.** गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, **१४.** बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **१५.** गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **१६.** हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **१७.** हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **१८.** जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **१९.** कश्मीर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२०.** झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२१.** कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२२.** केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२३.** उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२४.** पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२५.** राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२६.** तमिलनाडू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, **२७.** इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

प्रश्न ४. क्या सरकार जिन केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग नहीं है, वहां यह विभाग खोलने का प्रयास करेगी?

उत्तर-केन्द्रीय विश्वविद्यालय, संसद के अधिनियमों के तहत स्थापित स्वायत्त संस्थाएं हैं और अपने अधिनियमों और संविधियों और उनके तहत बनाए गए अध्यादेशों द्वारा अभिशासित होते हैं। इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों को यह अधिकार प्रदान किया गया है कि वे अपने सांविधिक निकायों की सिफारिश और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विजिटर के अनुमोदन से विभाग स्थापित कर सकता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा यथासूचित अपने दिनांक १७.०२.२०११ के पत्र संख्या १४-१/२०११ के जरिये (राजभाषा) यूजीसी ने गैर-हिन्दीभाषी क्षेत्रों में स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालयों सहित सभी विश्वविद्यालयों को हिदायतें दी हैं कि वे हिन्दी विभाग स्थापित करें।

प्रश्न संख्या ८७८ में निम्न जानकारी चाही गई थी- **१.** राज्य सरकारों द्वारा स्थापित किये गये विश्वविद्यालयों की संख्या कितनी है? **२.** उन विश्वविद्यालयों का विवरण जिनमें हिन्दी-विभाग नहीं है? **३.** उन विश्वविद्यालयों का विवरण जिनमें संस्कृत विभाग नहीं है। **४.** जिन विश्वविद्यालयों में हिन्दी-विभाग नहीं है? उनमें विभाग खोलने के लिए सरकार क्या प्रयत्न कर रही है? सरकार ने उत्तर में सूचित किया है कि देश में ४५१ विश्वविद्यालय हैं, २३२ में हिन्दी विभाग नहीं है। २३९ में संस्कृत विभाग नहीं है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग राज्यों को अनुदान देता है। अहिन्दी भाषी क्षेत्र के १३ विश्वविद्यालयों को आयोग आर्थिक अनुदान देता है।

सरकार ने ३० नवम्बर २०१२ को डॉ. साहब के उत्तर में आंकड़े देते हुए विश्वविद्यालयों के नाम और उनकी संख्या दी है। जिनमें हिन्दी या संस्कृत विभाग नहीं है, उनका उल्लेख हम यहां पाठकों की जानकारी के लिए दे रहे हैं। आश्चर्य और दु:ख की बात है कि जिन विश्वविद्यालयों की स्थापना परम्परागत संस्थान के बाहर सामान्यव्यक्ति को अध्ययन की सुविधा प्रदान करने के लिए की गयी है, उनमें भी हिन्दी, संस्कृत जैसे विषयों को स्थान नहीं दिया गया है। जैसे-इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय आदि।

क्र.	राज्य	कुल विश्वविद्यालय	हिन्दी रहित विश्वविद्यालय	संस्कृत रहित विश्वविद्यालय
१	आन्ध्रप्रदेश	३२	२१	२४
२	अरुणाचल प्रदेश	३	०	०
३	असम	११	४	३
४	बिहार	१५	३	४
५	छत्तीसगढ़	१७	९	९
६	दिल्ली	५	४	४
७	गोवा	१	०	१
८	गुजरात	३६	२०	२०
९	हरियाणा	१९	१०	१०
१०	हिमाचल प्रदेश	१९	९	९
११	जम्मू कश्मीर	७	५	५
१२	झारखण्ड	१०	३	३
१३	कर्नाटक	२७	१३	१४
१४	केरल	११	३	५
१५	मध्यप्रदेश	२६	९	११
१६	महाराष्ट्र	२०	१२	१३
१७	मणिपुर	०	०	०
१८	मेघालय	८	४	४
१९	मिजोरम	१	१	१
२०	नागालैण्ड	२	१	१
२१	ओड़िसा	१४	९	८
२२	पंजाब	१४	६	६
२३	राजस्थान	४८	२४	२५
२४	सिक्किम	४	३	३
२५	तमिलनाडू	२४	१६	१७
२६	त्रिपुरा	१	१	१
२७	उत्तरप्रदेश	४२	२२	२१
२८	उत्तराखण्ड	१२	८	८
२९	पश्चिम बंगाल	२१	१२	९
३०	चण्डीगढ़	१	०	०
३१	पाण्डीचेरी	०	०	०
		४५१	२३२	२३९

हमें इन परिस्थितियों पर गम्भीरता से विचार कर कार्य करना चाहिए, तब भी वह कार्य सिद्ध नहीं हो, तो संस्कृत की यह सूक्ति हमारा मार्गदर्शन करेगी-

यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।

-धर्मवीर

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

जिन्दगी से खेलो ना

–सत्यजित्

प्रभुकृपा से हमें मानव तन में कर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार मिल चुका है। नये कर्म करने का अवसर मिलना बहुत बड़ी बात है। साथ में कर्म की स्वतन्त्रता का होना, वरदान से कम नहीं है। हम इच्छानुसार जैसे व जितने कर्म करना चाहते हैं, वैसे व उतने कर्म यथासामर्थ्य स्वतन्त्रता से कर सकते हैं। अच्छे व बुरे का विवेक हमें करना होता है। विवेक प्राप्ति का साधन बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियां आदि प्रभु द्वारा उपलब्ध करा दी गई हैं। अन्त:करण में भी प्रभु की प्रेरणाएं अनुभव की जा सकती हैं। इन सबका सदुपयोग कर विवेक को जगाये रखते हुए, हित-अहित का विचार रखते हुए कर्म की स्वतन्त्रता के अधिकार का उपयोग करना होता है।

प्रभु द्वारा प्रदत्त कर्म की स्वतन्त्रता तभी वरदान सिद्ध होती है, जब विवेक के साथ इसका उपयोग किया जाता है। किसी कर्म के करने या न करने का निर्णय अन्तत: सुख-दु:ख के आधार पर होता है। इसे ही हित-अहित के रूप में देखा जाता है, जो कि उचित भी है। स्वज्ञान के अनुसार प्राय: सभी सुख-दु:ख/हित-अहित को ध्यान में रखकर कर्म के करने न करने का निर्णय करते हैं। अन्तर इस ज्ञान में होता है, अन्तर विवेक में होता है। ज्ञान-विवेक में अन्तर आते ही कर्म में अन्तर आ ही जाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति को अपने कर्मों पर दृष्टि रखने के साथ अपने ज्ञान-विवेक पर भी दृष्टि रखनी होती है।

प्रभुकृपा से बहुत से मानव सच्चे हृदय से आध्यात्मिक मार्ग पर चल रहे हैं। अपने जीवन को सार्थक आध्यात्मिक-जीवन में बदल रहे हैं। इनका विवेक इन्हें एक निश्चित मार्ग पर चलाता है। कर्म के करने या न करने का निर्णय ये भी अन्तत: सुख-दु:ख/हित-अहित के आधार पर लेते हैं, किन्तु दूर-दृष्टि से। मात्र इन्द्रियों के सुख-दु:ख को ध्यान में रखा जाए, मात्र इस जन्म को ध्यान में रखा जाए, तो कर्म के करने या न करने के निर्णय एक सीमा तक ही उचित हो पाते हैं। इतने मात्र से इस मानव जीवन की सार्थकता नहीं हो पाती है।

प्रभुकृपा से आध्यात्मिक व्यक्ति में यह समझ बनने लगती है। वह इस समझ-विवेक को धीरे-धीरे बढ़ाता जाता है, परिष्कृत करता जाता है। वह अपने विवेक का परीक्षण करता रहता है और अपनी समझ को संशोधित करता चला जाता है। परिणाम यह आता ही है कि वह मात्र इस जीवन को ध्यान में रखकर करने या न करने का निर्णय नहीं करता, वह मात्र इहलौकिक सुख-दु:ख को आधार बनाकर निर्णय नहीं करता। उसकी दृष्टि में पारलौकिक सुख-दु:ख भी रहता है। वह दोनों को ध्यान में रखता है। दोनों का ध्यान रखते हुए हित-अहित के अनुसार कर्म करने या न करने का निर्णय लेता है। वह कर्म के करने या न करने का निर्णय गम्भीरता से लेता है। ऐसे में कभी निर्णय में देर भी हो जाती है, जो कि अन्यों को अव्यावहारिक प्रतीत होती है, किन्तु आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक होता है।

प्रभुकृपा से जैसे-जैसे विवेक परिपक्व होता जाता है, स्वाभाविक होता जाता है, दिशा व दृष्टि निश्चित-स्थिर होती जाती है, वैसे-वैसे निर्णय शीघ्रता-सहजता-सरलता से होते जाते हैं। निर्णय करते समय मन में कोई संघर्ष-द्वन्द्व-खिंचाव नहीं रहता। निर्णय उचित ही होते हैं, निर्णय हितकर ही निकलते हैं। आध्यात्मिक व्यक्ति एक भिन्न स्तर पर जीता है, उसके निर्णय अनेकों को अनुचित लग सकते हैं, लगते हैं, पर प्रभुकृपा से उसमें इतना आत्मविश्वास होता है कि वह अपने निर्णयों पर स्थिर रह पाता है, संतुष्ट रह पाता है, वह संशय से ग्रस्त नहीं होता। उसे स्पष्ट दिखता है कि इन सांसारिक लोगों की तरह निर्णय करना आत्मा के लिए हितकर नहीं है।

प्रभु ने सहजता से सृष्टि का निर्माण किया, उसके लिए यह क्रीड़ावत् था। वह संसार को सहजता से चला भी रहा है, यह भी उसके लिए क्रीड़ावत् है। कठिन दिखने वाला आध्यात्मिक जीवन भी विवेक के बढ़ने के साथ सहज होता जाता है, क्रीड़ावत् होता जाता है। सांसारिक व्यक्ति जब बिना विवेक के इस जीवन में क्रीड़ा करने लगता है, तो वह अपने को क्रीड़ा का आनन्द लेता हुआ अनुभव करते हुए भी आध्यात्मिक दृष्टि से विनाश की ओर ले जा रहा होता है। आध्यात्मिक दृष्टि से रहित यह क्रीड़ा उसके जीवन को खिलवाड़ बना देती है। वह अपने बहुमूल्य मानव जीवन से खेल रहा होता है। वह अपना बहुमूल्य जीवन/समय खेल में

शेष पृष्ठ ३६ पर.....

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जिज्ञासा-समाधान-४३

-सत्यजित्

गताङ्क का शेष .....

(८) उत्तर-.....क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्न आदि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं.....। (सत्यार्थप्रकाश समु. ३, दयानन्द ग्रन्थमाला, पृ.संख्या ६९।)

विवेचना (टीकाराम आर्य) - यहां उन पदार्थों का वर्णन है, जो सभी जीवधारियों के लिए बनाये हैं। इनमें **अन्नादि** अर्थात् शाक, सब्जी, औषधि सब निर्जीव पदार्थ हैं। यहां अन्न की गणना पृथिवी जल, वायु आदि के साथ की गई है।

८. समाधान (सत्यजित्) - प्रथम तो यहां पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य इन जड़=निर्जीव पदार्थों के साथ 'अन्नादि' शब्द के लिखा होने से यह सिद्ध नहीं हो जाता कि 'अन्नादि' भी जड़=निर्जीव ही होंगे। दूसरा यहां 'अन्नादि' शब्द ही लिखा है, शाक-सब्जी-ओषधि आदि शब्द महर्षि ने नहीं लिखे हैं। अन्न का अर्थ धान्य=धान=गेहूँ-चावल आदि के दाने भी लिये जाते हैं। ये अंकुरित व सूखी अवस्था में जड़=निर्जीव होते हैं। महर्षि के इस वचन से वृक्ष-वनस्पतियों का जड़त्व=निर्जीवत्व सिद्ध नहीं होता। यदि इस वचन से येन-केन प्रकारेण इनका निर्जीवत्व सिद्ध करने का प्रयास किया भी जावे, तो वह महर्षि का मन्तव्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि महर्षि ने अन्यत्र स्पष्ट ही वृक्ष को सजीव लिखा है। महर्षि के ऐसे वचन पहले लिखे जा चुके हैं।

(९) जब सृष्टि का समय आता है.....उत्पन्न होता है। उससे नाना प्रकार की ओषधियां, वृक्ष आदि, उनसे अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से शरीर होता है, परन्तु आदि सृष्टि मैथुनी नहीं होती। क्योंकि जब स्त्री-पुरुषों के शरीर परमात्मा बनाकर उनमें जीवों का संयोग कर देता है, तदनन्तर मैथुनी सृष्टि चलती है। (सत्यार्थप्रकाश समु. ८, दयानन्द ग्रन्थमाला पृ. संख्या-२०९)

विवेचना (टीकाराम आर्य) - इस सारे स्थल को पढ़कर, एक तथ्य=निष्कर्ष सामने आता है कि महत्तत्व से लेकर वीर्य तक सबका बनना शरीर के लिए है। जब शरीर बन जाता है, तब परमात्मा उसमें जीव भेजता है। इससे पूर्व पांच सूक्ष्म-भूत, इन्द्रियां, मन, पांच स्थूल-भूत, ओषधियां, वृक्ष, अन्न इनमें जीवात्मा नहीं भेजा। मैथुनी सृष्टि तब चलती है, जब स्त्री-पुरुषों के शरीर बनाकर उनमें जीवों का संयोग होता है। स्त्री-पुरुषों से पशु-पक्षी सबका ग्रहण होता है, जहां मैथुन से सृष्टि चलती है। यदि वृक्षों में जीव होता तो महर्षि उनकी अमैथुनी और मैथुनी सृष्टि का उल्लेख करते। किन्तु पृथिवी, जल, वायु, पर्वत, वृक्ष, ओषधि इनमें मैथुनी सृष्टि का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

९. समाधान (सत्यजित्) - महर्षि के इस वचन से भी यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि औषधियाँ-वृक्ष निर्जीव होते हैं। यहां सृष्टि-उत्पत्ति का क्रम बताया गया है। इस क्रम में स्त्री-पुरुष के शरीर सबसे अन्त में उत्पन्न हुए और वह अमैथुनी सृष्टि थी, यह बताया जा रहा है। इन स्त्री-पुरुष शरीर से पूर्व ओषधि-वृक्ष आदि उत्पन्न हो चुके थे, यह क्रम बताना उद्देश्य है। मैथुनी सृष्टि कब से चलती है, जब स्त्री-पुरुष शरीर व उनमें आत्मा का प्रवेश हो जाता है। जीवात्मा के प्रवेश की बात मात्र उन्हीं के लिए कही गई, जिनमें मैथुन से सन्तति होती है। वृक्षादि की वैसी उत्पत्ति नहीं होती, अतः उसमें आत्मा के प्रवेश की बात नहीं लिखी।

वृक्षादि वनस्पतियों में जीव होता है, इसकी पुष्टि में महर्षि के अनेक प्रमाण पहले दिये जा चुके हैं। पुनरपि यहीं का एक प्रमाण और देखें। इस प्रसंग में थोड़ा आगे पृष्ठ २११ पर लिखा प्रश्न-उत्तर भी वृक्ष को सजीव सिद्ध करता है। ''**प्रश्न-ईश्वर ने** किन्हीं जीवों को मनुष्य जन्म, किन्हीं को सिंहादि क्रूर जन्म, किन्हीं को हरिण, गाय आदि पशु, **किन्हीं को वृक्षादि**, कृमि, कीट, पतङ्गादि **जन्म दिये हैं**, इससे परमात्मा में पक्षपात आता है। **उत्तर**-पक्षपात नहीं आता, क्योंकि उन जीवों के पूर्वसृष्टि में किये हुए कर्मानुसार व्यवस्था करने से। जो कर्म के बिना जन्म देता तो पक्षपात आता।'' यहां प्रश्न में जीव के वृक्षादि के जन्म की बात लिखी है और परमात्मा पर पक्षपात का दोष लगाया है। महर्षि ने इसका उत्तर देते हुए जीव के वृक्षादि जन्म को कर्मानुसार बताकर पक्षपात दोष को हटाया है। इससे सिद्ध है कि महर्षि जीव के वृक्षादि जन्म को स्वीकार रहे हैं। यहां वृक्ष को भी मनुष्य, सिंह, हरिण, गाय, कृमि, कीट, पतङ्गादि के साथ पढ़ा गया है, जिनमें कि जीव कर्मानुसार जाते हैं। वृक्ष में जीव का कर्मानुसार जाना भी, वृक्ष के सजीव होने का प्रमाण है।

(१०) यद्यस्मदर्थमीश्वरो.....स्यात्। यथा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कृपायमाणेनेश्वरेण प्रजासुखार्थं कन्दमूलफलतृणादिकं रचितं, स कथं न सर्वसुखप्रकाशिकां सर्वविद्यामयीं वेदविद्यामुपदिशेत्?

जो.....नहीं होता। जैसे परमकृपालु ईश्वर ने प्रजा के सुख के लिए कन्दमूल, फल और घास आदि छोटे-छोटे भी पदार्थ रचे हैं सो ही ईश्वर सब सुखों के प्रकाश करने वाली सब सत्यविद्याओं से युक्त वेद-विद्या का उपदेश भी प्रजा के सुख के लिए क्यों न करता?.....बनाये हैं। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदोत्पत्तिविषय, दयानन्द ग्रन्थमाला पृ. सं. २५४-२५५)

विवेचना (टीकाराम आर्य) - यहां महर्षि का स्पष्ट आशय है कि प्रजा अर्थात् जीवधारियों के लिए कन्द, मूल, फल, घास रचे हैं। यहां वनस्पति की गणना प्रजा-सुख से पृथक् की है। इससे सिद्ध होता है कि वनस्पति जीव रहित है।

१०. समाधान (सत्यजित्) - यहां '**प्रजा**' का अर्थ '**समस्त जीवधारी**' नहीं है। क्योंकि यह ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का वेदोत्पत्ति विषय है और उद्धृत वाक्य में भी ईश्वर द्वारा वेद को देने की बात सिद्ध की जा रही है। कन्द, मूल, फल तो उदाहरण मात्र हैं। यहां उस प्रजा की बात की जा रही है, जिसके लिए वेद विद्या का उपदेश किया गया। वेदविद्या का उपदेश मात्र मनुष्यों के लिए किया गया है, अत: यहां '**प्रजा**' का अर्थ मात्र **मनुष्य** ही लेना चाहिए। यद्यपि कन्द, मूल, फल आदि मनुष्येतर जीवधारियों के लिए भी हैं, किन्तु यहां 'सब जीवधारियों के लिए ईश्वर द्वारा कन्दादि का रचा जाना' नहीं बताया जा रहा है, यह तो मात्र दृष्टान्त-उदाहरण के रूप में है, यहां तो 'वेदविद्या का उपदेश ईश्वर द्वारा किया गया' यह बताना चाह रहे हैं।

(११) तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त। (ऋ. म. ७, सू. ३४, मं. २५) हे भगवन्! तन्न: (सूर्य), वरुण: (चन्द्रमा), मित्र: (वायु), अग्नि: (अग्नि), आप: (जल), ओषधि (वृक्षादि वनस्थ पदार्थ) आपकी आज्ञा से सुखरूप होकर हमारा सेवन करे।

हमें सुख देने के लिए जिन पदार्थों की प्रार्थना की गई है, वे जीव रहित जड़ पदार्थ हैं। यहां वृक्षादि वनस्थ पदार्थ से वन में पैदा होने वाली वस्तुओं का निर्देश है, जो जीवधारियों के लिए जंगलों में पैदा की गई हैं। यदि सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल निर्जीव पदार्थों के साथ जीवधारी ओषधि का निर्देश होता तो मन्त्र में गाय, भैंस, बकरी, घोड़े आदि का भी उल्लेख होना चाहिए था। सूर्य से लेकर ओषधि, वृक्षादि तक उन पदार्थों की सूची है, जो स्वयं जीवधारी नहीं हैं, अपितु जीवधारियों के लिए उपयोगी हैं। इससे स्पष्ट है कि वृक्ष, वनस्पति निर्जीव=जड़ पदार्थ हैं।

("वृक्षों में जीव-एक भ्रांति, वैदिक मान्यता में वृक्षों में जीव नहीं" नामक पुस्तक, लेखक-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामदयालु शास्त्री तर्कशिरोमणी महोपदेशक, ३ अलीगढ़ कृष्णाटीला, पृष्ठ सं. ५८)

११. समाधान (सत्यजित्) - पूर्व लिखित समाधान ८ के समान ही यहां भी समझना चाहिए कि सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल इन निर्जीव पदार्थों के साथ ओषधी (वृक्षादि) शब्द के लिखे होने से यह सिद्ध नहीं होता कि ओषधी भी निर्जीव हैं। यह तर्क-आग्रह भी उचित नहीं कि यदि जीवधारी ओषधी का उल्लेख है तो अन्य जीवधारी गाय, भैंसादि का उल्लेख भी होना चाहिए था।

वैसे जो वचन प्रश्नकर्ता ने लिखा है वह शास्त्रार्थ महारथी पं रामदयालु शास्त्री तर्कशिरोमणी महोपदेशक की पुस्तक से लिया है। इस वेदमन्त्र का महर्षिकृत भाष्य उपलब्ध है। उसमें व इस अर्थ में भिन्नता है। महर्षि का पदार्थ इस प्रकार है-"हे विद्वानों जो (वनिन:) किरणवान् (इन्द्र:) बिजुली के समान राजा (वरुण:) श्रेष्ठ (मित्र:) मित्रजन (अग्नि:) पावक (आप:) जल और (ओषधी:) यवादि ओषधी (न:) हमारे लिए (तत्) उस सुख को (जुषन्त) सेवते हैं जिससे.....।" इस भाष्य में **सूर्य, चन्द्र, वायु** तो लिखे नहीं हैं। इनके स्थान पर **राजा, श्रेष्ठ मित्रजन** लिखे हैं, जो कि सजीव हैं। ऐसे में अब वह तर्क ही निराधार हो गया कि यहां ओषधी से पूर्ववर्ती सभी पदार्थ जड़ हैं, अत: ओषधी भी जड़ है। यहां पावक व जल ये दो निर्जीव पदार्थ हैं, राजा-मित्र सजीव हैं, अत: ओषधी को प्रश्नकर्ता के तर्क के अनुसार भी निर्जीव सिद्ध नहीं किया जा सकता। जो मन्त्रार्थ प्रश्नकर्ता ने उद्धृत किया है, उसे उन्होंने भ्रांति से महर्षि का समझ लिया है। वैसे भी यह मन्त्रार्थ महर्षि का न होने से मान्य नहीं हो सकता।

(१२) न बाह्यबुद्धिनियमो। वृक्षगुल्मलतौषधि-वनस्पतितृणवीरुधादीनामपि भोक्तृभोगायतनत्वं पूर्ववत्।। (१२१-१२२।) **अर्थ**-जिसमें बाह्य-बुद्धि होती है, उसको शरीर कहते हैं, यह नियम भी नहीं है क्योंकि मृतक शरीर में बाह्य-बुद्धि नहीं होती, तो क्या उसको शरीर नहीं कह सकते? और वृक्ष, गुल्म, ओषधि, वनस्पति, तृण, वीरुध आदिकों में बहुत से जीव भोग के निमित्त रहते हैं और उनका बाहर के पदार्थों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता, यदि

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

बाहर के पदार्थों के ज्ञान से ही शरीर माना जावे तो उसके शरीर को शरीर न मानना चाहिये।

प्रश्न–क्या वृक्षों में जीव है कि नहीं? **उत्तर**–वृक्षों में जीव नहीं है किन्तु यहां वृक्षों में रहने वाले जीव से अभिप्राय है, क्योंकि गूलर आदि के फलों में जो जीव रहते हैं, उनको बाहर के पदार्थ से कुछ सम्बन्ध नहीं रहता=होता।.....बढ़ जाते हैं। **प्रश्न**–वृक्ष में जीव मानने से क्या सन्देह उत्पन्न होता है? **उत्तर**–पहले तो यह सन्देह होगा कि एक वृक्ष में जितने फल हैं, उन सब में एक जीव है या बहुत से जीव हैं? यदि कहो कि एक जीव है, तो बीज के टूटने से उससे वृक्ष पैदा नहीं हो सकता, और यदि बहुत से जीव हैं, तो एक शरीर के अभिमानी बहुत जीव नहीं हो सकते। (सांख्य दर्शन, महर्षि कपिल प्रणीत सूत्र १२१, पृ.सं. १७०–१७१, भाष्यकार–स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती)

पूर्व वर्णित क्रम संख्या ६ का समर्थन, आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् गंगाप्रसाद उपाध्याय जी अपनी पुस्तक, ''हम क्या खायें–घास या मांस'' पृष्ठ संख्या ६३ में इस प्रकार करते हैं–इसी प्रकार.....मात्र है। इसके अतिरिक्त मैं एक ऐसा प्रमाण देता हूं, जहां महर्षि जी ने वृक्ष को स्पष्ट रीति से जड़ कहा है। देखिये–''भला जो वृक्ष जड़ पदार्थ है, उसका क्या अपराध था कि उसको शाप दिया और वह सूख गया।''

उपर्युक्त क्रम संख्या १ से १२ तक में वेद व महर्षि जी की मान्यतानुसार वृक्ष निर्जीव पदार्थ हैं। यदि इन प्रमाणों को देख–पढ़कर भी कोई वृक्षों को सजीव मानता है, तो उनकी यह मान्यता वेद तथा महर्षि जी की मान्यता के विरुद्ध है अर्थात् वेद की स्पष्ट निन्दा है और 'वेदनिन्दको नास्तिक:'।

यदि किसी भी सज्जन को उपर्युक्त वर्णित क्रम सं. १ से १२ तक में ''वृक्ष जड़ पदार्थ हैं'' स्वीकार नहीं है, तो कृपया प्रतिक्रिया सहित मुझे अवश्य अवगत कराने का कष्ट करें। इस विषय में अधिक जानकारी हेतु मान्य रामदयालु शास्त्रार्थ महारथी जी की पुस्तक ''वृक्षों में जीव–एक भ्रान्ति'' (वृक्षों में जीव नहीं) तथा दार्शनिक विद्वान् गंगाप्रसाद जी उपाध्याय द्वारा लिखित पुस्तक, ''हम क्या खायें? घास या मांस'' पढ़ें। इत्योम्।

१२. समाधान (सत्यजित्) – यहां सांख्य दर्शन–पञ्चम अध्याय के सूत्र १२१ व १२२ को देकर, उसका स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती का भाष्य दिया गया है। सांख्य सूत्र ५.१२२ से पूर्णत: स्पष्ट है कि वृक्षादि सजीव होते हैं। यहां वृक्षादि का भोक्तृ–भोगायतन कहा गया है। भोक्तृ=भोक्ता=जीवात्मा, भोगायतन=भोग (=सुख–दु:ख) का आधार शरीर। वृक्षादि शरीरों को जीवात्मा का भोगायतन कहा गया है। जिस प्रकार मनुष्य–पशु–पक्षी आदि के शरीर भोक्ता–जीवात्मा के भोगायतन=भोग के आधार हैं, वैसे ही वृक्षादि भोगायतन हैं, इनमें भी एक स्वाभिमानी जीव रहता है, जिसका वह वृक्षादि भोगायतन शरीर होता है। वृक्षादि में जीव कर्मानुसार जाता है, यह महर्षि के वचन से पहले सिद्ध किया ही जा चुका है।

भाष्यकार ने यहां मृतक शरीर का अनुचित उल्लेख किया है। मृत शरीर तो किसी भोक्ता–आत्मा का भोगायतन होता ही नहीं है। वृक्ष आदि में जो बहुत से जीव भोग के लिए रहते हैं, उनका तो अपना–अपना पृथक् भोगायतन–शरीर होता है। यदि उन्हें यहां कहना सांख्यकार कपिल को अभिप्रेत होता तो वे वृक्षादि को '**भोक्तृभोगायतन**' कभी न कहते। वृक्षादि में इन अन्य जीवों के अतिरिक्त एक अन्य स्वाभिमानी जीव भी होता है, जिसके कर्मानुसार उसे वह वृक्षादि भोगायतन मिला होता है। इस सूत्र में स्वाभिमानी जीव की ही चर्चा है, वृक्षों में इन दो तरह के जीवों के अतिरिक्त अनुशयी आत्माएं भी रहती हैं, किन्तु वह वृक्षादि उनका भोगायतन नहीं होता। वे तो अगला जन्म पाने की यात्रा में वहां उपस्थित मात्र होती हैं। इन अनुशयी आत्माओं को वृक्षादि के भोग प्राप्त नहीं होते, अत: वृक्षादि उनका भोगायतन नहीं होता। इसकी पुष्टि सांख्य के कुछ ही आगे के सूत्र ५.१२६ से भी होती है–'**न किञ्चिदप्यनुशयिन:**' अर्थात् अनुशयी आत्मा को कोई सुख–दु:ख नहीं होता। इससे यह भी सिद्ध होता है कि ऊपर उद्धृत सूत्र ५.१२२ में वृक्षादि को जो भोक्तृ–भोगायतन कहा, वह स्वाभिमानी आत्मा की दृष्टि से कहा गया है, न कि अनुशयी आत्मा की दृष्टि से।

वृक्ष में जीव मानने पर उठे संदेह निवारण किये जा सकने योग्य हैं। एक वृक्ष में एक ही स्वाभिमानी आत्मा रहती है, जिसका वह वृक्षादि शरीर भोगायतन होता है। फल भी वृक्षादि शरीर का भाग है, अत: वह भी उसी एक स्वाभिमानी आत्मा का भोगायतन है। एक जीव होने पर भी बीज के टूटने से वृक्ष पैदा हो सकता है। बीज से वृक्ष पैदा होने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसमें कोई जीव पहले से हो। वृक्ष से पृथक् हुआ बीज तो निर्जीव होता है। जब वह नया पौधा बनने वाला होता है, अंकुरित होने वाला होता है, तब वह नया भोगायत–शरीर होता है, इसमें कर्मानुसार आत्मा का प्रवेश परमात्मा करवाता है, करवा सकता है। वैसे फल–बीज आदि के निर्जीव होते हुए भी, भोगायतन न होते हुए भी, इनमें अनुशयी आत्माएं तो रह सकती हैं, रहती हैं। यह

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

बीज व इसका उत्पादक वृक्ष इन अनुशयी आत्माओं के भोगायतन नहीं होते। हां, जब बीज नये पौधे-शरीर-भोगायतन के अनुरूप परिस्थिति को प्राप्त होता है, अंकुरित होने वाला होता है, तब इन अनुशयी आत्माओं में से भी किसी एक आत्मा को ईश्वर स्वाभिमानी आत्मा के रूप में वह शरीर-भोगायतन दे सकता है।

संख्या ६ का समर्थन पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने किया, यह उनका अपना दृष्टिकोण हो सकता है, किन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता कि संख्या ६ वाला महर्षि का वचन भी वृक्षों को निर्जीव सिद्ध करता है। संख्या ६ वाले वचन का समाधान पहले किया जा चुका है।

इस प्रकार क्रम संख्या १ से १२ तक जितने भी प्रमाण टीकाराम जी ने दिये, उनसे यह सिद्ध नहीं होता कि वृक्ष निर्जीव पदार्थ हैं। महर्षि के वचनों से स्पष्ट है कि वृक्ष सजीव पदार्थ हैं। जो वृक्ष को निर्जीव मानते हैं, वे वेद व महर्षि की मान्यता के विरुद्ध हैं। वेद-निन्दक नास्तिक तो वे कहे जायेंगे। वृक्ष को सजीव मानने वालों को नास्तिक नहीं कहा जा सकता। **-ऋषि उद्यान, अजमेर।**

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. विद्वद् गोष्ठी-**'आर्यसमाज की ध्यान पद्धति' तृतीय**, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए) १३-१५ मार्च २०१३, ऋषि उद्यान, अजमेर।

२. **आर्यसमाज की ध्यान पद्धति-ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर**। ११ से १७ अप्रैल २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर नि:शुल्क है। **१० अप्रैल सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी**। शिविर का समापन १७ को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००६९६१, समय-रात्रि ८ से ८.३०। पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

३. १७ से २६ मई-**संस्कृत संभाषण शिविर**, सम्पर्क : ९४१४७०९४९४

४. २८ मई से ४ जून-**आर्यवीर दल शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

५. ६ से १३ जून-**आर्य वीरांगना शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

६. १६ से २३ जून-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

७. विद्वद् गोष्ठी-**'आर्यसमाज की यज्ञपद्धति'** तृतीय, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए), २७ से ३० जून २०१३, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद, मध्यप्रदेश।

चक्षु: सब इन्द्रियों में और परमेश्वर सब रचना करने हारों में उत्तम है, ऐसा सब मनुष्यों को समझना चाहिये और (त्र्यायुषम्) इस पदवी की चार वार आवृत्ति होने से तीन-सौ वर्ष से अधिक चार-सौ वर्ष पर्यन्त भी आयु का ग्रहण किया है। इसकी प्राप्ति के लिये परमेश्वर की प्रार्थना करके और अपना पुरुषार्थ करना उचित है। सो प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिये-हे जगदीश्वर! आपकी कृपा से जैसे विद्वान् लोग विद्या, धर्म और परोपकार के अनुष्ठान से आनन्दपूर्वक तीन-सौ वर्ष पर्यन्त आयु को भोगते हैं, वैसे ही तीन प्रकार के ताप से शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्काररूप अन्त:करण इन्द्रिय और प्राण आदि को सुख करने वाले विद्या-विज्ञान सहित आयु को हम लोग प्राप्त होकर तीन-सौ वा चार-सौ वर्ष पर्यन्त सुखपूर्वक भोगें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-३.६२।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

नये डिजाइन का बच्चा?-तड़प-झड़प में इस बार यह एक विचित्र विषय मैंने लिया है। इस पर कुछ विशेष लिखने की प्रबल प्रेरणा मुझे इस बार आर्यसमाज कोलकाता के प्रबुद्ध श्रोताओं विशेष रूप से परोपकारिणी सभा के एक दिवंगत सदस्य श्री पूनमचन्द्र जी की पुत्री से मिली। उस देवी ने मुझे विशेष रूप से कहा कि आज जी चाहता था कि आपको सुनते ही जावें। आपने यह बहुत अच्छा कहा, कौन है जो अपने घर में नये नमूने का बच्चा माँगता है? वेदानुसार ईश्वर की सत्ता व स्वरूप पर बोलते हुए मैं प्राय: यह कहता व लिखता रहता हूँ कि परमात्मा पूर्ण है और उसके कार्य भी पूर्ण हैं। परमात्मा पूर्ण है (God is perfect) यह कहते तो सभी मत पन्थ हैं, परन्तु व्यवहार में कोई भी मत परमात्मा को पूर्ण नहीं मिलाता। अन्य मतों के मानने वाले जो लोग विकासवाद का बाजा भी बजाते हैं, वे तो शनै: शनै: क्रमश: सृष्टि में हर क्षेत्र में विकास मानते हैं। ईश्वरीय ज्ञान का भी वे विकास मानते हैं।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ईश्वर के गुण, कर्म तथा स्वभाव को अनादि माना है। वेद अनादि ईश्वर का अनादि ज्ञान है। ईश्वर पूर्ण है, सो उसका वेद ज्ञान भी निर्दोष (Perfect) है। यह बात विकासवाद के भयंकर प्रचार के कारण अंग्रेजी पठित बाबूओं के गले कम ही उतरती है कि वेद को निर्दोष अथवा पूर्ण कैसे मान लेवें? हमारा निवेदन है कि पृथिवी के गुरुत्वाकर्षण के नियम में कोई दोष न्यूनता किसी ने आज तक सुझाई है क्या? यह नियम तथा विज्ञान के गणित के सब नियम आज पर्यन्त यथापूर्व निर्विघ्नता से अपना-अपना कार्य कर रहे हैं या नहीं? आग जलाती चली जा रही है। कान से सुनना, मुख से खाना व बोलना क्या ये नियम अनादि हैं अथवा नये? कौन इनमें किसी Law नियम का विज्ञान अधूरा-अपूर्ण मानता है?

भवन-निर्माण कला बदल गई, रेल के इञ्जन, विमानों के इञ्जन, मुद्रण कला, वस्त्रों की बनावट, सिलाई सब बदलते रहते हैं। देवियाँ साड़ी या धुलाई मशीन लेने जाती हैं अथवा जब कोई युवक कार लेने जाता है, तो सब यही कहते हैं कि डिजाइन की नई साड़ी, गाड़ी, कार, स्कूटर चाहिये, परन्तु जब किसी परिवार में किसी बच्चे का जन्म होना होता है तो कोई नहीं कहता-हे प्रभु ! हमारे घर में नये नमूने का बच्चा पैदा हो। क्या कभी किसी ने ऐसी कामना की है?

और यदि अपवाद रूप में कहीं ऐसा बच्चा जन्म ले भी ले, तो वह कृत्रिम होने से चिरंजीवी नहीं होता। पांच-सात भुजाओं वाला, छह मुख वाला भगवान् तो हम पूज सकते हैं, परन्तु यदि किसी युवक की नाक मनुष्य की बजाए भैंस व घोड़े जैसी हो तो उसके साथ कौन अपनी पुत्री का विवाह करेगा? यह डिजाइन तो नया ही होगा, यह ईश्वर के विधान व नियम के विपरीत एक अपवाद है। परमात्मा ने भैंस, घोड़े, कुत्ते, बन्दर, आम, नींबू, चीकू, आलू, गेहूँ, चने की उत्पत्ति का कोई नया नमूना नहीं दिया, तो अपने ज्ञान या विधान को वह सर्वज्ञ पूर्ण प्रभु क्यों बदलेगा?

इस दार्शनिक सैद्धान्तिक विषय पर विस्तार से तो कभी फिर लिखा जावेगा, आज एक गौरवपूर्ण बात लिखकर इसको यहीं विराम दिया जाता है। आप पं. लेखराम जी, पूज्य स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. चमूपति जी के साहित्य को पढ़िये अथवा 'निर्णय के तट पर' शास्त्रार्थ संग्रह को पढ़िये-हमारे विद्वानों ने सदा **''ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव कदापि नहीं बदल सकते''** महर्षि प्रदत्त इस तर्क का प्रयोग कर बीसियों बार विरोधियों को शास्त्रार्थ समर में चित किया है। धीरे-धीरे मतों ने ऋषि को नमन किया। सर्वप्रथम ईश्वर के स्वभाव (अल्लाह की आदत) नहीं बदल सकती, यह सर सैय्यद अहमद खाँ ने लिखा। **'अल्लाह की आदत'** शीर्षक से किसी मौलवी या पादरी का पचास वर्ष पुराना कोई लेख नहीं मिलेगा। पुस्तक की बात का तो कहना ही क्या?

स्कूलों व कॉलेजों की कीच-बीच फंसे आर्यसमाज को परोपकारी पचास बार बता चुका है कि **अब तक मूर्धन्य इस्लामी विद्वान् की इसी नाम की पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय** स्वामी दर्शनानन्द निर्वाण-शताब्दी वर्ष पर महर्षि की इस दिग्विजय की घोषणा करते हुए मेरी छाती अभिमान से फूल रही है। आर्यसमाज में तीस-तीस, चालीस-चालीस वर्ष से कई लेखक निब घिसा रहे हैं, परन्तु आज पर्यन्त ऐसे डींग मारखाँ लेखकों ने विधर्मी-विरोधी मत पर एक लेख नहीं लिखा। कोलकाता में कई प्रदेशों से आये आर्यों ने मुक्तकण्ठ से परोपकारी की प्रशंसा करते हुए डॉ. सुरेन्द्र जी से व मुझे कहा कि विरोधियों के उत्तर तो परोपकारी ही देता है। हमें वहाँ शङ्कायें व प्रश्न भी नये-नये पूछे जाते थे। हमने

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

किसी को निराश नहीं किया। सबको कहा, सत्यजित् जी को आप प्रश्न भेज दिया करें। वह जिसे कहेंगे, वह उत्तर देगा। यद्यपि बीसियों-सैकड़ों विद्वान् चाहियें, फिर भी परोपकारिणी सभा के पास उत्तर देने वाले बहुत हैं।

ईश्वरीय ज्ञान का आविर्भाव तथा विकासवाद परस्पर विरोधी बातें हैं। ईश्वरीय ज्ञान अनादि (अज़ली) ही होता है। उसमें अदल-बदल का प्रश्न नहीं। इस्लाम के मूर्धन्य तत्ववेत्ता के ये प्रमाण मैंने '**कुरान सत्यार्थप्रकाश के आलोक में**' ग्रन्थ में दिये हैं। पं. लेखराम का वंश फूले-फलेगा तो वैदिक धर्म फैलेगा। संस्थायें व सम्पत्ति तो विपत्ति ही विपत्ति है।

मुंशी इन्द्रमणि जी के विषय में-यमुनानगर (हरियाणा) से परोपकारी के एक जागरूक प्रेमी बालकृष्ण जी मक्कड़ ने मुंशी इन्द्रमणि जी के सम्बन्ध में कई बातों पर प्रकाश डालने को कहा है। कुछ बातों पर मैंने लिखा परन्तु, उनका ध्यान उन लेखों पर नहीं गया।

१. मुंशी इन्द्रमणि जी ने जाति-रक्षा में योगदान किया। इसकी आर्यसमाज की सैकड़ों पुस्तकों व सहस्रों लेखों में अतीत में चर्चा की जा चुकी है। आगे भी होती रहेगी।

२. ऋषि दयानन्द जी तथा आर्यसमाज ने उन्हें आर्यसमाज से निकाला तो दु:खी मन से और भरे दिल से। विवश होकर उन्हें निकालना पड़ा। यह बालकृष्ण जी नोट कर लें।

३. उनको आर्यसमाज से निकलवाने वाला उनका कपटी, झूठा और छलिया चेला लाला जगन्नाथ था। श्रद्धेय लक्ष्मण जी लिखित सबसे बड़े ऋषि-जीवन चरित्र के दूसरे भाग में इस विषय में नई-नई जानकारी सप्रमाण दी जा रही हैं।

४. यह व्यक्ति मरते दम तक वही-वही बातें दोहरा-दोहरा कर ऋषि दयानन्द के विरुद्ध विषवमन करता रहा। इसके सब ट्रैक्टों का मुरादाबाद के आर्य मुँह तोड़ उत्तर देते रहे। स्वामी दर्शनानन्द जी ने भी इसको फटकार लगाई।

५. श्री बालकृष्ण जी ने मुंशी जी की आर्यसमाज के विरोध में लिखी पुस्तक की भी चर्चा की है। एक-एक बात का उपयुक्त उत्तर दिया गया। उधार नहीं रखा।

६. ला. जगन्नाथ ने आर्यसमाज में रहते हुए 'आर्य प्रश्नोत्तरी' पुस्तिका में (कविता में थी) यह लिखा है कि काशी शास्त्रार्थ में विशुद्धानन्द आदि वेद से प्रतिमा पूजन की पुष्टि में वेद का एक मन्त्र नहीं दिखला सके। यह पुस्तिका अब मिलती नहीं। एक दुर्लभ प्रति हमारे अमरनाथ जी के पास है, परन्तु पुस्तकों में लुकी-छुपी है। मैंने ऋषि के उपर्युक्त जीवन-चरित्र में पादटिप्पणियों में जगन्नाथ का यह प्रमाण दिया है। वह उन्मादी बनकर ऋषि को कोसने लगा तो फिर ये सब बातें भूल गईं।

७. मुंशी जी का जुर्माना आधा क्षमा किया गया। किसी राजा के कहने से नहीं, ऋषि की प्रेरणा से, प्रबल आन्दोलन के दबाव से ऐसा हुआ। आर्य पत्रों में लेख पर लेख दिये गये। 'आर्य दर्पण' के आधे पृष्ठ ही मुंशी जी के अभियोग पर होते थे। कोई चाहे तो मैं दिखा सकता हूँ।

८. मुंशी जी के सहयोग के लिये जब ऋषि ने अपील की थी, तभी निर्णय ले लिया गया था कि इस निधि का संचालन एक समिति करेगी। बचा हुआ धन ऐसे कार्यों के लिए समिति के पास रहेगा। मुंशी जी को सीधे भी समाजों ने धन भेजा। चेले ने और उसके कहने पर गुरुजी ने उस धन का हिसाब देने से इनकार कर दिया। आगरा ऋषि को हिसाब देने गये तो बैग पर हाथ मारकर नाटक किया कि ओह! हिसाब तो मुरादाबाद ही भूल आये।

९. इन्होंने उलटा ऋषि जी से कहा कि आप भी वैदिक यन्त्रालय के लिये प्राप्त धन का हिसाब दें। ऋषि ने तत्काल कहा, ''जब चाहो ले लो।'' यहाँ यह बता दें कि लाहौर के ला. साईंदास आदि ने यन्त्रालय के लिये कुछ ऋण भी दिया। ऋषि जी ने आगे चलकर सबको ऋण लौटाया। ला. साईंदास ने अपना दिया २५०/- वापस लेने से इनकार किया तो ऋषि जी ने कहा जब लौटाने की शर्त पर ऋण माँगा था तो वापिस तो लेना ही पड़ेगा। लेकर जहाँ जिस कार्य में चाहो लगा दो। अर्थ शुचिता का जिसे ऐसा ध्यान हो, उस महापुरुष पर इन्होंने मिथ्या दोष लगा४ दिये।

१०. मुरादाबाद आर्यसमाज ही इनके आचरण से दु:खी हो गया।

११. सद्धर्म प्रचारक के एक अङ्क के आधार पर मैंने कभी एक लेख में लिखा था कि मुरादाबाद के आर्यसमाजी द्वेषी कुछ पौराणिक लोग मुँशी जी को आर्यसमाज विरोधी एक संस्था से जोड़ने के लिये मिले। तब मुंशी जी को अपनी भूल पर कुछ पश्चात्ताप हो रहा था। आपने उन लोगों को कहा कि **मैं एक बार भूल कर चुका, अब बार-बार भूल नहीं कर सकता।** यह घटना मैं पुन: सप्रमाण खोज दूँगा।

१२. यह कथन सत्य नहीं कि ऋषि जी ने मुंशी जी को बदनाम करने के लिये एक पुस्तिका देशभर में प्रचारित की। ऋषि जी ने ऐसी कोई **पुस्तिका न लिखी, न छपवाई, न बँटवाई। वह पुस्तक जो बांटी गई-मेरे पास है।** यह पुस्तक मेरठ समाज ने छपवाई। इस निधि का संचालन करने वाली समिति वहीं थी। ऋषि को बदनाम करने का

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

विफल प्रयास तो गुरु-चेले ने किया। यह सब कुछ ऋषि जीवन में सप्रमाण छपेगा।

१३. मुंशी जी के पुत्र श्री भगवत सहाय के विधर्मी बनने के समय मुंशी जी जीवित नहीं थे। भगवत सहाय के पिता ला. नारायण दास ने अपने पुत्र की शुद्धि में आर्यसमाज को पूर्ण और प्रशंसनीय सहयोग किया। कोई शंकराचार्य, कोई अग्रवाल सभा, स्वामी विवेकानन्द या उनका कोई साधु भगवत सहाय को वापस लाने को आगे नहीं आया। मुंशी जी ने आर्यसमाज के उपकार को स्वीकार किया, नमन किया। मुंशी जी के एक नाती राजेन्द्र जी मुरादाबाद की उसी समाज के मन्त्री रहे। राजेन्द्र जी के मन्त्रित्व काल में समाज ने मेरा अभिनन्दन किया था। तब मैंने मुंशी जी की पर्याप्त चर्चा व्याख्यानों में की थी। भगवत सहाय जी की घर वापसी पर कुछ कहा तो करतल ध्वनि की गई।

१४. आर्यसमाज व मुंशी जी के परिवार के लोग आज एक और घटना की चर्चा नहीं करते। भगवत सहाय जी से पहले मुंशी जी के परिवार का एक लाल ईसाई हो गया। तब भी सारे हिन्दूवादी तिलकधारी व अग्रवाल सभायें बस ताकती रह गईं। आर्यसमाज ने उसे शुद्ध करने के लिए सिर-धड़ की बाजी लगा दी। दु:खी दिल से मुझे यह कहना पड़ता है कि मेरे अतिरिक्त कोई भी आर्यसमाजी इस शुद्धि की चर्चा नहीं करता। प्राणवीर पं. लेखराम ने आर्यमात्र को प्रेरणा दी कि जब तक इस युवक को वापस न लिया जावे, चैन से सोना नहीं। मुंशी जी के भांजे को आर्यो! शुद्ध करके ऋषि ऋण चुकाओ। यह घटना मैंने सप्रमाण अपने ग्रन्थ 'रक्त साक्षी पं. लेखराम' में दी है।

१५. श्री बालकृष्ण मक्कड़ जी के आदेश पर मैंने बहुत कुछ लिख दिया है। फिर लिख दूँ कि आर्यसमाज पं. लेखराम जी से लेकर पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी तक और पं. रामचन्द्र जी देहलवी से लेकर राजेन्द्र जिज्ञासु तक मुंशी इन्द्रमणि जी की भूल की उपेक्षा करके उनकी सेवाओं के लिये उनका गुणगान करता आ रहा है। हिन्दुओं ने मुंशी जी की एक भी कृति सुरक्षित नहीं रखी। मैंने कृतज्ञ आर्यों की प्रेरणा से मुंशी जी के बेजोड़ ग्रन्थ **'इन्द्रवज्र'** सहित सारा सैट परोपकारिणी सभा को भेंट कर दिया है। मुझे पता है कि मुंशी जी की कुछ पुस्तकों की तो सभा के पास एक से अधिक प्रतियाँ हैं। मक्कड़ जी जाँच करेंगे तो पता चलेगा कि उनके वंशजों के पास या विश्व हिन्दू परिषद् अथवा किसी अखाड़े में मुंशी जी की एक भी प्रति नहीं मिलेगी।

१६. एक बात और याद आ गई। मिर्ज़ा कादियानी ने मुंशी जी के निधन पर उनके विरोध में कुछ लिखा। उत्तर पं. लेखराम जी ने तत्काल दिया। पण्डित लेखराम ने ऐसा उत्तर दिया की नबी की बोलती बन्द कर दी।

बलिदानी इतिहास हमारा-श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने महर्षि के मिशन की रक्षा तथा वैदिक-धर्म प्रचार के लिये दयानन्द मठ दीनानगर के रूप में एक दुर्ग, एक छावनी का निर्माण किया। यह ७५ वर्ष पूर्व की घटना है। यहीं से महाराज ने निज़ाम हैदराबाद पर चढ़ाई करने के लिये प्रयाण किया था। अपने ७५ वर्ष पूरे करने पर यह संस्था इसे एक महापर्व के रूप में मनाने का निर्णय कर चुकी है। विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने लिखा है-(Nations live On their past, In their present, For their future) अर्थात् जातियाँ तथा संगठन अपने अतीत पर जीती हैं, अपने वर्तमान में अपने भविष्य के लिए जिया करती हैं। अपने उज्जवल भविष्य के लिए आर्यसमाज को भी अतीत का स्मरण करते हुए वर्तमान में हुँकार लगाने का एक अवसर मिला है। यह इस पर्व को मनाने के लिये क्या-क्या करता है, यह सामने आता जायेगा। महाराष्ट्र सभा के तपस्वी प्रधान, मठ के कर्मठ साधु ९६ वर्षीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज वर्ष भर मनाये जाने वाले इस समारोह के लिये पाँच मार्च को दीनानगर पधार रहे हैं। सत्तर वर्ष से देश और समाज की सेवा में समर्पित हैदराबाद मुक्ति संग्राम के योद्धा, गोआ के स्वातन्त्र्य युद्ध में गोलियों की बौछार को चीरकर आगे बढ़ने वाला सैनिक शहीद भाई श्यामलाल, हुतात्मा वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश शिवचन्द्र का नामलेवा, क्रान्तिवीर पं. नरेन्द्र जी का प्रतिनिधि इस आयु में प्रथम बार अपने गुरुधाम दीनानगर में छत्रपति शिवाजी महाराज की अग्नि को अखण्ड प्रचण्ड रखने पहुँच रहा है। पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल और हरियाणा के आर्यो! जागो, रक्त रंजित इतिहास से ऊर्जा प्राप्त कर करवट लो। महामुनि स्वतन्त्रानन्द के बलिदान से नवजीवन प्राप्त करने की वेला है। तपोधन स्वामी सर्वानन्द जी की ज्योति जलती रहे।

जनवरी के अन्तिम सप्ताह डॉ. धर्मवीर जी आर्य, प्रिय राजवीर जी तथा यह सेवक सुदूर सागर तट तक केरल में वेद-सन्देश सुनाने गये। वहाँ के कुछ सक्रिय आर्यवीरों ने हमें पुकारा। हम वहाँ भी इस पर्व का निमन्त्रण देकर आये। वर्ष भर ऐसे कार्य चलते रहेंगे। बहुत साहित्य मठ और मठ के भक्त देंगे। देखते जाइये। परोपकारिणी सभा के मन्त्री जी ने इसमें सभा के भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया है।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हरियाणा का जलियावाला रक्तिम काण्ड–२१ मार्च १९४१ को दीन-दु:खियों की पुकार सुनकर लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज लोहारु के छोटे से नवाबी राज में पहुँचे। इस नवाब ने दर्जनों आर्य कृषकों को गोलियों से भून दिया था। दीनबन्धु हुतात्मा फूलसिंह जी, स्वतन्त्रता सेनानी आर्यों का अड़ियल योद्धा परमतपस्वी चौ. नौनिंध सिंह (स्वामी नित्यानन्द) आदि कई भक्त श्री महाराज के साथ थे। राजस्थान, दिल्ली और हरियाणा के शान्त, प्रभुभक्त आर्य जब अपने मुकटविहीन हृदय सम्राट के पीछे खड़े-खड़े सन्ध्या कर रहे थे। उस समय अस्ताचल की ओर जाते सूर्य ने और घौंसलों को जाने वाले पक्षियों ने **हरियाणा में जलियाँवाला काण्ड की पुनरावृत्ति देखी।** नवाब की पुलिस तथा गुण्डे आगे-पीछे से निहत्थे आर्यों पर टूट पड़े। हरियाणा की धरती लहुलुहान हो गई। दलितोद्धारक दीनबन्धु महात्मा फूलसिंह तथा स्वामी नित्यानन्द जी को मार-मार कर कसाइयों ने भूमि पर बिछा दिया। रही-सही कमी ६५ वर्षीय ब्रह्मचारी शूर शिरोमणि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के सिर पर कुल्हाड़ा चलाकर पूरी कर दी गई। आर्यों! हरियाणा सरकार, केन्द्र सरकार या कोई किसान पार्टी हरियाणा के इस जलियाँवाला काण्ड का स्मारक नहीं बना सकती। क्या आप लोहारु में विजय स्तूप नहीं बनवा सकते?

मार्च महीने में लोहारा, दादरी, हिसार, भिवानी, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़ से पदयात्रायें और आर्यवीर दल के शिविर इसी उपलक्ष्य में आरम्भ हो जायेंगे। दीनानगर से भक्त पहुंचेंगे। राजस्थान के आर्य भी लोहारु में घायल हुए थे। मेरा ८१ वाँ वर्ष चल रहा है। मनोज आर्य जी ने ऋषि-उद्यान अजमेर से ऊर्जा प्राप्त करके इस अभियान की कमान सम्भाली है। मैं भी उसकी हुँकार सुनकर कई दिन इस रक्तकाण्ड हरियाणा के जलियाँवाला लोहारु के समारोह के लिये उस सत्र में पदयात्राओं के लिये निकलूँगा। शास्त्री धर्मपाल जी, आर्यवीर चाँदसिंह जी, श्री अनिल आर्य सब इस आन्दोलन में कूद पड़े हैं। स्वामी देवव्रत जी महाराज अपनी सेना को सम्भालेंगे। श्री हँसमुनि जी जहाँ भी हों, वह सक्रिय हो जायेंगे। आचार्य सोमदेव जी तीन मार्च को रोहतक क्षेत्र के आर्यवीरों को झकझोरेंगे। आशा करनी चाहिये कि आचार्य बलदेव जी के आशीर्वाद से प्रिय अभयसिंह की आर्य सेना रोहतक से यात्रा निकालकर लोहारु पहुँचेगी। मुझे पता नहीं वहाँ भोजन की व्यवस्था होगी या नहीं। आर्यवीरो! झोले में गुड़-चने डालकर अपने महात्माओं हुतात्माओं और अपने फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द का नाम लेकर आराम को कुछ तजकर बस निकल पड़ो। हरियाणा सभा से भी विनती कर दी गई है। देखें श्री आचार्य विजयपाल जी क्या घोषणा करते हैं। वह चुप क्यों बैठेंगे?

पं. लेखराम जी का बलिदान और उपकार–सम्भव है पण्डित जी का बलिदान छह मार्च को आर्यजन कहीं-कहीं मनायें। उन्होंने आर्यसमाज में बलिदान की परम्परा को आगे बढ़ाया और अखण्ड बनाकर दिखाया। उनके अनेक उपकार हैं, जिन पर आज हम चिन्तन नहीं करते। मैं आज उनके केवल एक अद्वितीय उपकार का स्मरण करवाता हूँ। मैं कॉलेज का विद्यार्थी था। महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम शास्त्रार्थ महारथी तथा पत्रकार को सायं समय भ्रमण करवाने कादियाँ के एक बाजार से निकल रहा था। उनसे पूछा, ''पण्डित जी लिखित ऋषि जीवन की क्या विशेषतायें हैं?'' तब तक मैंने यह ग्रन्थ नहीं देखा था। उस क्षेत्र में तब दीनानगर मठ में ही यह देखा जा सकता था। महाशय जी ने इसकी एक अद्‌भुत विशेषता यह बताई कि जिस-जिस व्यक्ति, पुस्तक व पत्रिका से उन्हें ऋषि जीवन की कोई घटना या सामग्री मिली उन्होंने उसका नाम पता साथ के साथ दे दिया। इससे इसकी प्रामाणिकता निर्विवाद है। मैंने देखा है कि जिन अहंकार पूजकों ने पण्डित जी के ग्रन्थ का अवमूल्यन किया, उन्होंने ८० प्रतिशत घटनायें पण्डित जी के ग्रन्थ से ही उठाकर अपने पोथे बनाये।

पण्डित जी की लिखावट सुन्दर न होने से कातिब ने पढ़ने में चूक कर दी या फिर प्रूफ़ रीडरों की भूल से 'न्यूटन' छप गया, छपना चाहिये था न्यूमैन। ऐडम को रोडम बना दिया गया। बिहारीलाल को झारीलाल बना दिया गया। स्कॉलरों ने इन्हें पण्डित जी की भूल बताने के लिए टिप्पणियाँ चढ़ा दीं। कोई स्वामी वेदानन्द जी से पूछ लेता तो भ्रम मिट जाता। पता लग जाता कि फ़ारसी लिपि में झारी का बिहारी, न्यूमैन का न्यूटन और ऐडम का रोडम पढ़ा जाना एक सामान्य सी बात है। स्वामी विशुद्धानन्द तथा बालशास्त्री ने कहा स्वामी दयानन्द वीतराग और निर्भय योगी ही सत्य कह सकता है। वह जो कहता है सो सत्य है। हम सत्य नहीं कह सकते। इसका अकाट्य प्रमाण आर्यसमाज के पास आज क्या है? मेरी यह चिन्ता रही है। पं. लेखराम जी तो निराधार घटना लिखने वाले नहीं। ईश्वर की कृपा से एक ग्रामीण आर्य पथिक श्री धर्मपाल जी मेरठ निवासी तथा बूढ़ाना द्वार मेरठ समाज के मन्त्री श्री बंसल तथा श्री यशपाल जी के पुरुषार्थ से मैंने वे तत्कालीन पत्र खोज लिये हैं जिनमें सन् १८८० में ये घटनायें छपीं। **-वेद सदन, अबोहर।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नैष्ठिक अग्निव्रत के पत्र का उत्तर एवं लेख की समीक्षा-१

-**सत्यजित्**

[नैष्ठिक अग्निव्रत जी ने अपने एक पत्र में परोपकारिणी सभा पर गंभीर आक्षेप किये हैं। यह पत्र उन्होंने आर्यजगत् के अधिकांश विद्वानों व अन्य अनेक अधिकारियों को भी भेजा है। अग्निव्रत जी की आलोचनाओं का इस लेख में उत्तर दिया जा रहा है। एक अन्य लेख में दो मन्त्रों के अन्यों के वेद भाष्य पर आलोचना के साथ उन्होंने उन मन्त्रों का अपना भाष्य भी भिजवाया है। उनका यह लेख आर्य पत्रिकाओं (**सर्वहितकारी** ७-१४ जनवरी २०१३ व **सत्यार्थ-सौरभ** फरवरी-२०१३) में '**वेदभाष्य की मेरी शैली**' शीर्षक से छप भी चुका है। अतः उनकी आलोचना का उत्तर देना वा उनके लेख की समीक्षा करना अपरिहार्य हो गया है। इस लेख पर प्रतिक्रिया व सम्मति सादर आमन्त्रित है।-**संपादक**]

नैष्ठिक अग्निव्रत जी ने अपने दिनांक ०६.१२.२०१२ के पत्र में दुःखी मन से जो लिखा, उसके कुछ वाक्य इस प्रकार हैं-**१.** मैं आपका ध्यान एक ऐसे विषय की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ, जिसकी ओर पता नहीं किसी सभा, संस्था, विद्वान्, आर्यनेता का ध्यान क्यों नहीं गया? **२.** सार्वदेशिक द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद १०.८६ के १६ व १७ मन्त्रों का भाष्य देखें, जो आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, जो सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के अध्यक्ष हुआ करते थे, ने किया है। यह भाष्य इतना अश्लील, भद्दा व असभ्यतापूर्ण है कि आपकी आंखें लज्जा से झुक जायेंगी। मैं उसे पत्र में नहीं लिख सकता। **३.** उल्लेखनीय है कि महर्षि जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने इस मण्डल का भाष्य स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक से कराया था। उन्होंने भी इन दोनों मन्त्रों का भाष्य थोड़ी संयत भाषा में परन्तु अश्लील व भद्दा ही किया है। **४.** इन दोनों सभाओं के इन विद्वानों के भाष्य ने आर्यसमाज के मुख पर गन्दी कालिख अवश्य पोता दी है। मैं इस भाष्य तथा इसके प्रकाशकों व प्रचारकों की कड़ी भर्त्सना करता हूँ। यदि कोई विद्वान् इस भाष्य को शरीर रचना का प्रकाशक माने तो उस विद्वान् के इस वक्तव्य का भी कड़ा प्रतिवाद करते हुए इन मन्त्रों का सूर्य विषयक अत्यन्त गम्भीर वैज्ञानिक अर्थ भी बता सकता हूँ। मान्यवर, क्या आप इस दूषित भाष्य को ऋषि सम्मत मानते हैं? **५.** जो आरोप हम लोग मेज पीट-पीट कर अथवा अपनी लौह लेखनी के द्वारा पौराणिक वेदभाष्यकारों, पाश्चात्य वैदिक विद्वानों अथवा उनके उच्छिष्टभोजी वर्तमान भारतीय शोधकर्ताओं, नास्तिकों, विधर्मियों वा किन्हीं राजनैतिक दलों पर लगाते हैं, वे सभी आरोप हमारे इन महान् माने जाने वाले विद्वानों ने भी यथावत् स्वीकार किये हैं और इनमें से कुछ तो हमारी सार्वदेशिक सभा जैसी शिरोमणि संस्था व परोपकारिणी सभा सगर्व प्रचारित करती आ रही है। **६.** जो विद्वान् उन्हीं आचार्यों का अनुकरण कर रहे हैं, वे भी उतने ही अपराधी हैं, चाहे वे पौराणिक हों वा आर्यसमाजी। **७.** मैं आप सबको अपना ही मानकर उपर्युक्त बिन्दुओं पर आर्यजगत् के शीर्ष विद्वानों की तत्काल बैठक बुलाकर चर्चा कराने तथा इन पापों को धोने के साथ ही ऐसे साहित्य को जलाने की ही करबद्ध प्रार्थना कर रहा हूँ, ताकि यह पाप यहीं समूल नष्ट हो जाये।

नै. अग्निव्रत जी ने एक अन्य पत्र व लेख ३१.१२.२०१२ को भेजा। उसमें लिखा- **८.** दोनों भाष्य आध्यात्मिक (शरीर शास्त्र से सम्बन्धित) परन्तु घोर अश्लील, नितान्त अनावश्यक व असभ्यतापूर्ण प्रतीत होते हैं। इन दोनों ही विद्वानों ने अपने भाष्य में महर्षि दयानन्द जी महाराज की शैली की उपेक्षा करके आचार्य सायण के भाष्य की ही नकल की है। **९.** इन मन्त्रों का भाष्य मैंने जो-जो भी देखा है, वह अत्यन्त अश्लील तो कहीं इनका भाष्य असंगत तो कहीं उन्मत्त प्रलापवत् मिलता है। मैं उन भाष्यकारों व प्रकाशकों का नाम उनके सम्मान को ध्यान में रखते हुए प्रकाशित नहीं कर रहा हूँ।

नैष्ठिक अग्निव्रत जी ने पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ जो भेजा, उसमें प्रकाशक-लेखक का नाम न लिखकर उन्होंने इनके सम्मान को बचा दिया, बड़ी कृपा की, धन्यवाद, किन्तु उनकी ओर परोक्ष संकेत तो किया ही है और अपने दोनों पत्रों में तो प्रकाशक व लेखक के नाम लिखकर उसे अन्यों को वितरित भी किया है। संभावना है कि ऐसा करके वे महर्षि दयानन्द की शैली का अनुसरण कर रहे हों। महर्षि का अनुकरण करते हुए ही संभवतः उन्होंने यह वाक्य लिखा है-''यद्यपि यह कार्य ऋषि कोटि के विद्वान् का ही है पुनरपि मैं अपने ऐतरेय ब्राह्मण के व्याख्यान के दृष्टिकोण से वेद पर भी लेखनी चलाने का अनधिकार साहस कर रहा हूँ।'' उनकी यह शैली भी संभवतः महर्षि का अनुकरण ही उन्हें प्रतीत होती होगी, जिसमें किसी भाष्य को वे 'मिथ्या,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अप्रामाणिक व असंगत' मानते हुए भी कलंकित नहीं करने वाला मान रहे हैं-''.....यद्यपि यह भाष्य भी मेरी दृष्टि में मिथ्या, अप्रामाणिक व असंगत है पुनरपि आध्यात्मिक होने से हमें कलंकित तो नहीं करेगा।'' नै. अग्निव्रत जी का भाष्य कितना महर्षि सम्मत है व किस शैली से किया गया है, इसकी समीक्षा आगे की जायेगी, किन्तु पहले उनके द्वारा अन्य भाष्यकारों पर किए गये आक्षेप के बारे में स्पष्टीकरण कर लेते हैं।

सर्वप्रथम यह स्पष्ट हो कि यहां नै. अग्निव्रत जी के आक्षेपों व उनके भाष्य के औचित्य-अनौचित्य, संगत-असंगत पर लिखा जा रहा है, न कि यह सिद्ध करने के लिए कि इन भाष्यकारों द्वारा किया गया भाष्य ऋषि-कोटि का है, पूर्ण ठीक है, पूर्ण संगत है, त्रुटि रहित है। संभवतः इस विषय में किसी भी सभा या विज्ञ आर्यसमाजी को भ्रान्ति नहीं है कि ये भाष्यकार अपने-अपने स्तर के विद्वान् होते हुए भी महर्षि के समान या उनसे ऊंचे नहीं थे। इन भाष्यकारों में से कोई स्वयं भी अपने को महर्षि के समान या आसपास भी मानता हो, इसकी संभावना प्रतीत नहीं होती। ये भाष्यकार अपने समय के विद्वान् थे, मान्य थे, उन्होंने यथासामर्थ्य महर्षि के अनुकूल भाष्य करने का प्रयास किया, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। हां, मानव द्वारा त्रुटि भी होती है, सबकी अपनी-अपनी सीमा होती है, अपना-अपना स्तर होता है। आगे की पीढ़ी उसकी समालोचना कर सकती है व उनका भाष्य पूर्व के भाष्यों से अच्छा भी हो सकता है, इस रूप में नै. अग्निव्रत जी का प्रयास स्वागत योग्य है। जिस प्रकार पूर्व के भाष्यों की समालोचना का अवकाश सदा है, उसी प्रकार इन समालोचनाओं व नये भाष्यों की समालोचना का अवकाश भी सदा रहेगा, उनके औचित्य-अनौचित्य पर चर्चाएं होंगी, होनी चाहिएं।

नै. अग्निव्रत जी ने दुःखी मन से जिन दो मन्त्रों के भाष्यों को घोर अश्लील, भद्दा, असभ्यतापूर्ण, लज्जा से आंखें झुकाने वाला, आर्यसमाज के मुख पर कालिख पोतने वाला व नितान्त अनावश्यक लिखा है, उसे भी देख लेना आवश्यक है।

१. भाष्यकार-श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, **प्रकाशक**-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३कपृत्।
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।। ऋग्वेद १०.८६.१६।

पदार्थ-(न) नहीं (सः) वह जीव (ईशे) अपने इन्द्रिय आदि पर शासन वा वश कर सकता है। (यस्य) जिसका (कपृत्) प्रजनन इन्द्रिय निरन्तर (सक्थ्याः) स्त्री के जघनों के (अन्तरा) अन्दर (रम्बते) लटकता रहता है (सः) वह (इत्) ही (ईशे) वश में रखता है (निषेदुषः) सदा दृढ़ स्थिर (यस्य) जिसका (रोमशम्) प्रजनन इन्द्रिय (विजृम्भते) तेज से तमतमाता और स्थिर रहता है। (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमेश्वर (विश्वस्माद्) सब पदार्थों से (उत्तरः) सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।

भावार्थ-वह मनुष्य वा जीव अपनी इन्द्रियों पर शासन और वश नहीं प्राप्त कर सकता है जो सदा स्त्री के साथ सम्भोग में ही लगा रहता है। हाँ, वह वश में इन्द्रियों को कर सकता है जो ब्रह्मचर्य आदि तपों से अपनी इन्द्रियों को दृढ़ स्थिर रखता है। परमैश्वर्यवान् प्रभु सब पदार्थों से सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।।

न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते।
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३कपृद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।। ऋग्वेद १०.८६.१७।

पदार्थ-(न) नहीं (सः) वह (ईशे) समर्थ होता है पत्नी के साथ सम्भोग और सन्तति जनन में (निषेदुषः) सोये हुए (यस्य) जिस गृहस्थ का (रोमशम्) प्रजनन इन्द्रिय (विजृम्भते) संभोग से पूर्व ही खुलकर रेतश्च्युत हो जाता है, (स इत्) वह ही इस कार्य में (ईशे) समर्थ होता है (यस्य) जिसका (कृपत्) प्रजनन इन्द्रिय (सक्थ्या) सक्थि के (अन्तरा) अन्दर (रम्बते) लम्बा और खड़ा होकर अन्दर तक पहुंचता है, (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् परमेश्वर (विश्वस्मात्) सब पदार्थों से (उत्तरः) सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।

भावार्थ-पत्नी के सम्भोग और सन्ततिजनन में वह नहीं समर्थ होता है कि सोये हुए जिसका इन्द्रिय संभोग से पूर्व क्षरितवीर्य हो जाता है। वह समर्थ होता है जिसका प्रजनन इन्द्रिय योनि के अन्दर लम्बा खड़ा अन्दर प्रविष्ट होता है। परमैश्वर्यवान् प्रभु सब पदार्थों से सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।

२. भाष्यकार-श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक, **प्रकाशक**-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३कपृत्।
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।। ऋग्वेद १०.८६.१६।
न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते।
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३कपृद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।। ऋग्वेद १०.८६.१७।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

भाष्य-(न स:-ईशे) वह नहीं स्वामित्व करता है, न ही गृहस्थ भाव को प्राप्त करता है (यस्य कृपत्) जिसका सुख देने वाला अङ्ग (सक्थ्या-अन्तरा लम्बते) दोनों सांथलों जङ्घाओं के मध्य में लम्बित होता है, (स-इत्-ईशे) वह ही गृहस्थ कर्म पर अधिकार करता है (यस्य निषेदुष:) जिस निकट शयन करते हुए का (रोमशं विजृम्भते) रोमों वाला अङ्ग विजृम्भण करता है-फड़कता है। (न स:-ईशे) वह गृहस्थ कर्म पर अधिकार नहीं करता है (यस्य निषेदुष:-रोमशं विजृम्भते) जिसके निकट शयन किये हुए का रोमों वाला अङ्ग फड़कता है (स:-इत्-ईशे) वह ही गृहस्थ कर्म पर अधिकार करता है (यस्य सक्थ्या-अन्तरा कपृत्-लम्बते) जिसका निकट शयन करने पर साथलों-जङ्घाओं के बीच में सुखदायक अङ्ग विजृम्भित होता है वह ही गृहस्थ कर्म पर अधिकार करता है।

भावार्थ-रोम वाले अङ्ग का फड़फड़ाना सुखप्रद अङ्ग का साथलों-योनिमध्य में अवलम्बित होना गृहस्थ कर्म पर अधिकार कराता है। १६-१७।

ये भाष्य नैष्ठिक जी को घोर अश्लील, भद्दे, असभ्यतापूर्ण लगे, इसमें उनका नैष्ठिक ब्रह्मचारी होना कारण हो सकता है। उन नैष्ठिकों व ब्रह्मचारियों के लिए यह भाष्य अश्लील-असभ्य हो सकता है जो ब्रह्मचर्य की साधना में लगे हों, इस दृष्टि से नैष्ठिक जी सम्मान्य हैं। किन्तु वेद मात्र नैष्ठिकों-ब्रह्मचारियों के लिए ही नहीं है। यह गृहस्थियों के लिए भी है। जो ब्रह्मचर्य की साधना पूरी कर चुके, जिन्हें गृहस्थ में जाना है, उनके लिए ये बातें अश्लील कैसे हो सकती हैं? जो बात गृहस्थी के लिए आवश्यक है, ईश्वर निर्मित है, स्वाभाविक है, उसे किसी विशेष मानसिकता वाले की दृष्टि से अश्लील-असभ्य नहीं कहा जा सकता। गृहस्थ में यह सब विचारणीय बातें होती हैं। नैष्ठिकों का पृथ्वी पर आगमन भी बिना इसके संभव नहीं है। नैष्ठिक तो महर्षि दयानन्द भी थे, पर वे एकांगी दृष्टि नहीं रखते थे। महर्षि ने गृहस्थ-धर्म, गर्भाधान आदि का वर्णन किया है, उन्हें गृहस्थियों के लिए इसे लिखना आवश्यक प्रतीत हुआ। वेद को जब सब सत्यविद्याओं का पुस्तक स्वीकार किया जाता है, तो प्रजनन भी एक विद्या है, इसे अश्लील कहना एकांगी व अपरिपक्व मानसिकता का द्योतक है। क्यों इस आवश्यक विषय को अश्लील कहकर निन्दित किया जाए? यह भाष्य कामोत्तेजक नहीं है। अश्लील कथा-कहानियां-चुटकले भिन्न स्तर के होते हैं, वे निंदित हैं, वे समाज में विकार लाते हैं, हानि करते हैं, किन्तु वैसा कुछ इन भाष्यों में नहीं है।

यह विषय इतना महत्त्वपूर्ण है कि कोई गृहस्थी इसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। इस दृष्टि से समर्थ-व्यक्ति को ही गृहस्थ में जाना चाहिए। स्त्री सदा समर्थ पुरुष का ही वरण करना चाहती है। कोई स्त्री ऐसे पुरुष से विवाह नहीं कर सकती, उसे अपना पति-स्वामी नहीं बना सकती, जो इस दृष्टि से असमर्थ हो। कोई विवाहित पुरुष नहीं चाहता कि वह इस दृष्टि से असमर्थ हो। इस असमर्थता से वह लज्जित होता है। सामर्थ्य होने पर उसमें आत्मविश्वास व स्वाभिमान रहता है। इस असमर्थता के आधार पर विवाह-विच्छेद भी मान्य है। यदि वेद में ऐसा संकेत किया गया हो, या इन भाष्यकारों को वेद में यही अर्थ प्रतीत हुआ हो, तो इसमें आर्यसमाज के मुख पर गन्दी कालिख पोतने का आक्षेप कैसे किया जा सकता है? क्या इन भाष्यों में कोई सिद्धान्त विरुद्ध असत्य बात कह दी गई है? क्या इसमें महर्षि दयानन्द के किसी मन्तव्य का खण्डन किया गया है? क्या इसमें कोई वेद-विरुद्ध बात कह दी गई है? यदि नहीं, तो फिर क्यों इनकी आलोचना की जा रही है? यदि हां, तो कृपया बतावें यह वेद, महर्षि, आर्यसमाज की किस बात के विरुद्ध है? अन्य भाष्यकारों पर अश्लीलता-असभ्यता के जो आरोप महर्षि व आर्यसमाज लगाते हैं, उनके भाष्य निश्चय ही अश्लील हैं, अप्राकृतिक हैं, अस्वाभाविक हैं, क्रूर हैं, असभ्य हैं। किन्तु उसी आधार पर इन भाष्यों पर आरोप नहीं लगाया जा सकता। हमें विवेक रखते हुए उचित-अनुचित का विचार भी करना चाहिए।

आइये अब दु:खी-मन नैष्ठिक जी के भाष्य व उनकी भाष्य शैली पर दृष्टिपात कर लेते हैं। उनके अनुसार उनका भाष्य ऋषि सम्मत है, सत्य-प्रमाण के संगत है, उन्होंने वेद-मन्त्रों के अत्यन्त गम्भीर वैज्ञानिक अर्थ को बताया है। मन्त्रों का भाष्य करने से पूर्व उन्होंने अपनी भूमिका व मन्त्रों की पृष्ठभूमि लिखी है। इसमें उन्होंने यह भी बताया है कि **वेद क्या है?** वे किसे वेद मानते हैं? **वेदोत्पत्ति की प्रक्रिया क्या है**? उन्हीं के शब्दों में-''मेरी दृष्टि में वेद उन छन्दों का समूह है जो सृष्टि प्रक्रिया में कम्पन के रूप में समय-समय पर उत्पन्न होते हैं। विभिन्न प्रकार के छन्द विभिन्न प्रकार के प्राण होते हैं, जिनकी उत्पत्ति के कारण ही व जिनके विकृत होने से अग्नि, वायु आदि सभी तत्त्वों का निर्माण होता है। सूर्य, तारे, पृथिव्यादि सभी लोक इन छन्द प्राणों के ही विकार हैं। सृष्टि प्रक्रिया में उत्पन्न विभिन्न छन्द Vibrations के रूप में इस समय भी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। इन्हीं प्राणों को अग्नि आदि चार ऋषियों ने सृष्टि के आदि में

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सविचार सम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था में ईश्वरीय कृपा से ग्रहण किया था और फिर ईश्वरीय कृपा से ही उनके अर्थ का भी साक्षात् किया था। यही वेदोत्पत्ति की वैज्ञानिक प्रक्रिया है।''

नै. अग्निव्रत जी के अनुसार **वेद छन्दों का समूह है**। छन्द कम्पन Vibrations के रूप में हैं, छन्द को उन्होंने प्राण भी कहा। अत: उनके अनुसार **प्राणों का समूह 'वेद' है**। इससे यह भी स्पष्ट है कि 'छन्द' शब्द से उनका तात्पर्य वेद मन्त्रों के गायत्री-त्रिष्टुप् आदि छन्दों से नहीं है। उनके अनुसार जिन छन्दों का समूह वेद है, वे छन्द सृष्टि-प्रक्रिया में समय-समय पर उत्पन्न होते हैं, अर्थात् सृष्टि-प्रक्रिया से छन्द उत्पन्न होते हैं व ऐसे छन्दों-प्राणों का समूह वेद है। ये छन्द चूंकि समय-समय पर उत्पन्न होते हैं, अत: इससे यह भी मानना होगा कि **वेद भी समय-समय पर उत्पन्न होते हैं।** जिन छन्दों का समूह वेद है, उन छन्दों=प्राणों की उत्पत्ति व विकार से उन्होंने अग्नि, वायु आदि सभी तत्वों का निर्माण होना कहा है। छन्द=प्राण से ही सूर्य, तारे, पृथिव्यादि सभी लोकों का निर्माण भी उन्होंने लिखा है। अर्थात् वे छन्द=प्राण को अग्नि, वायु, सूर्यादि का उपादान-कारण मानते हैं। यह उपादान-कारण जड़-प्रकृति का ही उत्पाद हो सकता है। इस प्रकार उनके अनुसार जड़ कार्यजगत् जिस उपादान-कारण छन्द-प्राण से उत्पन्न हुआ है, उसके समूह का नाम वेद है। अर्थात् जड़ पदार्थ से वेद की उत्पत्ति हुई है। निश्चय ही वह वेद भी अन्य जड़ वस्तुओं के समान कोई जड़ द्रव्य होना चाहिए। महर्षि के अनुसार वेद ज्ञानरूप हैं। ज्ञान के विकार से पृथिव्यादि नहीं बनते। अत: महर्षि का वेद (ज्ञानरूप) भिन्न है व नैष्ठिक जी का वेद (छन्द=प्राण का समूह) भिन्न है। उनके अनुसार जिस छन्द-प्राण-वेद के विकार से सूर्यादि लोक बने, वह वेद ज्ञानरूप नहीं हो सकता।

उनके अनुसार यदि छन्द=प्राण से ही पृथिव्यादि बने हैं, तो यूं भी कहा जा सकता है कि ये सब वेद से बने हैं। सृष्टि-उत्पत्ति की प्रक्रिया में पहले वेद उत्पन्न हुए, वेद की उत्पत्ति के कारण ही व वेद के विकृत होने से ही अग्नि, वायु आदि बने; सूर्य, चन्द्र आदि लोक बने। उनके अनुसार तो वेद को इस कार्यजगत् का उपादान-कारण मानना होगा। महर्षि के अनुकूल मान्यता रखने व भाष्य करने का गौरव रखने वाले नै. अग्निव्रत जी क्या बतायेंगे कि वेद का यह स्वरूप महर्षि ने कहां बताया है? व यह महर्षि के मन्तव्य के अनुकूल कैसे है? नैष्ठिक जी के अनुसार पहले छन्द=प्राण=वेद बने, फिर अग्नि, वायु, सूर्यादि बने। जबकि महर्षि दयानन्द मानव-सृष्टि के आदि में जब सूर्य-पृथ्वी आदि बन चुकते हैं, तब वेदों की उत्पत्ति मानते हैं। महर्षि वेद को मानव-सृष्टि के आदि में दिया मानते हैं, उन्होंने गणनापूर्वक उसका काल भी बताया, जबकि नै. अग्निव्रत जी के अनुसार ये **समय-समय पर उत्पन्न** होते हैं, अर्थात् एक साथ सृष्टि के आदि में उत्पन्न नहीं होते।

नै. अग्निव्रत जी के अनुसार छन्द (कम्पन)=प्राण=वेद सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं, व ऋषियों ने उसे ईश्वर की कृपा से ग्रहण किया। ईश्वर की कृपा से नै. जी का क्या तात्पर्य है? ईश्वर ने इसे ऋषियों को दिया या ईश्वर ने कृपा करके उन्हें ऐसी बुद्धि दी कि वे इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त वेद को ग्रहण कर पाये? यदि ईश्वर ने ऐसे (छन्द=प्राण) वेद को दिया, तो यहां **'देने'** का क्या तात्पर्य है? वे जिस प्रकार की व्याप्तता वेद (छन्द-प्राण) की मान रहे हैं, उस रूप में व्याप्त किया, इसे देना कहें, तो यह तो सब मनुष्यों के लिए समान हुआ, फिर चार ऋषियों को ही वेद देने की बात असंगत हो जायेगी। यदि इन चार को ही दिया, तो देने का क्या तात्पर्य है, जब वे पहले ही सर्वत्र व्याप्त हैं। यदि उन्हें ऐसी बुद्धि दी, जिससे वे व्याप्त वेद (छन्द=प्राण) को स्वयं ग्रहण कर सकें, तो यह महर्षि की मान्यता से भिन्न होगा।

इसी प्रकार के प्रश्न वेद=प्राण के अर्थ जानने के विषय में भी उठेंगे। चार ऋषियों ने ईश्वरीय कृपा से उनके (प्राणों के=वेद के) अर्थ का साक्षात् किया। नैष्ठिक अग्निव्रत जी के वचनों से ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषियों ने ईश्वर-कृपा से प्राप्त सामर्थ्य से **स्वयं प्राणों=वेद का साक्षात् किया**। जैसे आज कोई वैज्ञानिक या विद्वान् प्राण=कम्पन=कार्यजगत् को देखकर स्वयं उनका साक्षात् करे, इसमें ईश्वर की कृपा कही जाती है, वैसी ईश्वर की कृपा। यदि उनका तात्पर्य ऐसा है, तो यह महर्षि के मन्तव्य के विपरीत है। महर्षि दयानन्द के अनुसार तो ईश्वर ने वेद-ज्ञान को ऋषियों की आत्मा में प्रकाशित किया। ऋषियों ने प्राणों=वेद को ब्रह्माण्ड से ग्रहण किया, यह महर्षि ने कहां कहा? अन्य अनेक लोग मानते हैं कि ऋषियों (मनुष्यों) ने सृष्टि को देख-जानकर वेदों (मन्त्रों) की रचना की। कुछ ऐसा ही नैष्ठिक जी के लेख से प्रतीत हो रहा है, किन्तु उन्होंने इसे ऐसे शब्दों-वाक्यों में प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक को ये बातें दयानन्द के प्रतिकूल न लगें। दयानन्द से भिन्न मान्यता का यह चतुराई पूर्ण दयानन्दीकरण है। अपनी दयानन्द भिन्न मान्यता को दयानन्द से भिन्न प्रतीत न होने देने का प्रयास है।

ऐसा प्रतीत होता है कि नै. अग्निव्रत जी जिस प्रकार

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ब्राह्मण ग्रन्थों व वेद-मन्त्रों को वैज्ञानिक दृष्टि से देख रहे हैं, उनकी वही वैज्ञानिक दृष्टि 'वेदोत्पत्ति प्रक्रिया' पर भी पड़ गई है। इसीलिए वे कह रहे हैं-''**यही वेदोत्पत्ति की वैज्ञानिक प्रक्रिया है।**'' वेदोत्पत्ति की एक प्रक्रिया महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के वेदोत्पत्तिविषय व सत्यार्थप्रकाश के सप्तमसमुल्लास में दी है, वहां जो प्रक्रिया दी है, उसमें भिन्न प्रक्रिया है और नैष्ठिक जी की वैज्ञानिक प्रक्रिया भिन्न है। यह नैष्ठिक जी की ऊहा है, किन्तु यह महर्षि के अभिप्राय से भिन्न रूप में बन गई है। जब इस वैज्ञानिकता का प्रभाव प्रारम्भ में (वेद के स्वरूप व वेदोत्पत्ति की प्रक्रिया में) ही महर्षि के विपरीत चला गया हो, तो आगे और क्या-क्या हो सकता है, इसकी परिकल्पना सहज ही की जा सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि मूल में ही भूल हो चुकी है। वैसे नै. अग्निव्रत जी ने अभी अपने पत्ते पूरे खोले नहीं हैं, जितने खोले हैं उसमें यह प्रयास किया है कि वे महर्षि के अनुकूल प्रतीत हों, किन्तु संकेत कुछ अन्य ही मिल रहे हैं। पत्ते पूरे खुलने पर उनकी महर्षि से प्रतिकूलता प्रकाशित हो स्पष्ट हो जायेगी, इसकी बहुत अधिक संभावना दिख रही है।

आइये अब नै. अग्निव्रत जी के आगे के वचनों पर विचार करते हैं। यह पहले लिखा जा चुका है कि उनके अनुसार='वेद=छन्दों का समूह है, छन्द कम्पन रूप हैं, छन्द अर्थात् प्राण, इन्हीं के विकार से सूर्यादि लोक बनते हैं।' इसके आगे वेद-मन्त्रों के ऊपर लिखे ऋषिनामों पर वे लिखते हैं। 'ऋषि' नामों पर पड़ी उनकी वैज्ञानिक दृष्टि से उपजे वचन इस प्रकार हैं-''वेद मन्त्रों के ऊपर उल्लेखित विभिन्न ऋषि जहां उपकार स्मरणार्थ उन मानव ऋषियों के नाम हैं, जिन्होंने अग्नि आदि ऋषियों के पश्चात् सर्वप्रथम उस-उस मन्त्र का अर्थ साक्षात् करके संसार में प्रचार-प्रसार किया था, वहीं वे ऋषि सृष्टि में सूक्ष्म प्राण के रूप में उस समय जन्मे थे, जब उस छन्द रूपी प्राण (मन्त्र) की उत्पत्ति सर्ग-प्रक्रिया में हुई थी। आज भी वे ऋषि रूपी सूक्ष्म प्राण इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं, जबकि ऐतिहासिक मानव ऋषि अब नहीं रहे। वेद का अर्थ करने में ऐतिहासिक मानव ऋषि के ज्ञान की आवश्यकता नहीं परन्तु देवता का ज्ञान होना अनिवार्य है। हां, वेदमन्त्र का सृष्टि-प्रक्रिया पर क्या प्रभाव होता है, यह जानने हेतु देवता के साथ ऋषि व छन्द का ज्ञान भी अनिवार्य होता है।''

नैष्ठिक जी वेद मन्त्रों के ऊपर उल्लेखित विभिन्न ऋषियों को दो प्रकार का मान रहे हैं। एक मानव ऋषि, दूसरे सूक्ष्म प्राण रूप ऋषि। वेद मन्त्रों पर लिखे ऋषि को महर्षि दयानन्द मानव ऋषि ही मानते हैं, महर्षि दयानन्द के द्वारा उन्हें सूक्ष्म प्राण के रूप में कहीं कहा गया नहीं मिलता। उन्हें सूक्ष्म प्राण रूप मानने की वैज्ञानिक दृष्टि महर्षि के अनुकूल कैसे है, यह नैष्ठिक जी ही बता पायेंगे। हां, महर्षि ने ऋषि शब्द का अर्थ, ऋ. १.१.२ में प्राण भी किया है, किन्तु इससे हमें यह छूट नहीं मिल जाती कि जहां-जहां ऋषि शब्द आया हो वहां-वहां प्राण अर्थ भी ले लेवें। महर्षि ने यदि वेदमन्त्रों पर लिखे ऋषि को कहीं 'प्राण' कहा हो, तो ही यह महर्षि सम्मत माना जा सकता है। किसी भिन्न प्रसंग में किये अर्थ को कहीं भी लगाकर कहना कि यह महर्षि दयानन्द के मन्तव्य के अनुरूप है, छलावा मात्र हैं। प्रसंग को सदा ध्यान में रखना होता है।

यूं तो ऋ. १.१.२ में ही 'ऋषि' शब्द का अन्य अर्थ भी दिया गया है-तर्क। प्राण भी दो विशेषणों के साथ हैं-कारणस्थ प्राण/कार्यस्थ प्राण, जगत्कारणस्थ प्राण/कार्यजगत्स्थ प्राण। महर्षि ने प्रसंगानुकूल अन्य अर्थ भी ऋषि शब्द के किये हैं, यथा-विद्वान्, सज्जन, पञ्च प्राण, ज्ञानेन्द्रियां, ऋतु, वायु, परमेश्वर, आदित्य, रश्मि, विप्र, श्रोत्र आदि। किन्तु वेद मन्त्रों के ऊपर लिखे ऋषि शब्द से उन्होंने मात्र मानव-ऋषि का ही ग्रहण किया है। वेदमन्त्रों पर जो ऋषि-नाम लिखे होते हैं, वे सदा मनुष्य के ही नाम हो सकते हैं। ये मन्त्रार्थ के प्रथम द्रष्टा होते हैं, मन्त्रार्थ के प्रचारक-प्रसारक होते हैं, ये मानव ही हो सकते हैं। इन ऋषि नामों में सृष्टि के सूक्ष्मप्राणों को लाकर वैज्ञानिक बातों को वेद में स्वच्छन्दता से कल्पित करना व मान लेना कि वेद का वैज्ञानिक अर्थ कर दिया है, मात्र आत्ममुग्धता है। कोई भी इस विषय का ज्ञाता इसे स्वीकार नहीं कर सकता। कम से कम इसे महर्षि के मन्तव्य के अनुकूल तो नहीं कहा जा सकता।

नै. अग्निव्रत जी ने एक और नयी बात लिखी है-'**वेद मन्त्र का सृष्टि प्रक्रिया पर प्रभाव होता है।**' क्या यह भी महर्षि अनुकूल है या नई वैज्ञानिक खोज है? प्रमाण अपेक्षित है। इन उपर्युक्त वचनों में नैष्ठिक जी ने प्राण को ऋषि कहा है। पहले वे वेद=छन्द=प्राण कह ही चुके हैं। यदि ऋषि भी प्राण हैं, तो इसका अर्थ हुआ 'ऋषि' वेद व छन्द भी हैं। प्राण को वे मन्त्र भी लिखते हैं। तो फिर ऋषि ही वेद व मन्त्र हो गये। जबकि महर्षि के अनुसार मन्त्रों के अर्थ-द्रष्टा का नाम ऋषि है। ऋषि व मन्त्र को दयानन्द जी पृथक्-पृथक् मानते हैं, पर नई वैज्ञानिक खोज में ये एक कहे जा रहे हैं।

ये दो वेदमन्त्र ऋग्वेद मण्डल १० के ८६ वें सूक्त के हैं। इस सूक्त में ऋषि नाम '**वृषाकपिरैन्द्र इन्द्राणीन्द्रश्च**' यह

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लिखा मिलता है। ऋषि नाम से नैष्ठिक जी सूक्ष्म प्राण अर्थ भी लेते हैं, व ऐसा अर्थ करते हुए वे वेदमन्त्र के वैज्ञानिक अर्थ करने का प्रयास करते हैं। वे पृष्ठभूमि में लिखते हैं- **''इन ऋक् अर्थात् प्राणों की उत्पत्ति वृषाकपिइन्द्र व उसकी शक्ति से हुआ करती है।''** ऋक् अर्थात् वेद के ये दो मन्त्र, जिन्हें वे प्राण भी कह रहे हैं, इनकी उत्पत्ति 'वृषाकपि इन्द्र' से, जो कि ऋषि नाम में हैं, लिखी है। मन्त्र भी प्राण व ऋषि भी प्राण, इस प्रकार प्राण से प्राण की उत्पत्ति बताई गई है। उन्होंने इन मन्त्रों की उत्पत्ति ऋषि=प्राण से बताई है। क्या महर्षि ने कहीं प्राण से मन्त्रों की उत्पत्ति बताई है? कहीं मन्त्रों के ऋषि से मन्त्र की उत्पत्ति बताई है? यदि नहीं तो ऐसा कथन महर्षि के अनुकूल कैसे कहा जा सकता है?

नै. अग्निव्रत जी ने यहां ऋक् का अर्थ प्राण किया है। क्या वे बता पायेंगे कि महर्षि ने ऋक् का अर्थ प्राण कहां किया है? शतपथ ब्राह्मण ७.५.२.१२ में जो **'प्राणो वा ऋक्'** कहा है, उसके आगे इसका कारण बताया **'प्राणेन हि अर्चति'**। प्राण के द्वारा अर्चना करने से प्राण को ऋक् कहा जाता है। स्तुति करने वाला तो प्राणी ही होगा। अब यह जो सूर्य-लोक में प्राण है, उस प्राण के द्वारा अर्चना कैसे की जा सकती है? अर्चना नहीं की जा सकती तो उस प्राण का नाम ऋक् कैसे रखा जा सकता है? शतपथ का वचन 'प्राणो वा ऋक्' जिस मन्त्र के संदर्भ में है, वह है यजुर्वेद १३.३९- **''ऋचे त्वा रुचे त्वा....''**। इस मन्त्र में आये ऋक् शब्द का अर्थ शतपथ में 'प्राण' किया गया है, न कि मन्त्रों के ऊपर उल्लेखित नाम वाले ऋषि का। इसीलिये शतपर्थ में पहले कहा-**''ऋचे त्वा'' इतीह। प्राणो वा ऋक्**। अर्थात् ''ऋचे त्वा'' इस मन्त्र में ऋक् का अर्थ प्राण है। स्पष्ट है कि मन्त्र पर लिखे नाम वाले ऋषि को शतपथ में 'प्राण' नहीं कहा है। महर्षि दयानन्द ने भी इस मन्त्र (यजु. १३.३९) के **'ऋचे'** का अर्थ किया **'स्तुतये'** अर्थात् स्तुति के लिए। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र में आये 'ऋक्' का अर्थ स्तुति किया है। यह अर्थ शतपथ के **'अर्चति'** से संगति रखता है। **ऋच-स्तुतौ**-धातुपाठ। अत: ऋक् शब्द से सूर्यादि लोकस्थ प्राण को ग्रहण नहीं कर सकते, जैसा कि नैष्ठिक जी ने कर लिया है। उनका अर्थ ऋषियों के अनुकूल नहीं है।

नैष्ठिक जी आगे लिखते हैं-''इसका तात्पर्य है कि विद्युद्वायु युक्त तीव्र बलवान् सूर्य-लोक के भीतरी भाग में स्थित इन प्राथमिक ऋषि प्राणों से इन दो मन्त्र रूपी प्राणों (छन्दों) की उत्पत्ति होती है। इनके उद्गम ऋषि प्राण बहुत बलवान् होने से इन प्राण छन्दों में भी बहुत बल होता है अर्थात् बलों को उत्पन्न करने वाले होते हैं। इनका देवता इन्द्र है। इसका तात्पर्य है कि इन ऋक् प्राणों (मन्त्रों) के द्वारा सूर्य के मध्य विभिन्न विद्युद् बलों की उत्पत्ति होती है तथा **मन्त्रों में सूर्य का ही वर्णन है।''** नैष्ठिक जी कभी वेद के प्रस्तुत दो मन्त्रों (शब्दरूप, ज्ञानरूप) की चर्चा करते हैं, कभी उन्हीं शब्दों से सूर्यलोक में स्थित प्राणरूप मन्त्र की चर्चा करने लगते हैं और दोनों को एक ही मानते हुए कथन करते हैं। चूंकि उन्होंने प्रसंग ऋग्वेद के दो मन्त्रों १०.८६.१६ व १७ का उठाया है, अत: उनके वचन उसी संदर्भ में देखे जायेंगे, वे स्वयं भी शीर्षक देते हैं कि **यह मन्त्रों की पृष्ठभूमि है।** भला ऋग्वेद के इन शब्दरूप दो मन्त्रों से, जो पुस्तक में छपे हैं या ज्ञानरूप में मस्तिष्क में हैं, कैसे सूर्य के मध्य विभिन्न विद्युद् बलों की उत्पत्ति हो सकती है? वेद के ये मन्त्र तो सूर्य-पृथ्वी के बनने के बाद मानव को मिले हैं, इनसे कैसे सूर्यस्थ विद्युद् बलों की उत्पत्ति होती है, यह नैष्ठिक जी का विज्ञान ही बता सकता है। सूर्य की छोड़िये, पृथ्वी पर भी, जहां-जहां ये दो वेदमन्त्र हैं, वहां भी यदि यह विद्युद् बल उत्पन्न होने लगे, तो यह प्रयोग से सिद्ध किया जाना चाहिए। प्रयोग से इसकी सत्यता-असत्यता का ज्ञान हो जायेगा। क्या इन शब्द/ज्ञानरूप मन्त्रों से विद्युत् उत्पन्न कर राष्ट्र-विश्व की बड़ी समस्या का हल मिल सकता है? ये दो मन्त्र हजारों-लाखों की संख्या में छपे हुए होंगे, बार-बार बोले भी जाते होंगे, विचारे भी जाते होंगे। नैष्ठिक जी के आश्रम की विद्युत् इन्हीं मन्त्रों से मिल रही होगी। नैष्ठिक जी आमन्त्रित करें तो देखने की इच्छा है।

इन वाक्यों के अन्त में नैष्ठिक जी ने यह भी लिखा कि **इन मन्त्रों में सूर्य का ही वर्णन है।** यदि नैष्ठिक जी के अनुसार यह ठीक भी हो, तो फिर इन्हीं मन्त्रों के आधिभौतिक व आध्यात्मिक अर्थ करते हुए, वे इन मन्त्रों में राजा, विद्वान् पुरुष, योगी का वर्णन कैसे कर रहे हैं? कम से कम अपने वचन के अनुकूल तो बने रहते, महर्षि दयानन्द के अनुकूल नहीं बने रह सकते थे, तो कोई बात नहीं। या फिर उनकी यौगिक शैली में यह समाधान हो सकता है कि सूर्य से राजा, विद्वान्, योगी का ग्रहण भी हो सकता है। अत: मैंने तीनों प्रकार के अर्थों में सूर्य का ही वर्णन माना है। जैसे सूर्य में विद्युत् प्राण होता है, वैसे राजा आदि में भी, जैसे सूर्य के केन्द्रिय व बहिर्भाग होते हैं, वैसे राजादि के भी.....। वेदभाष्य की इस वैज्ञानिक शैली में सब सम्भव है, चमत्कार का नाम ही तो विज्ञान है, विज्ञान से नित नये चमत्कार होते रहते हैं। **क्रमश:.....** **ऋषि उद्यान, अजमेर।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अन्तर की चाह

-प्रताप कुमार 'साधक'

ऐ मेरे प्रभु! ऐसी लगन लगा दे,
निशिदिन छिन-छिन तेरे ही गुण गाऊँ॥

तू है सत्यस्वरूप, सत्यता मैं भी अपनाऊं।
तू प्रकाश का पुञ्ज, ज्योति धरती पर बिखराऊँ।
तूने देकर ज्ञान मनुज पर की है अनुकम्पा,
तू है दीनबन्धु, दु:ख दुखियों के मैं हर लाऊँ॥
उर में भगवन्! ऐसी जलन मचा दे,
पर-पीड़ा में किंचित् चैन न पाऊँ॥
ऐ मेरे प्रभु! .....॥ १॥

नाम तुम्हारा छोड़ भला मैं और किसे ध्याऊँ?
जग में दूजा कौन जिसे मैं अपना कह पाऊँ?
साधन किये प्रदान सभी मानवतन-धारी को,
जिनका सहज बखान प्रभो! मैं कैसे कर पाऊँ?
मुझ में हर दम वो तड़पन उपजा दे,
स्वाति बूँद तू, मैं चातक बन जाऊँ॥
ऐ मेरे प्रभु! .....॥ २॥

भौतिकता में भूल नहीं मैं तुझको बिसराऊं,
क्षणिक सुखों में भ्रमित नित्य-आनन्द न खो आऊँ।
मुझे न भाते हैं आकर्षण बन्दी-जीवन के,
चाह है कारा को तज तुझसे मिल जाऊं॥
'साधक' मन की प्रियतम! तपन मिटा दे,
चख लूँ तेरा अमिय तृप्त हो जाऊँ॥
ऐ मेरे प्रभु! .....॥ ३॥

-बलरामपुर, उ.प्र.।

कृपया ''परोपकारी'' पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक-पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा ''परोपकारी'' शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।**

-व्यवस्थापक

वैवाहिक

बिलासपुर (छ.ग.) के प्रतिष्ठित आर्य गुप्ता परिवार की २७ वर्षीया ५'७'' गौर वर्ण, बी.ई., साफ्टवेयर इंजीनियर, बहुराष्ट्रीय संस्था बैंगलोर में कार्यरत, वार्षिक आय ८.४० लाख, सुशील एवं सुसंस्कृत कन्या हेतु, समकक्ष योग्यता वाले लम्बे, शाकाहारी निर्व्यसनी आर्य युवक के विवाह हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है। बायोडाटा एवं फोटो भेजें। **संपर्क-राममाधव गुप्ता। मो-९५८९६८७५५७, ईमेल-gupta.rammadhaw@gmail.com**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

॥ ओ३म्॥

योग-साधना शिविर

(दि. १६ से २३ जून २०१३। १६ जून को शाम ४ बजे तक पहुँचना है।)

आपके मन के किसी कोने में साधना करने की इच्छा बीज रूप में अंकुरित हो रही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एवं ऋषियों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हों, विधेयात्मक एवं सृजनात्मक जीवन चाहते हों, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हों, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हों, वैदिक सिद्धांतों को समझना चाहते हों या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित करने की अभिलाषा रखते हों तो यह शिविर आपको आपके चिंतन के अनुरूप उचित दिशानिर्देश एवं उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

शिविरार्थियों को पूर्ण लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन में चलना नितांत आवश्यक होगा। शिविर के दिनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एवं मौन के निर्धारित समय में मौन रहना अनिवार्य होगा। शिविर के पूरे काल में साधक को पत्र दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य संपर्क निषेध है। ऋषि उद्यान के अंदर ही निवास करना होगा। समाचार-पत्र पढ़ने, आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार के मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा।

जो साधक इन नियमों तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करें वे मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५००-१००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था उपलब्धता व पूर्व सूचना के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बरतन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएं अन्यथा यहां भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुंचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएं साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अंतिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

Web Site :- www.paropkarinisabha.com : मार्ग : **E.mail address:- psabhaa@gmail.com**

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हिन्दी में अशुद्ध वर्तनी का बढ़ता हुआ प्रयोग

-भेरु सिंह राव 'क्रान्ति'

पुस्तकों, पाठ्य पुस्तकों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं, चित्रों-मानचित्रों, पोस्टरों-विज्ञापन पट्टों, दूरदर्शन चैनलों-चलचित्रों आदि में बढ़ती हुई अशुद्धवर्तनी देखकर कभी-कभी गहरा विचार आता है-पूरे कुएं में भंग धुल गयी है, भला भावी पीढ़ी किस तरह सुरक्षित रहेगी।

हिन्दी वर्तनी को लेकर इतनी अधिक निश्चिन्तता क्यों? हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों का जब यह हाल है तो अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों का तो कहना ही क्या? हिन्दी की इस अशुद्ध वर्तनी सम्बन्धी दुर्दशा को देखकर अर्थशास्त्र का एक नियम स्मरण हो आता है, जिसे 'ग्रेशम्स लॉ' (ग्रेशम का नियम) कहते हैं। ग्रेशम के अनुसार बुरी-मुद्रा अच्छी-मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है। वर्तमान में अशुद्ध वर्तनी के बढ़ते हुए प्रयोग से लगता है कि ग्रेशम के नियम की तरह ही हिन्दी भाषा के व्यवहार में भी शुद्ध वर्तनी-रूपों का स्थान अशुद्ध वर्तनी-रूप लेते हुए चले जा रहे हैं तथा शुद्ध वर्तनी-रूपों को वे चलन से बाहर करते हुए बढ़ रहे हैं। इसी कारण शुद्ध वर्तनी-रूपों से विद्यार्थी तथा पाठक अपरिचित हैं। यहां तक कि इन्हें वे शुद्ध स्वीकारते हुए हिचकिचाते हैं।

इस प्रयोग से पाठ्य पुस्तकें भी अछूती नहीं रही हैं। पाठ्य पुस्तकें तो ज्ञान का स्रोत हैं। एक पाठ्य पुस्तक का उदाहरण भी नमूने के तौर पर आपके समक्ष है, जिसमें 'श्रृंखला' तथा 'चिन्ह' शब्द अशुद्ध वर्तनी के प्रयोग हैं। शुद्ध वर्तनी रूप है-शृंखला, (श्+ऋ=शृ/शृ) तथा ह्+न=ह्न (चिह्न)। इसी तरह श्रृंगार, श्रृंग, चिन्हित, पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह, अन्ह आदि के अशुद्ध वर्तनी-रूप चलन में हैं, जिनका शुद्ध वर्तनी-रूप-'शृंगार, शृंग, चिह्नित, पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न, अह्न है।

साथ ही एक पत्रिका में छपे इस शीर्ष को देखिए-'इससे सौहार्द्रता बढ़ेगी'। यहां सौहार्द्रता वर्तनी में 'र्द' के स्थान पर 'र्द्र' लिखकर 'ता' प्रत्यय लगाना कितना अशुद्ध प्रयोग है। शुद्ध वर्तनी रूप है-'सौहार्द', जिसका आशय है 'सुहृद' होने का भाव। इसी तरह 'सौजन्यता', 'सौन्दर्यता', 'कौमार्यता', 'धैर्यता', 'वैमनस्यता', 'माधुर्यता', 'ऐक्यता', 'नैपुण्यता', 'वैधव्यता', 'साम्यता', 'दारिद्रियता', 'सौख्यता' जैसे अशुद्ध वर्तनी प्रयोग आज चलन में हैं। शुद्ध वर्तनी के लिए इन्हें 'ता' प्रत्यय हटाकर लिखना होगा यथा सौजन्य या सुजनता, सौन्दर्य या सुन्दरता, कौमार्य या कुमारता, धैर्य या धीरता, वैमनस्य, माधुर्य या मधुरता, ऐक्य या एकता, नैपुण्य या निपुणता, वैधव्य, साम्य या समता, दारिद्र्य या दरिद्रता, सौख्य आदि।

'संवैधानिक' शब्द से आप हम सभी परिचित हैं। पाठ्यपुस्तकों-पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, दूरदर्शन-समाचारों में पढ़ा-सुना जाता है। तनिक इस शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करें। शब्द बना है-संविधान+इक (प्रत्यय) के योग से जिस तरह संसार+इक से सांसारिक, संस्कृत+इक से सांस्कृतिक, मंगल+इक से मांगलिक, समाज+इक से सामाजिक शब्द बनते हैं। इसी तरह संविधान+इक से सांविधानिक शब्द बनेगा। यह 'संवैधानिक' अशुद्ध वर्तनी रूप कहां से प्रयोग में आ गया? यह विचार करने की आवश्यकता है।

बसन्त ऋतु, बासन्ती बयार, बसन्त, बसन्त कुमार, नर्बदा, नबाब वर्तनी शब्दों में 'ब' का प्रयोग अशुद्ध है। शुद्ध वर्तनी रूप हैं-वसन्त ऋतु, वासन्ती बयार व वसन्त, वसन्त कुमार, नर्मदा, नवाब। लेकिन कितने विद्यार्थी/पाठक इन शुद्ध रूपों से परिचित हैं?

पाणिग्रहण, वाक्दान, वर्षगांठ जैसे मांगलिक अवसरों पर दीवारों अथवा प्रमुख द्वारा पर 'सुवागतम्' लिखकर अथवा 'सुस्वागतम्' विद्युत् पट्ट लगाकर आगन्तुकों का स्वागत किया जाता है। हम अतिथियों का स्वागत भी अशुद्ध वर्तनी से कर रहे हैं। 'स्वागतम्' शब्द की रचना में 'आगतम्' के पूर्व 'सु' उपसर्ग जुड़ा है-सु+आगतम्='स्वागतम्'। फिर भला 'स्वागतम्' शब्द में एक और उपसर्ग 'सु' जोड़कर (सु+सु+आगतम्) 'सुस्वागतम्' लिखना क्या औचित्य रखता है?

वर्तमान में प्रयुक्त अशुद्ध वर्तनी-रूपों के कुछ उदाहरण यहां दिये जा रहे हैं। कोष्ठक में इनके शुद्ध वर्तनी-रूप दिये हैं-आध्यात्म (अध्यात्म), आधीन (अधीन), अनाधिकार (अनधिकार), बारात (बरात), सन्यास (संन्यास), सन्यासी (संन्यासी), अनुग्रहित (अनुगृहीत), उपरोक्त (उपर्युक्त), उज्वल (उज्ज्वल), निर्दोषी (निर्दोष), निरपराधी (निरपराध), पूज्यनीय (पूज्य/पूजनीय), बेफिजूल (फिजूल), अत्याधिक (अत्यधिक), भलमनसाहत (भलमनसत), अन्तर्ध्यान (अन्तर्धान), कवित्री (कवयित्री), केन्द्रीयकरण

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

(केन्द्रीकरण), चर्मोत्कर्ष (चरमोत्कर्ष), द्वन्द (द्वन्द्व), सादृश्य (सदृश), बृजभाषा (ब्रजभाषा), शताब्दि (शताब्दी), सुलोचनी (सुलोचना), तदोपरान्त (तदुपरान्त), पुरुस्कार (पुरस्कार), निरोग (नीरोग), सदोपदेश (सदुपदेश), सतोगुण (सत्गुण), मंत्री मण्डल (मंत्रिमण्डल) आदि।

आज सख़्त आवश्यकता है शुद्ध वर्तनी-रूपों को चलन में लाते हुए अशुद्ध वर्तनी-रूपों को चलन से बाहर करने की। इससे वर्तमान व भावी पीढ़ी दोनों के प्रति न्याय होगा।

(सम्पर्क: शारदा सद्म, कानोड-३१३६०४, जिला-उदयपुर, राज. **)**

-सौजन्य-सरस्वती सुमन, जनवरी-मार्च २०१३।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

'नारद'

-देवनारायण भारद्वाज

करते प्रचार से परिष्कार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥

प्रभु से उन्मुक्त वेदवाणी।
जगभर की होती कल्याणी।
मानस-वाचन परिपालन से,
प्राणी बनते हैं निर्माणी।

स्वीकार नहीं एकाधिकार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥ १॥

श्रुति वायु युवा गतिमानी है।
ज्यों निर्झरणी का पानी है।
यह गुप्त-लुप्त बन्धित होकर,
बनती भीषण भयदानी है।

अप्रचार वेद का असत्कार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥ २॥

लेकर सुमन शान्ति विज्ञानी।
निर्बाध विचरती प्रभुवाणी।
हृदयंगमकारी को बनती,
आनन्द विजय की वरदानी।

दो रोक पराभव-तिरस्कार।
हे मुनिवर नारद! नमस्कार॥ ३॥

स्रोत-नमस्ते अस्तु नारदानुष्ठु विदुषे वशा।
कतमासां भीमतमा यमदत्वा पराभवेत्।।

(अथर्व. १२.४.४५)

देवातिथि 'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़, उ.प्र.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

परोपकारिणी सभा दानदाता ऋषि मेला

(१ से ३० नवम्बर २०१२ तक)

१. त्रिवेणी शर्मा, अजमेर, २. अरुणा गौड़, अजमेर, ३. योगेश गुप्ता व दमयन्ती गुप्ता, अजमेर, ४. ओमप्रकाश पालीवाल, आगरा, ५. होतचन्द गिरधानी, जयपुर, ६. राजेन्द्र शास्त्री, बागपत, उ.प्र., ७. बृजमोहन स्नेहलता, हरिद्वार, ८. चन्द्रपाल सिंह, अलीगढ़, उ.प्र., ९. राजकुमार, सहारनपुर, उ.प्र., १०. नरेन्द्र गर्ग, सहारनपुर, ११. मनोज शारदा, अजमेर, १२. वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर, १३. जी.के. शर्मा, अजमेर, १४. मदनसिंह चौहान, अजमेर, १५. नरेन्द्र देव शर्मा, अजमेर, १६. रामस्वरूप आचार्य, अजमेर, १७. तपेन्द्र कुमार, जयपुर, १८. मन्त्री/प्रधान आर्यसमाज मन्दिर, भटिण्डा, पंजाब, १९. ओमप्रकाश नारायणदास, अहमदाबाद, २०. तृप्त भारद्वाज, जमालपुर, २१. प्रधान आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली, २२. डॉ. राजकुमार मेहता, अजमेर, २३. डॉ. धर्मेन्द्र सिंह, अजमेर, २४. रघुवीरसिंह आर्य, उ.प्र., २५. आर्यसमाज दूधाहेड़ी, मुजफ्फरनगर, २६. राजपाल सिंह आर्य, श्यामली, २७. लक्ष्मणसिंह, मुजफ्फरनगर, २८. प्रमोद कुमार साहु, अंगुल, २९. बलवान सिंह वैश्य, झज्जर, हरियाणा, ३०. मधु एजेन्सीज, अजमेर, ३१. रमाशंकर मित्तल, अजमेर, ३२. भरतसिंह आर्य, पानीपत, ३३. नन्दकिशोर प्रसाद, सरायकेला, खरसावन, ३४. चन्द्रमणी महापत, कटक, ३५. मुख्य अधिष्ठाता, अयोध्या, फैजाबाद, ३६. कृष्ण कुमार झा, अन्नपुर, म.प्र., ३७. आर्य रामचन्द्र डागर, नई दिल्ली, ३८. आनन्दपाल सिंह, मुजफ्फरनगर, ३९. प्रहलाद सिंह, नई दिल्ली, ४०. आर.पी. शर्मा, मुजफ्फरनगर, ४१. गुलवीर आर्य, मुजफ्फरनगर, ४२. आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, ४३. गणेश दत्त, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, ४४. डॉ. सरला शारदा, अजमेर, ४५. शिव नारायण उपाध्याय, कोटा, ४६. सरदार सिंह, दिल्ली, ४७. मोगलप्पा आर्य, बीदर, ४८. गोविन्दसिंह आचार्य, अजमेर, ४९. डण्डा-पानी मिश्रा, ओड़िशा, ५०. अजीत सिंह, नई दिल्ली, ५१. एस.एम. टोंडचिरकर, उदगीर, ५२. ओमप्रकाश शास्त्री, मेरठ, उ.प्र., ५३. त्रिभुवननाथ त्रिपाठी, चांदोली, ५४. डॉ अशोक लखानी, जोधपुर, ५५. तोषनीवाल इन्डस्ट्रीज, अजमेर, ५६. योगेशचन्द्र वर्मा, अजमेर, ५७. काशीनाथ, कर्नाटक, ५८. रामा आर्य, नारनौल, हरियाणा, ५९. प्रदीप कुमार, चैन्नई, ६०. आर्यसमाज रामनगर लातूर व आर्यसमाज रेनापुर, महाराष्ट्र, ६१. उर्मिला, अजमेर, ६२. आर्यसमाज नेमोइया, चम्पारण, बिहार, ६३. कृपाशंकर दूबे, उ.प्र., ६४. रुक्मणी कटारिया, सोनीपत, हरियाणा, ६५. शकुन्तला देवी, सोनीपत, हरियाणा, ६६. मास्टर कपूर सिंह आर्य व मास्टर दारासिंह आर्य, जीन्द, हरियाणा, ६७. विनोद आर्य, करनाल, हरियाणा, ६८. सुभाष सूद, पंचकूला, हरियाणा, ६९. प्रकाश जसवीर सिंह नम्बरदार, पानीपत, ७०. विद्यासिंह प्रधान, करनाल, हरियाणा, ७१. शिवशंकर लाल वैश्य, लखनऊ, ७२. स्वामी ओमानन्द सरस्वती, इन्दौर, ७३. स्वामी योगीराज छगनसानन्द गिरि, नासिक, ७४. डी. हरिकिशन, सिकन्दराबाद, ७५. राजेश्वर दयाल, खेखड़ा, ७६. ओमप्रकाश, रायबरेली, ७७. राजू पुंजर, केरल, ७८. रत्नप्रकाश इन्द्रमोहन तिवारी, बीड़, महाराष्ट्र, ७९. विक्रम आर्य, अजमेर, ८०. प्रमोद कुमार केजरीवाल, नई दिल्ली, ८१. धर्मपाल यादव, नई दिल्ली, ८२. आर. लक्ष्मी रेड्डी, आत्मकोर, ८३. बी. कृपाकर रेड्डी, हैदराबाद, ८४. विजय कुमार भंडारी, करनाल, ८५. जागृति सेवा संघ वाचनालय, बूलदाना, ८६. धोहीराम माणक राव शेप, परभणी, ८७. शंकरलाल पाटिल, निजामाबाद, ८८. बाबूलाल जोशी, इन्दौर, ८९. कृष्णकान्त तनेजा, दिल्ली, ९०. यशपालसिंह आर्य, मेरठ, ९१. रामसिंह आर्य, मेरठ, ९२. दयाराम शर्मा, मेरठ, ९३. जयचन्द आर्य, मेरठ, ९४. श्रीराम चन्द्र वर्मा, अजमेर, ९५. मेजर रतनसिंह यादव, रेवाड़ी, ९६. रामनारायण, स्वामी, बीकानेर, ९७. डॉ. सुषमा आर्य, हरिद्वार, ९८. रामगोपाल गर्ग, अजमेर, ९९. रतनदेवी, अजमेर, १००. ओंकारसिंह आर्य, मेरठ, १०१. विजय मुनि सुधा आर्य, ज्वालापुर, १०२. सुदर्शना तापसी, ज्वालापुर, १०३. कुलदीप सिंह डांगी, सूरत, १०४. जे.पी.गुप्ता, अजमेर, १०५. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर, १०६. जी.जी. अजमेर, १०७. रमेश नवाल, भीलवाड़ा, १०८. सुकमा आर्य, अजमेर, १०९. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, ११०. सुरेन्द्रसिंह आर्य, मुजफ्फरनगर, १११. महिपालसिंह, खतोली, मुजफ्फरनगर, ११२. प्रशुभा शर्मा, पिलानी, ११३. संजय शर्मा, गुजरात, ११४. डॉ. जयदयाल रामनगर, करनाल, हरियाणा, ११५. दयाचन्द, सोनीपत, ११६. अशोक पुरोहित, जालंधर, ११७. घनश्यामदास आर्य, बारां, ११८. प्रधान, आर्यसमाज अहमदाबाद, ११९. पाचान भाई लक्ष्मण भाई आर्य, पाटन, गुजरात। १२०. महेन्द्र प्रसाद शर्मा, अजमेर, १२१. क्षेत्रपाल हॉस्पिटल, अजमेर, १२२. राजेश्वर सरपंच, फरीदाबाद, हरियाणा, १२३. पण्डित सत्यानन्द वेदवागीश, शिवगंज, १२४. जेठमल कालुराम, ब्यावर, अजमेर, १२५. मोहनलाल जांगिड़, परबतसर, १२६. अमित, बीकानेर, १२७. मनोहरदास वैष्णव, नागौर, १२८. पुष्पादेवी किशनाराम आर्य, मकराना, १२९. विद्यादेत वानप्रस्थी, मुरैना, म.प्र., १३०. विपिन कुमार

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्य, पानीपत, १३१. राजसिंह आर्य, सोनीपत, हरियाणा, १३२. धनसिंह आर्य, हरियाणा, १३३. जगदीश शर्मा आर्य, झारखण्ड, १३४. ईश्वर चन्द्र, जोधपुर, १३५. ईश्वर शर्मा, पलामु, झारखण्ड, १३६. आर्यसमाज डोरिया, शाहपुरा, भीलवाड़ा, १३७. सुरेशचन्द शर्मा, अजमेर, १३८. ओमप्रकाश सोनी, सुजानगढ़, १३९. घीसालाल, प्रतापगढ़, १४०. किशनगोपाल, अग्रवाल, १४१. हरिनारायण आर्य, कोलिया, १४२. जोगिन्द्र, रेवाड़ी, १४३. दाध्या गुप्ता, हरियाणा, १४४. राजेन्द्र माथुर, अजमेर, १४५. एम.एल. गोयल शास्त्रीनगर, अजमेर, १४६. ओमप्रकाश आजाद, अजमेर, १४७. बहन रेखा रानी, रोहतक, १४८. कृष्णा भाटिया, अजमेर, १४९. नारायण वागली, महाराष्ट्र, १५०. भंवरलाल भ्रामेर, भीलवाड़ा, १५१. राजेन्द्रसिंह आचार्य, रोहतक, १५२. भगवत नरसिंह, लातूर, १५३. बलराम आर्य, देहरादून, १५४. मन्नालाल भानू मास्टर, नागौर, १५५. अमरनाथ शर्मा, जबलपुर, १५६. राजीव कुमार भाटिया, कोटा, १५७. महावीर सिंह, बहादुरगढ़, हरियाणा, १५८. जगदीश प्रसाद हरित, नीमच, १५९. प्रेमचन्द शास्त्री व अर्चना शास्त्री, हरिद्वार, १६०. नारायण सिंह राठौड़, अजमेर, १६१. किशनसिंह मेहर, अजमेर, १६२. चन्द्रप्रकाश गांधीधाम, १६३. कर्ममुनि, रेवाड़ी, १६४. प्रकाशचन्द आर्य, अजमेर, १६५. भूरचन्द आर्य, चुरु, १६६. संयोगिता आर्या, रेवाड़ी, १६७. माधव सिंह पंवार, म.प्र., १६८. ईश्वरचन्द, जीन्द, १६९. भंवरलाल व्यास, भीलवाड़ा, १७०. रमेशदत्त दीक्षित, बागपत, उ.प्र., १७१. मुकेश आर्य, नई दिल्ली, १७२. आर्यसमाज किशनगंज, बारां, १७३. नवाल सिंह मथुरा, १७४. गोवर्धन, ओड़िशा, १७५. श्रेयांश सिंघल, १७६. अश्मित सिंघल, अजमेर, १७७. पुष्पा सिंघल, अजमेर, १७८. नन्दकिशोर आर्य, अजमेर, १७९. आर्यसमाज नसीराबाद, अजमेर, १८०. सरलमित्र शर्मा, १८१. सुषमा शर्मा, १८२. विमला, हरिद्वार, १८३. शान्ति देवी, हरिद्वार, १८४. रवीन्द्र पाहुजा, हरिद्वार, १८५. ताजरथ लाल आर्य, जोधपुर, १८६. दयाव्रत शास्त्री, सोनीपत, १८७. दयाराम बेहरोड़, १८८. कैलाशचन्द्र आर्य, नसीराबाद, अजमेर, १८९. अशोक कुमार सोनी, कडैल, १९०. दुर्गादास वैदिक, जोधपुर, १९१. रमेश आर्य, जीन्द, १९२. भूपतजान, १९३. धर्मवीर आर्य, १९४. इन्द्रप्रकाश ब्रह्मसिंह, जोधपुर, १९५. आत्माराम भाई, हनुमानगढ़, १९६. भीमाराम भाटी, जोधपुर, १९७. ओमप्रकाश आर्य, रोहतक, १९८. रामनारायण शास्त्री, जोधपुर, १९९. आर्यसमाज खेड़ा, कोटा, २००. दुर्गाप्रसाद लड्ढा, नागौर, २०१. निहालचन्द व जयसिंह, भरतपुर, २०२. सुधीर घई, दिल्ली, २०३. इन्द्रा वत्स, दिल्ली, २०४. रामकृष्ण छाता, भीलवाड़ा, २०५. गंगाराम आर्य, बीकानेर, २०६. सुमेर सिंह आर्य, बागपत, २०७. भूदेव आर्य, बीकानेर, २०८. रामकरण लाहोटी व शिवदत्त लाहोटी, कडेल, २०९. स्वामी कृष्ण सरस्वती, गोण्डा, दिल्ली, २१०. भेतराम यादव आर्य, रेवाड़ी, २११. हीरासिंह आर्य, रेवाड़ी, २१२. जयपाल सिंह आर्य, रेवाड़ी, २१३. मुकेश कुमार माहेश्वरी, अजमेर, २१४. उदयवीर सिंह, २१५. भंवरलाल चौधरी, जयपुर, २१६. ओमप्रकाश आर्य, सोनीपत, २१७. आर्यसमाज चम्पानेरी, अजमेर, २१८. आर्यसमाज शाहपुरा, भीलवाड़ा, २१९. हीरालाल आर्य, शाहपुरा, भीलवाड़ा, २२०. यजुर्वेद आर्य, अजमेर, २२१. आर्यसमाज, टोंक, २२२. गंगा देवी, भीलवाड़ा, २२३. नरेशचन्द, जयपुर, २२४. रामनाथ कंबोज, मेरठ, २२५. सत्यप्रकाश वर्मा, मेरठ, २२६. अशोक कुमार आर्य, मेरठ, २२७. बी.एस.कश्यप, मेरठ, २२८. सत्यानन्द आर्य, नई दिल्ली, २२९. प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, २३०. राजेन्द्र सिंह आर्य, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, २३१. संतोष भटनागर, अजमेर, २३२. गजेन्द्र सिंह, जोधपुर, २३३. युधिष्ठिर सिंह, जोधपुर, २३४. कैलाशचन्द्र हनुमान प्रसाद छीपा, ब्यावर, २३५. शोभालाल आर्य, निम्बाड़, २३६. तुलसीराम आर्य, मन्दसौर, २३७. लाडूराम, सरवाड़, अजमेर, २३८. डॉ. विमलादेवी, महाराष्ट्र, २३९. प्रभुदयाल बनवारी लाल, जयपुर, २४०. वैद्य पूर्णचन्द जोशी, कानोड़, २४१. नरेन्द्र अश्विनी, अजमेर, २४२. सत्यदेव मुनि, गुजरात, २४३. अमरसिंह आर्य, करनाल, २४४. राकेश व सानिध्य महेश्वरी, अजमेर, २४५. प्रणवेन्द्र शर्मा व सरस्वती देवी, चित्तौड़गढ़, २४६. ओमप्रकाश प्रेमप्रकाश तापड़िया, २४७. विपिन कुमार ओझा, मथुरा, २४८. अंगूरी आर्य, रोहतक, २४९. सतवन्ती देवी, रोहतक, २५०. रघुवीर सिंह, रोहतक, २५१. मनोरमा देवी आर्या, इन्दौर, २५२. हरिसिंह सांखला, जोधपुर, २५३. गिरिराज कच्छावा, २५४. मोहनलाल मेघवंशी, २५५. नरपत सिंह गहलोत, जोधपुर, २५६. केशवलाल थानेदार, जयपुर, २५७. पांचाल रजाई, करीमनगर, आ.प्र., २५८. रामदेव, अलवर, २५९.जितेन्द्र आर्य, मुजफ्फरनगर, उ.प्र., २६०. आर्यसमाज विजयनगर, अजमेर, २६१. कमला देवी, विजयनगर, २६२. आर्यसमाज, उज्जैन, २६३. हेमन्त कुमार शर्मा, भीलवाड़ा, २६४. प्रह्लाद राम सहारन, लाडनू, नागौर, २६५. पुरखाराम सोखर, लाडनू, नागौर, २६६. सूबेदार नोपाराम डिलोया, नागौर, २६७. यज्ञदेव सोगानी, जयदेव सोमानी, राजगढ़, अजमेर, २६८. रामप्रताप प्रभुलाल, मन्दसौर, म.प्र., २६९.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

करणी सिंह आर्य, हेमसिंह, बीकानेर, २७०. कृष्णचन्द शर्मा, जयपुर, २७१. जयपाल सिंह आर्य, मथुरा, २७२. वेदप्रकाश आर्य, हिण्डौन सिटी, करौली, २७३. अमरसिंह, रोहतक, २७४. बी.एल.मीणा, जयपुर, २७५. जगदीश प्रसाद सांखला, ब्यावर, २७६. कुंजबिहारी, अजमेर, २७७. ब्रह्ममित्र, जयपुर, २७८. संतोष कपूर, जयपुर, २७९. प्रथराज सिंह, बहराइच, २८०. धर्मवीर आर्य, गुजरात, २८१. श्यामसुन्दर लाहोटी, अजमेर, २८२. यशोदा देवी, सरवाड़, अजमेर, २८३. हरिकिशन मालानी, सरवाड़, अजमेर, २८४. गणपत देव सोमानी, राजगढ़, अजमेर, २८५. सीता शर्मा व गोपाल लाल शर्मा, अजमेर, २८६. रघुनाथ, मन्दसौर, २८७. अशोक वर्मा, अजमेर, २८८. मग्गाराम रिनवा, नागौर, २८९. बालचन्द जांगिड़, नागौर, २९०. ब्रजेश, मन्दसौर, २९१. घेवरचन्द आर्य, पाली, २९२. अरुण मुनि, रेवाड़ी, २९३. थेलाराम फलवारिया, महाराष्ट्र, २९४. छोटेलाल आर्य, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, २९५. किशन आर्य, नारनौल, हरियाणा, २९६. ओमप्रकाश आर्य, भीलवाड़ा, २९७. नारायण व शिव, अजमेर, २९८. सुभाष आर्य, नारनौल, हरियाणा, २९९. देवनारायण चौधरी, बिहार, ३००. नन्हे लाल चन्द्रवंशी, बेतुल, म.प्र., ३०१. दिनेश चन्द्रवंशी, बेतुल, म.प्र., ३०२. कोटपुतली आर्यसमाज, राज., ३०३. आर्यसमाज मन्दिर पावटा सी रोड़, जोधपुर, ३०४. रामकिशोर शर्मा, जयपुर, ३०५. प्रतिभा शास्त्री, अजमेर, ३०६. जगदीश शंकर उपाध्याय, छोटी सादड़ी, ३०७. सत्यप्रकाश आर्य, गंगापुर सिटी, ३०८. रमेशचन्द्र, जयपुर, ३०९. विजयराज, पाली, ३१०. धनराज आर्य, पाली, ३११. मन्त्री आर्यसमाज, नागौर, ३१२. रामगोपाल सिंह, अजमेर, ३१३. राजेश आर्य, जयपुर, ३१४. पूषालाल मंडरावलिया, अजमेर, ३१५. विजयेन्द्र कुमार मुरैणा, म.प्र., ३१६. गुन्डेरराम, ज्ञानराम, भेराराम, पाली, ३१७. रूपचन्द मुकेश सोनी, विजयनगर, ३१८. आर्यसमाज प्रेमलाल साहू, बैतुल, ३१९. आर्यसमाज मन्दिर, झालावाड़, ३२०. विमला परिहार, विजयनगर, ३२१. अनिल तारा देवी, अजमेर, ३२२. सतीश मित्तल, जयपुर, ३२३. ओमदास, नागौर, ३२४. बी. सत्यनारायण आर्य, अदिलाबाद, आ.प्र., ३२५. मनकरुणा उपाध्याय, हैदराबाद, ३२६. आर्यसमाज, पीपाड़सिटी, जोधपुर, ३२७. वासुदेव मगनलाल, बनासकांठा, गुजरात, ३२८. हीरालाल शर्मा, उदयपुर, ३२९. सोम मुनि आर्य, गंगापुर सिटी, ३३०. रामाकिशन जांगिड़, मकराना, ३३१. हरिशचन्द्र प्यारेलाल, चंपानेरी, ३३२. प्रेरणा रानी शर्मा, अजमेर, ३३३. भगवान, सोनीपत, ३३४. श्रीचन्द्रा, दिल्ली, ३३५. मनोज सिंह यादव, ३३६. पी.सी.जैन, ३३७. वीणा धर्मपाल आर्य, ३३८. रामचन्द्र आर्य, अजमेर, ३३९. आर्यसमाज झज्जर, हरियाणा, ३४०. भिरतम चन्द, बीकानेर, ३४१. राम, बीकानेर, ३४२. रामलाल, बीकानेर, ३४३. दिनेश मालु, अजमेर, ३४४. अभयदेव शर्मा, बून्दी, ३४५. यशवीर, सोनीपत, ३४६. इन्द्रादेवी त्रिपाठी, जयपुर, ३४७. नोपाराम वर्मा, श्री विजय नागर, श्रीगंगानगर, ३४८. गोपाल वर्मा, हनुमानगढ़, ३४९. अशोक कुमार टोडावाल, भीलवाड़ा, ३५०. ओंकारलाल भक्त, गुगरा, ३५१. अशोक भागवत सारथी, अजमेर, ३५२. राम बिलास ओमप्रकाश छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़, ३५३. गुरुकुल लाढ़ौत, रोहतक, ३५४. दौलत कुमारी टी.टी. कॉलेज, किशनगढ़, ३५५. राधाकिशन भूतड़ा, ब्यावर, अजमेर, ३५६. छोगानाथ भूडोल, अजमेर, ३५७. विनय कुमार झा, जयपुर, ३५८. महेश मालु, ब्यावर, ३५९. तुलसीराम नागपाल, अजमेर, ३६०. सत्यदेव टैगोर सैन्ट्रल एकेडमी, बोराज, अजमेर, ३६१. भगवान सिंह राव, अजमेर, ३६२. रामचन्द्र हरिराम, मेड़ता, ३६३. विष्णुराम, मेड़ता, ३६४. जोगीराम, मेड़ता, ३६५. मनोहर सिंह, अजमेर, ३६६. मधु मूलचन्द शर्मा, अजमेर, ३६७. आर.सी.चन्देल सिरोज, विदिशा, ३६८. डॉ. ज्ञान आर्य, सिहोर, म.प्र., ३६९. ललिता गुप्ता व वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर, ३७०. सरला आर्य, गुलाबपुरा, ३७१. कुसुम, मुजफ्फरनगर, ३७२. सन्तोष, मुजफ्फरनगर, ३७३. रामप्रसाद, सराधना, अजमेर, ३७४. वी.के.मेहता व राशि मेहता, अजमेर, ३७५. आर्यसमाज सरदार शहर, चूरू, ३७६. जवाहरलाल आर्य, नालन्दा, ३७७. पुष्पलता सहगल, नसीराबाद, ३७८. सुजीत शर्मा, ३७९. केसाराम, पाली, ३८०. छोगालाल रुपाली, पाली, ३८१. सन्दीपन आर्य, जयपुर, ३८२. दूदाराम, पाली, ३८३. अमृतलाल, नागौर, ३८४. गजेन्द्र आर्य, पाली, ३८५. चुन्नीलाल आर्य प्रजापत, जोधपुर, ३८६. आचार्य ब्रजेश, अलीगढ़, ३८७. मूलचन्द शर्मा, जयपुर, ३८८. तेजसिंह, अजमेर, ३८९. उमेश कुमार, अजमेर, ३९०. केसाराम, पाली, ३९१. पूनमचन्द चौहान, ब्यावर, अजमेर, ३९२. वेदपति, अजमेर, ३९३. संगीता सोनी, जयपुर, ३९४. निर्मला सोनी, जयपुर, ३९५. बालमुकुन्द छापरवाल, राजगढ़, ३९६. ओमप्रकाश नवाल, ब्यावर, अजमेर, ३९७. सावित्री दुबे, पंचशील, अजमेर, ३९८. ओमप्रकाश, जयागंज, ३९९. पण्डित धर्मपाल शास्त्री, काशीपुर, उत्तराखण्ड, ४००. तारामती आर्य, कोलकाता, ४०१. ब्रह्मचारी सत्यव्रत आर्य, बीकानेर, ४०२. हंसमुनि योगार्थी, नारनौल, हरियाणा, ४०३. धरती, ब्यावर, अजमेर, ४०४. विष्णु काबरा, अजमेर, ४०५. कृपानन्द

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हैदराबाद, आ.प्र., ४०६. अनिल उत्तम, नई दिल्ली, ४०७. अरुणा पारीक, अजमेर, ४०८. सविता, अजमेर, ४०९. संगीता आर्य, जीन्द, हरियाणा, ४१०. सुमन सिंह, अजमेर, ४११. शास्त्री केशवदेव, अजमेर, ४१२. श्यामसिंह, सहारनपुर, उ.प्र., ४१३. सूर्या कुमारी महेश्वरी, अजमेर, ४१४. नरेन्द्र मिश्रा, अजमेर, ४१५. संजय महेश्वरी, अजमेर, ४१६. विजय मल्होत्रा, अजमेर, ४१७. ओमप्रकाश पाराशर, अजमेर, ४१८. राजेन्द्र छापरवाल, अजमेर, ४१९. गुलाब, अजमेर, ४२०. सत्यनारायण काबरा, अजमेर, ४२१. विद्यावती बाड़मेर, अजमेर, ४२२. मुरलीधर राठी, अजमेर, ४२३. आर्यसमाज, झालावाड़, ४२४. उत्तमचन्द वर्मा, रतलाम, म.प्र., ४२५. जुगल किशोर पंत, अजमेर, ४२६. सोमरत्न आर्य, अजमेर, ४२७. ओंकारलाल दवे, अजमेर, ४२८. दिलिप भाई नरसिंह भाई, मकवाना वदवाना, ४२९. सुभाष वेदालंकार, जयपुर, ४३०. भीमराज शर्मा, नसीराबाद, अजमेर, ४३१. आर्य रामशरण, हाथरस, उ.प्र., ४३२. कृष्ण गोपाल मेहोत्रेय, टनकपुर, उत्तराखण्ड, ४३३. मदनलाल गुप्ता, यू.एस.ए., ४३४. रामानन्द, मन्सूरपुर, ४३५. राजाराम शर्मा, कोरबा, ४३६. तुलसीदास आर्य, छिन्दवाड़ा, ४३७. राम गोपाल खींची, बारां, ४३८. शिवकुमार कुरमी, जयपुर, ४३९. सन्तोष कुमार आर्य, बुलन्दशहर, उ.प्र., ४४०. रवीन्द्र कुमार, नई दिल्ली, ४४१. चन्द्रावती स्मारक ट्रस्ट, नई दिल्ली, ४४२. धर्मवीर गाला, गुड़गांव, ४४३. स्नेहलता बजाज, गुड़गांव, ४४४. बी. रामचन्द्रा, सिकन्दराबाद, ४४५. के.के. जयान, अलुवा, ४४६. तीरथ राम शर्मा, कांगड़ा, ४४७. अनिल कुमार, अजमेर, ४४८. जर्रा भाई नानजी भाई पटेल, साबरकांठा, गुजरात, ४४९. कमल शर्मा, अजमेर, ४५०. रामचन्द्र पंसारी, अजमेर, ४५१. आदित्य राज, ४५२. दीपा माहता, अजमेर, ४५३. मातादीन चौधरी, अलवर, ४५४. लज्जावती, अलीगढ़, ४५५. फेसला कुन्दल राव, आन्ध्रप्रदेश।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 **बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
IFSC - **IBKL0000091**

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 **बैंक का नाम** - **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
IFSC - **SBIN0007959**

वैचारिक क्रान्ति हेतु
सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की योजना

सभी धर्म प्रेमी सज्जनों, आर्यसमाजों व संस्थाओं से निवेदन है कि इस कार्य को सफल बनाने हेतु शीघ्रता से अपना आर्थिक सहयोग परोपकारिणी सभा को भिजवायें ताकि तदनुरूप कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। सहयोग भिजवाते समय **सत्यार्थप्रकाश का प्रचार-प्रसार** शीर्षक लिखना ना भूलें। धन्यवाद।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-आचार्य दिनेश शास्त्री, ऋषि उद्यान, अजमेर। चल दूरभाष-०७७३७९०४९५०, ०९६०२९२१३७३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गुरुमन्त्र गायत्री

–उर्मिला राजोत्या

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

आपने गायत्री मंत्र का नाम अवश्य सुना होगा और आप में से बहुतों को तो यह मंत्र कंठाग्र भी होगा और उसका जाप भी करते होंगे। आओ! आज हम इसके अर्थ की विशद व्याख्या करें, क्योंकि अर्थ समझकर किसी मन्त्र का उच्चारण करने से तथा उसकी भावना करने से वह अधिक फलदायी होता है।

हे (भूः) स्वयंभू, जिसका बनाने वाला कोई नहीं है (भुवः) चेतन स्वरूप, सर्वज्ञ, सब जगत् को उत्पन्न करने वाला (स्वः) आनन्द स्वरूप व आनन्द दाता (सवितुः) शुभ प्रेरणा देने वाला, उत्पत्ति कर्ता, ऐश्वर्य प्रदाता (देवस्य) सर्व सुख प्रदाता (वरेण्यम्) वरण करने योग्य अतिश्रेष्ठ (तत्) उस जगत्प्रसिद्ध (भर्गः) पापनाशक तेज को (धीमहि) हम धारण करें तथा ध्यान करें (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) शुभ प्रेरणा के द्वारा सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

समस्त मानव मात्र के लिए इस मंत्र का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसमें प्रभु से उत्तम बुद्धि के लिए प्रार्थना की गई है। उत्तम बुद्धि के अभाव में न तो ज्ञान का अर्जन किया जा सकता है और न ही किसी विद्या का। अस्तु, ज्ञानार्थ-विद्यार्थी जीवन में जो बालक अथवा बालिका इस मंत्र का अर्थ सहित जाप करते हैं, उनका ब्रह्मचर्याश्रम तो सफल होता ही है, शेष आश्रम भी बुद्धि की बदौलत चमक उठते हैं।

इस मंत्र का स्रोत वेद है। वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। चूंकि परमात्मा व आत्मा चेतन सत्ताएं हैं, अतः ज्ञान दोनों का एक स्वाभाविक गुण है। फिर भी एक अन्तर दोनों के ज्ञान में है। ईश्वर अपनी सर्वव्यापकता के कारण सर्वज्ञ है, तो मनुष्य अल्प परिमाण होने के कारण अल्पज्ञ है। अपनी सर्वज्ञता व सर्वव्यापकता से ईश्वर मनुष्य की आत्मा में अपने ज्ञान का प्रकाश प्रेरणा के रूप में सदैव संक्रान्त करते हैं। इसीलिए गायत्री-मंत्र का नाम गुरुमंत्र पड़ा। जिस प्रकार शिष्य की अपेक्षा गुरु का ज्ञान अधिक निर्भ्रान्त व व्यापक होता है, ठीक इसी प्रकार मनुष्य अपने स्वयं के ज्ञान से तो अनेक त्रुटियाँ कर सकता है, किन्तु ईश्वर द्वारा अन्तःप्रेरणा के रूप में प्रदत्त ज्ञान के प्रकाश में वह कभी कोई त्रुटि नहीं कर सकता, इसीलिए इस मंत्र में ईश्वर को गुरु मानकर यह प्रार्थना की गई है कि वह अपने ज्ञान की रश्मियों से सदैव हमारे मार्ग को प्रशस्त, प्रबुद्ध व प्रकाशित करता रहे।

इस मंत्र का नाम गायत्री इसलिए है कि इसकी रचना गायत्री नामक छंद में हुई है। वेद में गायत्री छंद के मन्त्र और भी अनेक हैं, किन्तु दैनिक उपासना के लिए इस मंत्र का विशेष महत्त्व और विधान है, अतः यह गायत्री नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसका नाम सावित्री भी है, क्योंकि इस मंत्र का प्रतिपाद्य विषय (देवता) सविता है। इसमें परमात्मा को सविता नाम से सम्बोधित व स्मरण किया गया है, अर्थात् इसमें सविता के गुणों का वर्णन और उसकी उपासना है।

अब हम "मंत्र" शब्द का अर्थ भी समझ लें। मंत्र का अर्थ केवल यही नहीं है कि कोई श्लोक पंक्तिबद्ध या लेखबद्ध मात्र हो, वरन् उस श्लोक में निहित विचार को ही मंत्र कहा जाता है। मंत्र का अर्थ ही विचार है। मंत्री, मंत्रणा आदि शब्दों की व्युत्पत्ति भी मंत्र शब्द से ही हुई है, जिनका अर्थ भी विचार करना है। मंत्र का एक अर्थ गुरु भी होता है। जिस प्रकार गुरु हमें अपने विचारों से लाभान्वित करता है और हमारे विचारों को परिष्कृत व परिवर्धित करता है, कर्त्तव्य व अकर्त्तव्य का बोध कराता है, ठीक इसी प्रकार भगवान् ने मानव के कल्याण के लिए मंत्र रूप में अपने विचार सृष्टि के प्रारम्भ में पवित्र व श्रेष्ठ ऋषियों की आत्मा में प्रकट किये।

इसलिए ईश्वर प्रदत्त वेदोक्त मंत्रों को ही केवल मंत्र की संज्ञा दी गई है। ईश्वर की इस थाति को ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद के रूप में ऋषि मुनियों ने श्रवण व मनन के द्वारा अविच्छिन्न रूप से सुरक्षित रखा है, इसीलिए वेदों का दूसरा नाम श्रुति भी है। छापेखाने के आविष्कार के बाद वेद पुस्तक के रूप में सुरक्षित हो गये हैं। इसी कारण आज के युग में वेद मंत्रों का श्रवण-मनन और उनको कंठाग्र करने का अभ्यास कम होता जा रहा है, जिससे आज का समाज ईश्वरीय ज्ञान के लाभ से वंचित होकर भटक गया है। वैसे इस धरती पर वेद ज्ञान से पुराना अन्य कोई ज्ञान नहीं। इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही अपना ज्ञान मनुष्य को उसके दिशा-दर्शन हेतु दिया। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह भी है कि यह देश, काल, जाति और इतिहास से अछूता है। आओ आज

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हम उसी ईश्वरीय ज्ञान के सागर की एक बूंद का मन्थन कर कुछ मोती निकालें।

ओ३म् पद मन्त्र में नहीं आया है, किन्तु ईश्वर का निज तथा श्रेष्ठ व सर्वमान्य नाम होने के कारण तथा वेद मंत्रों का अंतिम तात्पर्य परमात्मा होने के कारण प्रत्येक मंत्र के पूर्व में इस पद का उच्चारण करने का विधान ऋषियों ने किया है। मूल पद ओम् है। उच्चारण के समय ओम् का ओ प्लुत का चिह्न ३ का अंक ओ के पीछे लिखकर ''ओ३म्'' ऐसा लिखा जाता है।

भूर्भुवः स्वः ये तीन पद सात व्याहृतियों में से लिए गये हैं, अर्थात् ईश्वर के अनेक गुणों में से तीन विशेष गुणों के वाचक पद हैं। गायत्री मंत्र वेदों में अनेक स्थानों पर आया है, किन्तु केवल यजुर्वेद ३९/३ में ही ये व्याहृतियों के सहित आया है। व्याहृतियों के बिना जो मंत्र का भाग बचा रहता है, वही वास्तव में गायत्री नामक छंद है। ऋषियों ने ओम् पद की भांति इन व्याहृतियों सहित ही मंत्र का उच्चारण करने का विधान कर दिया है।

ओ३म् और व्याहृतियों के बिना मंत्र पढ़ने की अवस्था में मंत्र का 'सविता' पद विशेष्य पद होगा और उसे ही प्रधान पद मानकर मंत्र का अर्थ करना होगा। ओ३म् और व्याहृतियों के साथ मंत्र पढ़ने की अवस्था में 'ओ३म्' विशेष्य पद बन जायेगा और सविता उसका विशेषण बन जायेगा और तदनुसार ही अर्थ होगा। यद्यपि स्थानाभाव के कारण इसके दो मुख्य अर्थ सर्वत्र व्यापक और सबका रक्षक ही यहाँ पर दिये जा रहे हैं।

भूः, भुवः, स्वः ये व्याहृति पद यहाँ ओ३म् के विशेषण हैं, अर्थात् ओ३म् नाम से विख्यात परमात्मा कैसा है? वह भूः है, वह भुवः है और वह स्वः है। भूः का अर्थ है स्वयंभू अर्थात् जो स्वयं सत्तावान् है, अर्थात् जिसको बनाने वाला अन्य कोई नहीं है, वह सदा से स्वयं ही विद्यमान् है। कार्य-कारण की शृंखला में ईश्वर वह अंतिम कारण है, जिसका फिर कोई अन्य कारण नहीं है।

परमात्मा भुवः है अर्थात् वह चैतन्य है और सब सृष्टि को बनाने वाला है, उसी ने प्रकृति से सब जगत् को बनाया है। इस सृष्टि का उपादान-कारण यदि प्रकृति है तो ईश्वर इस संसार का निमित्त-कारण है। वही इस सृष्टि का उत्पादक, धारणकर्ता और संहारकर्ता है।

परमात्मा स्वः है अर्थात् वह आनन्द स्वरूप है, उसमें दुःख का लेश भी नहीं। इसलिए उसकी स्तुति उपासना और प्रार्थना करके जीव भी दुःखों से छूट सकता है। एकमात्र ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करके ही जीव आनन्द की अनुभूति कर सकता है, क्योंकि स्वः (आनन्द) जीव का अपना कोई गुण नहीं है। ठीक उसी प्रकार जिस तरह अग्नि के सम्पर्क से लोहा लाल और गर्म हो जाता है, किन्तु जैसे ही लोहे को अग्नि से परे ले लिया जाता है तो उसका ताप व लालिमा जाती रहती है। अस्तु, प्रकृति केवल भूः है अर्थात् स्वयं सत्तावाली है, किन्तु जड़ है। जीव भूः तथा भुवः दोनों है अर्थात् स्वयं सत्ता वाली है और चैतन्य भी। ईश्वर भूः और भुवः तो है ही, किन्तु उसमें एक गुण स्वः=सुख स्वरूप भी है, जो न प्रकृति में है और न जीव में। अपने इस गुण के आधिक्य के कारण ही ईश्वर प्रत्येक प्राणी के लिए आदर्श, आकर्षण व इच्छा का केन्द्र है।

ओ३म् पद वाच्य ईश्वर '**देवस्य**' है, देव है, दिव्य गुणों से युक्त है, देता ही देता है, लेता कुछ भी नहीं। अपने इस स्वभाव के कारण ही वह सब प्राणियों पर सदैव सभी प्रकार के ऐश्वर्य एवं सुखों की वर्षा करता है।

वे प्रभु '**सविता**' भी हैं अर्थात् सूर्य सदृश सबको प्रकाश व प्रेरणा दे रहे हैं, गति दे रहे हैं, चला रहे हैं। जिस दिन वे जगत् को चलाना नहीं चाहेंगे, उस दिन प्रलय हो जायेगी। इतना ही नहीं सूर्य सदृश सबको प्रकाश दे रहे हैं, सबको ज्ञान दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त हम सबको जो ऐश्वर्य, जो धन सम्पत्ति, जो भोग-सामग्री मिल रही है, वह सब भी उसी प्रभु की सविता-शक्ति की कृपा है।

ईश्वर का अपना एक स्वरूप '**भर्गः**' भी है। वह परम शुद्ध, तेजोमय और पाप को भून डालने वाला, भस्म कर देने वाला है। परमात्मा के अपने स्वरूप में तो पाप का प्रवेश है ही नहीं, किन्तु जो परमात्मा के उपासक बनकर उनके इस स्वरूप का ध्यान और चिन्तन करते हैं, वे भी निष्पाप हो जाते हैं। चरित्र वाले और तेजस्वी बन जाते हैं।

परमात्मा '**वरेण्यम्**' है, वरण करने योग्य है, चाहने योग्य है, इच्छा करने योग्य है, स्वीकार करने योग्य है। प्रकृति में तथा अन्य जीवों में लिप्त रहकर मनुष्य को न तो स्थायी सुख मिल सकता है और ना ही स्थायी शांति व आनन्द। किन्तु ईश्वर का चिन्तन, मनन और निदिध्यासन करने से उसके सभी साध्य सिद्ध हो जाते हैं, इसीलिए एकमात्र ईश्वर ही वह सखा और सत्ता है, जो चाहने व इच्छा करने के योग्य है, वरेण्यम् है।

'**धीमहि**' भगवान् के स्वरूप का, भगवान् के गुणों का खूब ध्यान और चिन्तन करके उसकी दिव्य गुणावली को भली-भांति अपने हृदय-पटल पर अंकित करना चाहिए।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

केवल ध्यान और चिन्तन तक ही हमें नहीं रह जाना चाहिए। हमें 'धीमहि' का दूसरा अर्थ-'धारण करते हैं' भी सदा स्मरण रखना चाहिए। भगवान् के स्वरूप का, उनके गुणों का चिन्तन करके हमें उन्हें अपने भीतर धारण भी करना चाहिए। जैसे भगवान् के गुण हैं, वैसे ही हमें अपने गुण भी बनाने चाहिएं। जैसे भगवान् हैं, हमें स्वयं भी वैसा ही बनना चाहिए। भगवान् की उपासना में बैठकर व्यवहार में उनके गुणों को धारण करके मनुष्य निष्पाप बन सकता है और निष्पाप जीवन की प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य है।

उक्त विधि से ईश्वर की प्रार्थना, स्तुति व उपासना करने से हमारी बुद्धियाँ, हमारे विचार परमपवित्र हो जायेंगे। अच्छे विचार हमें अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देंगे। इस प्रकार विचार और आचार से पवित्र होकर हम ईश्वर को प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त कर लेंगे।

सार रूप में ओ३म् पद वाच्य परमात्मा की उपासना से हमें सद्बुद्धि प्राप्त होती है। सद्बुद्धि का प्रदान प्रभु का सबसे बड़ा वरदान है। सद्बुद्धि मिल गई तो सब कुछ मिल गया, क्योंकि बुद्धि वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपना लोक भी बना सकते हैं, तो परलोक भी। इस मंत्र के माध्यम से हमने वह कुंजी ईश्वर से मांग ली है जिसे प्राप्त करके फिर कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता। इसीलिए गायत्री मंत्र से उत्तम अन्य कोई स्तुति नहीं, अन्य कोई प्रार्थना नहीं। वेद के इस परमप्रसिद्ध गायत्री मंत्र में जहाँ सद्बुद्धि की प्रार्थना ईश्वर से की गई है, वहाँ उस सद्बुद्धि की प्राप्ति का उपाय 'सदाचार' भी इसी मंत्र में बता दिया गया है। साथ ही उपासनीय प्रभु के स्वरूप का भी वर्णन कर दिया गया है। इसीलिए गायत्री मंत्र की इतनी महिमा है।

आओ, हम गायत्री मंत्र द्वारा भगवान् से सद्बुद्धि की याचना कर अपने जीवन को सफल बनायें। ओम् शम्! **-३९७/ ३६ अमू कॉटेज, पुलिस लाइन, नया बाड़ा, अजमेर।**

आया बसन्त

-अम्बा प्रसाद शर्मा

अब नहीं बरस रहे ओले कहीं भी,
अब बर्फबारी का कहीं नहीं जोर है।
बदली और वर्षा कर गई प्रयाण कहीं,
सुहानी धूप का साम्राज्य सब ओर है॥

प्रचण्ड शीत का या पाले और कुहरे का,
पर्वतों और घाटियों में हो गया अन्त है।
आम के पेड़ों पर, सरसों के खेतों पर,
छा रहा चहुँ ओर ऋतुराज बसन्त है॥

कूकते हैं पक्षीगण, नाचते हैं मोरगण,
पशुओं की मस्ती का आलम अनन्त है।
बालक और ब्रह्मचारी, सन्त और कर्मचारी,
सबको नवजीवन देने आया बसन्त है॥

**जी-३५८, वैभवनगर, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा,
चलभाष-९३१४३७९२९२**

पंजाबी-गीत

-मंगलदेव आर्य

टेक :-सानु आण जगाया जी ऋषि ने आण के।

जिन्दे बुजुर्गां कदर न कर दे।
भोपां घर पीपां दा भर दे।
जिन्दियां पुजवाया जी ॥ १॥ ऋषि ने आण के....

शुक्र, शनीचर, केतु, राहू,
नौ ग्रह सानु फिरदे खॉऊ,
हुण पिछां हटाया जी ॥ २॥ ऋषि ने आण के.....

पिप्पल, पत्थर, कबरां पुजाइयां,
सच नू छड़ के, गप्पाँ सुनाइयाँ,
हुण वेद सुनाया जी ॥ ३॥ ऋषि ने आण के.....

देवी मिल गई, बकरे खाणी,
भैरों मिली शराब उड़ानी,
मधुमास छुड़ाया जी ॥ ४॥ ऋषि ने आण के.....

ऋषि दयानन्द जग विच आया,
रस्ता वैदिक-धर्म बताया,
पाखण्ड छुड़ाया जी ॥ ५॥ ऋषि ने आण के.....

**-ग्रा. व पो.-सबलाना, जि-भरतपुर,
चलभाष-९९८३१०४४३२**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठकों के विचार

मनुस्मृतिकार ने धर्म के दश लक्षण बतलाए हैं–यथा –

धृतिक्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

ये दशों लक्षण मनुष्य के कल्याण के लिए बहुत उत्तम हैं। इनका आचरण करने वाला मनुष्य सर्वथा सुखी रहता है, इसमें कोई संशय नहीं है।

इनके अलावा महर्षि दयानन्द ने अहिंसा को भी ग्यारहवाँ धर्मलक्षण माना है। अन्य कई मतों–जैन आदि ने भी 'अहिंसा परमोधर्मः' कहा है। किन्तु अहिंसा की परिभाषा के विषयों में स्पष्टता नहीं है। किसको अहिंसा कहें? क्या जीवहत्या न करने को अहिंसा कहा जाए? तो कौन से जीवों की हत्या नहीं करनी चाहिए?

पुराने जमाने में क्षत्रिय लोग वन में शिकार करने जाते थे और हरिण आदि का शिकार कर उसे खाते थे। क्या यह धर्मविरुद्ध है? फिर यदि यह मानें कि किसी भी सजीव की हत्या नहीं करनी चाहिए, तो इसमें तो साग–सब्जियां भी आ जाती हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री जगदीशचन्द्र वसु ने पेड़–पौधों के अनेक परीक्षण करके सिद्ध किया कि इनमें भी संवेदना है। फिर तो हमें तो शाक–भाजी आदि का सेवन भी नहीं करना चाहिए। किन्तु ऐसा संभव नहीं है। फिर अहिंसा की परिभाषा क्या निश्चित की जाए? क्या मनुष्य केवल रोटी खाकर ही जीवन–यापन करे। या फिर कुछ और साधन अपनावे। यह एक ऐसा प्रश्न है, जो विवेकशील व्यक्तियों से जवाब की अपेक्षा रखता है।

एक प्रश्न–मक्खी–मच्छर आदि छोटे जीव भी मनुष्य को बहुत हानि पहुंचाते हैं। मच्छरों से मलेरिया, डेंगू जैसे भयानक रोग उत्पन्न होते हैं। इनके निवारण के लिए मच्छर मारने वाली दवाइयों का छिड़काव कराया जाता है। क्या यह जीव हत्या नहीं है? और भी सांप–बिच्छू जैसे घातक जीवों की हत्या मनुष्य प्रायः करता है। क्या यह हिंसा नहीं है? हिंसा–अहिंसा की परिभाषा में सामान्य व्यक्ति भटक जाता है।

मेरे विचार में–शाक–सब्जी–फल आदि का सेवन मनुष्य को अवश्य करना चाहिए। इनका उत्पादन ही मानव जीवन के लिए है। हां–मांसाहार मनुष्य को नहीं करना चाहिए। जो प्राणी उन्नत किस्म के हैं, जैसे–बकरी, हिरण आदि इनको मारकर अपना पेट भरना उचित नहीं है। जो अपने जीवन को उछल–कूद के साथ सुखमय व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें मारकर खाना, एक अपराध है। ऐसी हिंसा त्याज्य है। मनुष्य के लिए मांसाहार सर्वथा त्याज्य होना चाहिए।

घातक जीव–जन्तुओं को मारना भी आवश्यक है। जंगल में रहने–तपस्या करने वाले लोगों को घातक प्राणियों से बचने के लिए क्या करना चाहिए, यह विचारणीय है। वैसे अहिंसा का विस्तार बहुत लम्बा चौड़ा हो सकता है। शारीरिक के साथ मानसिक हिंसा–किसी का बुरा करने की इच्छा रखना भी इसके अन्तर्गत आता है। अतः अहिंसा का विषय बहुत गंभीर है।

केवल दाल–रोटी, सब्जी खाकर मनुष्य जीवन बिताए, किन्तु दाल, गेहूं के बीजों में भी जीवन है। जमीन में बोने पर उनका उत्पादन होता है। फिर क्या खाकर जीवित रहे इन्सान?

डॉ.एस.एल.वसन्त,
बी–१३८४, नागपाल स्ट्रीट, फजिल्का, पंजाब
दूरभाष–०१६३८–२६२६३६, २६३३३६

निराले ऋषि

–दाताराम आर्य 'आलोक'

चले दुनियाँ के दुःख हरने को,
उनको सुख जीवन भर कैसा।
तलवार खिलौना समझ लिया,
गम्भीर घावों से डर कैसा।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' सीख लिया,
कहने को अपना घर कैसा।
ऐसा पारस जीवन 'आलोक' कहाँ,
दयानन्द ऋषिवर जैसा।

ग्राम–बुटेरी, तहसील–बानसुर
जिला–अलवर–३०१४०२
मो–९८११७४१९७६

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. परोपकारी का ताजा अंक फरवरी प्रथम २०१३ में आपका **सम्पादकीय** लेख-स्वामी विवेकानन्द और उनके ..... पढ़कर बड़ा अजीब अनुभव हुआ। आपने जो लिखा प्रमाण सहित लिखा है। आपका लेख पढ़कर उनकी महानता पर प्रश्न चिह्न लग जाता है। वे न केवल मांसाहारी थे, अपितु गौमांस भक्षण के भी समर्थक थे। ऐसे लोलुप संन्यासी को क्या कहा जाए? वे ३९ वर्ष की छोटी आयु में ही चले गए, क्योंकि उन्हें कई रोग थे। देश के ऐसे संन्यासी के विषय पर तथ्यपरक लेख पढ़कर मैं स्तब्ध रह गया। तथ्य प्रकट करने के लिए आपको अनकेश: धन्यवाद। -**डॉ. एल.एल.वसन्त, बी-१३८४, नागपाल स्ट्रीट, फजिल्का, पंजाब।**

२. जनवरी २०१३ का अंक प्राप्त हुआ, तदर्थ आपको धन्यवाद। पत्रिका के अन्तर्गत विभिन्न लेख अतिरोचक एवं विचारोत्तेजक हैं, यह अति प्रसन्नता की बात है कि आप पाठकों को जो सामग्री प्रदान करते हो वह झूंठ व पाखण्ड के विरुद्ध है तथा इसे प्रस्तुत करने का कष्ट करते रहते हैं, इस हेतु हम आपके महान् वैभव की कामना करते हैं।

- **एस.एन.काबरा, ३, राजेश अपार्टमेन्ट, नवगुजरात कॉलेज के पीछे, आश्रम रोड़, अहमदाबाद।**

३. परोपकारी का लगभग ५ वर्षों से ग्राहक एवं पाठक हूँ पत्रिका की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता किन्तु एक शंका आप हर पत्रिका में लेखकों एवं कविता भेजने वालों को आगाह करते हैं कि कविता वही भेजें जो अन्य पत्रिका में न छपी हों, प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भावना संकुचित है, यदि पत्र द्वारा या पत्रिका द्वारा इस शंका का विश्लेषण करें तो उत्तम होगा। -**मंगलदेव आर्य, ग्रा व पो-सबलाना, भरतपुर।**

समाधान-जिनके पास अनेक आर्य पत्रिकाएं आती हैं, उनके पास एक ही लेख अनेक पत्रिकाओं में आये यह उचित नहीं लगता। परोपकारी की अपनी नीति है व अपना एक स्तर है। स्तरीय पत्रिकाएं इस नियम का अधिकाधिक निर्वाह कर रही हैं।

४. आर्यसमाज में स्वामी विवेकानन्द का चित्र क्यों? परोपकारी फरवरी (प्रथम) में आपने सम्पादकीय लेख पढ़ा होगा। मैं पाठकों से पूछना चाहता हूँ कि स्वामी विवेकानन्द का चित्र आर्यसमाज में लगाना चाहिये या नहीं।? मैंने दिल्ली की दो तीन आर्यसमाजों में स्वामी विवेकानन्द का चित्र लगा देखा है। हमने वहाँ के अधिकारियों से कहा- आपने यह चित्र क्यों लगा रखा है? यह संन्यासी तो वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध प्रचार करता रहा। माँसाहारी था। तब उन्होंने उत्तर दिया स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म की रक्षा का बड़ा भारी काम किया है। बाद में हमें पता चला आर्यसमाज के प्रधान/मन्त्री दोनों ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बन्दे हैं। जहाँ आर.एस.एस. के लोगों ने आर्यसमाज में अधिकार जमा रखा है, वहाँ वो मनमानी करते हैं। कुछ भोले भाइयों को यह पता ही नहीं कि स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द में क्या अन्तर है? -**देवराज आर्य मित्र।**

५. आचार्य सत्यजित् जी नमस्ते। परोपकारी फरवरी (प्रथम) २०१३ में **जिज्ञासा समाधान** में आपने **नियोग** के प्रश्नों पर जो समाधान दिये हैं, वह सचमुच बहुत ही प्रशंसनीय है। इसमें आपकी विद्वत्ता और आपका ऋषि पर पूर्ण प्रेम व विश्वास पदे-पदे झलकता है। हमें गर्व है कि आप जैसे योगी महात्मा जन आर्यसमाज में हैं। मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली मानता हूँ, जो आप जैसे महात्माओं का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वे आप जैसे आप्तों द्वारा हम पर कृपा बरसाता रहे।-**जीवन तोषनीवाल, धारूर, महाराष्ट्र।**

६. 'परोपकारी' का प्रत्येक **सम्पादकीय** तथ्यपूर्ण-प्रेरणादायक होता है। मैं समय-समय पर आपके सम्पादकीय लेखों को विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भेजता रहता हूँ। 'राष्ट्रधर्म' व 'गोधन' की प्रतियाँ आपके अवलोकनार्थ भेज रहा हूं। राष्ट्रधर्म वह ऐतिहासिक पत्र है, जिसका सम्पादन अटलबिहारी वाजपेयी ने भी किया था। 'सत्यचक्र' पत्रिका में श्री महेन्द्र आर्य की पुस्तक की समीक्षा की थी, उसमें भी आपकी चर्चा थी। आप इसी प्रकार अलगाववादी, राष्ट्रद्रोही तत्वों पर प्रहार करते रहें, यही प्रभु से प्रार्थना है।-**शिवकुमार गोयल, चलदूरभाष-८२७२८८०२८०**

८. परोपकारी पाक्षिक फरवरी प्रथम, २०१३ में **जिज्ञासा-समाधान-४१** में नैष्ठिक ब्रह्मचारी, दर्शनाचार्य, वैदिक विद्वान्, आचार्य सत्यजित् जी ने गृहस्थों से सम्बन्धित **नियोग** जैसे विषय पर वैदिक और तार्किक समाधान प्रस्तुत किया है। मुझ ७४ वर्ष की आयु के गृहस्थ की नजर में नियोग के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत हैं।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्णों में क्षतयोनिस्त्री और क्षतवीर्य पुरुष का पुनर्विवाह नहीं होना चाहिये अर्थात् द्विजों

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

में पुनर्विवाह वा अनेक विवाह कभी नहीं होना चाहिए। इस मान्यता के आधार पर दस प्रश्न किए गये हैं और उनका विद्वत्तापूर्वक, शास्त्रोक्त समाधान प्रस्तुत किया गया है।

नियोग की प्रथम आधारभूत योग्यता ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण अर्थात् द्विज होना है। जबकि प्रश्न इस आधार पर किए गये हैं मानों शूद्रों को, अद्विजों को नियोग के योग्य ठहरा दिया गया हो। जिसका द्वितीय जन्म हुआ है, अर्थात् जिसने ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गृहस्थ में भी वैदिक धर्म का पालन किया है और आगे भी ऐसा ही जीवन जीने की योग्यता और आयोजन वाला हो, उसे भी सामाजिक स्वीकृति के बाद घोषणा पूर्वक अपने या उत्तम वर्ण की योग्यता वाले से, वैदिक नियमों के अनुसार नियोग की स्वीकृति दी गई है।

आर्यसमाज का सातवां नियम है ''सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार, यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए''। अर्थात् द्वेषपूर्वक, अधर्मानुसार, असमान व्यवहार नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार अष्टांग योग की प्रथम सीढ़ी 'यम' के प्रथम में अहिंसा कही गई है। अर्थात् अहिंसा वह पहली सीढ़ी का पहला नींव का पत्थर है जिस पर समाधि और ईश्वर साक्षात्कार, मुक्ति टिकी हुई है। इसलिए अहिंसा की परिभाषा करते हुए ऋषि लिखते हैं ''तत्राहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोह:'' यो.द.व्या.भा.२/३० अर्थात् सर्वथा सब प्रकार से अर्थात् शरीर वाणी और मन से सर्वदा=सब कालों में सब प्राणियों में अनभिद्रोह-पीड़ा देने की भावना का परित्याग करना अर्थात् बैर-भावना न रखना अहिंसा है।

अब ऐसा द्विज जो अहिंसा का पालन करता हो, आर्यसमाज के सातवें नियम को व्यवहार का आधार मानता हो, जिसका एक मात्र लक्ष्य ईश्वर-साक्षात्कार और मुक्ति की प्राप्ति हो, उसके लिए तो प्रथम विवाह ही बिमारी की दवा है। फिर पुनर्विवाह वह कैसे करेगा अथवा करेगी, वह तो द्विज है।

जो ऐसा द्विज नहीं है, जिसका वर्ण शूद्र है उसके लिए तो नियोग नहीं पुनर्विवाह ही योग्य है। पर वह विवाह भी परस्पर सहमति, सहयोग, समान गुणकर्मानुसार सामाजिक स्वीकृति से होना अनिवार्य है। अत: नियोग को अद्विजों पर लादा जाये, तब ही प्रश्न खड़े होंगे अन्यथा नहीं।

-रामगोपाल गर्ग, अजमेर, मो.-४१३२२८४३९

९. आदरणीय आचार्य जी। आपके यहां के ब्रह्मचारी ज्ञानेन्द्र जी से प्रतिदिन काकरवाड़ी में मुलाकात होती है, उनके लैपटॉप पर **परोपकारिणी** की व्यवस्था को देखकर काफी प्रभावित हुआ, सब कुछ बहुत ही अच्छा लगा। ब्रह्मचारी जी की शालीनता सज्जनता को देखकर मन को प्रसन्नता प्राप्त हुई। आर्यजगत् को **परोपकारिणी** जैसी संस्थाएं और आप जैसे विद्वान् मिलें, यही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।- **प्रमोद शुक्ला, आफिस नं. ४७, मिर्जा गालिब मार्केट, एस.वी.पी. रोड़, मुम्बई। चलदूरभाष-९८६९५३९५४७**

परोपकारी के सम्बन्ध में घोषणा

प्रकाशन - परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

संपादक	-	धर्मवीर	**मुद्रक का नाम**	-	श्री मोहनलाल तँवर,
नागरिकता	-	भारतीय	**पता**	-	वैदिक यंत्रालय,
पता	-	केसरगंज, अजमेर			केसरगंज, अजमेर
प्रकाशक	-	धर्मवीर	**प्रकाशन अवधि**	-	पाक्षिक
नागरिकता	-	भारतीय			
पता	-	कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर			

मैं, धर्मवीर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है।

मार्च २०१३ **प्रकाशक : धर्मवीर**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(१ से १५ फरवरी २०१३ तक)

१. एम.एल. गोयल, अजमेर, २. वृद्धिचन्द आर्य, जयपुर, ३. परमानन्द आर्य, भरतपुर, ४. रामेश्वर आर्य, सरवाड़, ५. राम आर्य, गांधीधाम, गुजरात, ६. राजेश कपूर, सोनल, ७. चिरंजीव सार्थक, बैंगलौर, ८. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, ९. दयानन्द शर्मा, साउथ अफ्रीका, १०. परमानन्द छापरवाल, जयपुर, ११. डॉ. रमेश कुमार बंसल, अजमेर, १२. उषा बंसल, अजमेर, १३. देवमुनि, अजमेर, १४. वेदकुमारी, चण्डीगढ़, १५. स्वास्तिकम् चेरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र, १६. रजनीश कपूर, पीतमपुरा, नई दिल्ली, १७. मयंक भार्गव, टेक्सास, यू.एस.ए., १८. शिवकुमार मदान, नई दिल्ली, १९. राम माधव गुप्ता, नारायणी गुप्ता, विलासपुर, छत्तीसगढ़, २०. मुन्नी रानी चौधरी, अजमेर, २१. आर्यसमाज, जनकपुरी दिल्ली, २२. अर्जुन मुनि, रोजड़, २३. शशि खुल्लर, अम्बाला, हरियाणा, २४. राजेश कुमार, नई दिल्ली, २५. माता कौशल्या, अजमेर, २६. राजवीर सिंह चौहान, करनाल, हरियाणा, २७. डॉ. रविशंकर चौधरी, ज्वालापुर, २८. अशोक गुप्ता, दिल्ली, २९. रमेश कुमार व उषा बंसल, अजमेर।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१ से १५ फरवरी २०१३ तक)

१. दुर्गा प्रसाद, लखनऊ, उ.प्र., २. राजेश त्यागी, अजमेर, ३. प्रदीप गहलोत, जोधपुर, ४. मोहित तनेजा, दिल्ली, ५. सुधा मेहरा, अजमेर, ६. विश्वास पारीक, अजमेर, ७. विमला देवी चोपड़ा, अजमेर, ८. रतनी देवी, अजमेर, ९. निर्मल बिज़, अजमेर, १०. गोविन्द कुमार शर्मा, किशनगढ़, अजमेर, ११. डॉ.एस.के.माथुर, जयपुर, १२. संजय पायल, जयपुर, १३. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, १४. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, १५. मृगांक, अजमेर, १६. बालेश्वर मुनि, अजमेर, १७. एन.के.तिवारी, अजमेर, १८. किशन, अजमेर, १९. गुप्ता, अजमेर, २०. माधव गर्ग, अजमेर, २१. वृद्धिचन्द गुप्त, अजमेर, २२. अमरचन्द माहेश्वरी, अजमेर, २३. चांदराम आर्य, अजमेर, २४. राजेश गोयल, अजमेर, २५. भंवर गूर्जर, अजमेर, २६. बिरज गुर्जर, अजमेर, २७. हरलाल काका, अजमेर, २८. राजकुमार आर्य, जीन्द, हरियाणा, २९. मुकेश खुल्लर, हरियाणा, ३०. राजपुताना म्युजिक हाउस, अजमेर, ३१. मयंक कुमार, अजमेर, ३२. माता जी, अजमेर, ३३. कुसुमलता व संतोष देवी, करनाल, हरियाणा, ३४. भूपेन्द्र सिंह, अजमेर, ३५. हरि सिंह राठौड़, अजमेर, ३६. जोरावर सिंह, राठौड़, अजमेर, ३७. योगेन्द्र सैन, अजमेर, ३८. भंवरीदेवी वर्मा, अजमेर, ३९. मंगल गुगलानी, अजमेर, ४०. भंवर गुर्जर, अजमेर।

जिन्दगी से खेलो ना, पृष्ठ-७ का शेष.....

बिता रहा होता है। अपनी जिन्दगी से खेलकर मानव जीवन बिता देना आध्यात्मिक व्यक्ति को भयंकर बर्बादी के समान लगता है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलना है, तो जिन्दगी से खेलना रोकना होता है। आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करना हो, तो अपने द्वारा किये जा रहे खिलवाड़ पर गंभीर विचार आरम्भ करना होता है। आध्यात्मिक जीवन जीना हो, तो जिन्दगी से खेलना बन्द करना होता है। प्रारम्भ में यह कठिन प्रतीत होता है, धीरे-धीरे सहज-सरल-क्रीड़ावत् हो जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि होने से यह क्रीड़ा जीवन के साथ खिलवाड़ नहीं बनती। प्रभु की कृपा से वह प्रभु के समान निर्लिप्त सहज क्रिया-क्रीड़ा बन जाती है। -**ऋषि उद्यान, अजमेर।**

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

मनुष्यों को उचित है कि जो सब सुखों को प्राप्त करने, प्राणों को धारण कराने तथा माता के समान, पालन के हेतु जल हैं उनसे सब प्रकार पवित्र होके इन को शोधकर मनुष्यों को नित्य सेवन करने चाहियें, जिस से सुन्दर वर्ण रोग-रहित शरीर को सम्पादन कर निरन्तर प्रयत्न के साथ धर्म का अनुष्ठान कर पुरुषार्थ से आनन्द भोगना चाहिये।- **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.२।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

-१ से १५ फरवरी तक

महावीर चक्र विजेता ''चौधरी दिगेन्द्र सिंह''

भारत-भूमि की एक विशेषता है कि ये क्रान्तिकारियों, महापुरुषों, वीरों की जन्मभूमि रही है। जिन वीरों (सैनिकों) के कारण देश और देश का गौरव सुरक्षित है, जिनके कारण हम सुरक्षित हैं, राष्ट्र को उन पर सदा गर्व रहेगा। वीरों की इस सूची में एक नाम है-**चौधरी दिगेन्द्र सिंह।** आपका जन्म **राजस्थान प्रान्त के सीकर जिले के झालरा गांव** में हुआ। आर्थिक दृष्टि से परिवार निर्धन था, लेकिन आपके माता-पिता उच्च विचारों, सिद्धान्तों व आदर्शों पर चलने वाले थे। आपके पिता **चौधरी शिवदान सिंह ''आर्योपदेशक''** आर्यसमाज के प्रचारक थे, ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होने के कारण घर का वातावरण देशप्रेम, धर्मप्रेम और संस्कृति प्रेम से ओत-प्रोत था। बच्चों में भी वही गुण, वही संस्कार आने स्वाभाविक थे। दिगेन्द्र सिंह जी बचपन से ही व्यायाम में रुचि रखते थे, विशेषकर कुश्ती में। हरयाणा के मा. चन्दगीराम के अखाड़े में आपने कुश्ती सीखी। व्यायाम के कारण आपका शरीर स्वस्थ, बलिष्ठ व सुगठित था। कुश्ती में आपकी विशेष रुचि व योग्यता के कारण आपको ''राजस्थान केसरी'' की उपाधि भी दी गयी। बड़े होकर आपने अपने स्वभावानुसार सेना में जाने का निश्चय किया। आपके बलिष्ठ शरीर एवं पिता के दिये संस्कारों से प्रभावित होकर एक सिख्ख अधिकारी ने आपको सेना में सन्-१९८५ में भर्ती कर लिया।

देश-प्रेम के जो संस्कार आपको मिले थे, उन्हें कार्यरूप में परिणत होने का अवसर मिला। सन् १९९९ में पाकिस्तानी सैनिकों ने **कारगिल** में 'एन.एस.१' चोटी पर कब्जा कर लिया। ठंड के मौसम में भारतीय सेना पहाड़ों से नीचे आ जाती है, इसी का लाभ उठाकर पाकिस्तानी सैनिक अवैध रूप से भारत की सीमा में आ गये। उन्हें वहां से हटाने के लिये भारतीय सेना की ओर से तीन हमने किये गये, लेकिन शत्रु के ऊँचाई पर होने के कारण सफलता नहीं मिली। पहले हमले में ९, दूसरे में १८ और तीसरे हमले में २३ जवान शहीद हुए। इसके बाद भारतीय सेना की एक सभा हुई। अधिकारी ने सैनिकों को सम्बोधित करके पूछा-''क्या आपमें कोई ऐसा वीर है, जो उस चोटी पर तिरंगा झण्डा लहरा सके।'' सैनिकों के बीच बैठे हुए '२ राजपुताना रायफल्स' के जवान दिगेन्द्र सिंह ने कहा-''सर! इस तिरंगे को मैं वहां लहराऊंगा।'' दिगेन्द्र सिंह ने अपनी योजना बताई। सीधे रास्ते से जाकर आक्रमण करके कोई सफलता नहीं मिल रही थी, इसीलिये दिगेन्द्र सिंह ने पीछे से जाने का निश्चय किया। कार्य दुष्कर था, क्योंकि पीछे से ऊपर रास्ता नहीं था, हजारों फीट ऊंची सीधी दीवार जैसी थी। प्रश्न राष्ट्र के गौरव का हो, तो कठिनाईयों का कोई महत्त्व नहीं होता। दिगेन्द्र सिंह पीछे की ओर से ही रस्सी के सहारे चढ़े और चोटी पर रस्सी बांध दी, जिससे दूसरे सैनिक भी ऊपर चढ़ गये।

पाकिस्तानी सैनिकों ने कल्पना भी नहीं की थी कि भारतीय सैनिक रस्सी के सहारे इतने ऊँचे पहाड़ पर चढ़कर पीछे से आक्रमण कर सकते हैं। आखिर जो कल्पना से भी बढ़कर कार्य करे, उसे ही तो वीर कहते हैं। ऊपर पाकिस्तानी सैनिकों ने १२ मोर्चे बनाये हुए थे, जो कि घुमावदार स्थिति में थे। दिगेन्द्र सिंह अपने साथ हैण्ड ग्रेनाइड-३६ (गोले) ले गये थे। उन्हें ले जाना और प्रयोग करना भी जोखिम भरा था, क्योंकि पिन खुलने के ३-४ सेकेण्ड बाद ही उनमें जोरधार धमाका होता है। उन्होंने एक-एक करके गोले बरसाने शुरु कर दिये। ग्रेनाइड समाप्त होने के बाद एल.एम.जी. से गोलयां दागनी शुरु कर दीं। इस तरह आपने लगभग ४५ शत्रुओं को मारा। पाकिस्तानी कुल सैनिकों की संख्या ६५-६६ थी। भारतीय सैनिकों ने जान पर खेलकर वो लड़ाई जीती। इसमें दिगेन्द्र सिंह को चार गोलिया बांयी छाती पर और एक गोली दायें हाथ के अंगूठे में लगी। 'एन.एस. २ के शिखर पर तिरंगा लहराया गया। इस वीरतापूर्ण कार्य के लिये तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी ने दिगेन्द्र सिंह से मिलकर उन्हें शुभकामनायें व आशीर्वाद दिया। भारत सरकार ने उन्हें सेना के दूसरे सर्वोच्च वीरता पुरस्कार 'महावीर चक्र' से सम्मानित किया।

पुरस्कार देने से पहले सरकार को विश्वास नहीं हो रहा था कि ये काम दिगेन्द्र सिंह ने किया है। अमेरिका के नासा ने अपने उपग्रह से इस युद्ध की एक वीडियो बनाई थी। उस वीडियो को देखकर यह प्रमाणित हो गया कि इस अभियान को सफल बनाने वाला **आर्यपुत्र दिगेन्द्र** ही था।

आपकी वीरता की गाथा को जनसामान्य तक पहुंचाने में मीडिया ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। इस युद्ध के विषय में, विशेषकर दिगेन्द्र सिंह की वीरता को लक्षित करके एक **हिन्दी फिल्म** बनाई गयी-''**लक्ष्य**''। इसमें लड़ाई के हीरो

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

दिगेन्द्र सिंह के स्थान पर फिल्म अभिनेता 'ऋतिक रोशन' ने अभिनय किया है।

गुरुकुल ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों की चौ. दिगेन्द्रसिंह जी से वार्ता–दिनांक ६ फरवरी को अजमेर के चन्द्रवरदायी स्टेडियम में शहीद सैनिकों की विधवा पत्नियों को सम्मानित किया जाना था, जिसके लिये **भारतीय थल सेना के पूर्व अध्यक्ष जनरल वी.के.सिंह** को आमन्त्रित किया गया। यतीन्द्र जी (आ.वी.द.) की सक्रियता के चलते **ऋषि उद्यान में** उनके स्वागत का कार्यक्रम था, लेकिन वी.के.सिंह जी की माता का आकस्मिक निधन होने से वे नहीं आ सके। उनके स्थान पर 'कारगिल युद्ध के सैनिक' महावीर चक्र से सम्मानित चौ. दिगेन्द्र सिंह जी पधारे।

सर्वप्रथम ऋषि उद्यान में आर्य वीरांगना दल के द्वारा आपका भव्य स्वागत किया गया। उसके बाद सभी को आपका परिचय दिया गया। वहीं पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने आपसे भेंट की और ऋषि उद्यान, आर्यसमाज व दयानन्द सरस्वती जी के बारे में जानकार दी। ऋषि दयानन्द आर्यसमाज और गुरुकुल का नाम सुनकर आप भावुक हो गये और आचार्य सत्यजित् जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। ब्रह्मचारियों के साथ आचार्य सत्यजित् जी से भेंट की और बताया कि वे भी आर्यपरिवार से ही हैं, मेरे पिता श्री चौ. शिवदान सिंह ''आर्योपदेशक'' आर्यसमाज के प्रचारक थे। क्योंकि आपको शहीदों की पत्नियों को सम्मानित करने के लिये जाना था, इसलिये उस समय वहीं रुकने की प्रबल इच्छा होते हुए भी आपको जाना पड़ा। जाते समय कहा कि वे कार्यक्रम को सम्पन्न करके सायंकाल फिर ऋषि उद्यान आयेंगे और ब्रह्मचारियों से चर्चा करेंगे।

सायंकाल दिगेन्द्र जी आये और ब्रह्मचारियों से चर्चा की। चर्चा में ब्रह्मचारियों ने पहले कारगिल युद्ध से सम्बन्धित उनके अनुभव सुनने की जिज्ञासा प्रकट की। अनुभवों के साथ आपने राष्ट्र धर्म, संस्कृति, कर्तव्य आदि से सम्बन्धित विचार भी रखे। दिगेन्द्र सिंह जी को सुनकर राष्ट्र, संस्कृति विषयक उनके चिन्तन की झलक दिखती है। आपने निम्न विचार रखे–

–मरना बहादुरी नहीं है, बल्कि युद्ध में शत्रु को परास्त करके विजयी होना बहादुरी है। लक्ष्य को पाने के लिये प्राण तक न्योछावर करना वीरता है।

–'अवसर' (मौका) युद्ध क्षेत्र में, सबसे बड़ा हथियार होता है।

–लोग कहते हैं कि 'इण्डियन आर्मी' का विश्व में चौथा स्थान है, लेकिन मैं कहता हूँ कि ''इण्डियन आर्मी'' का विश्व में प्रथम स्थान है।

–हम सुनते हैं कि भारत महान् है, विश्व गुरु है। क्या पौराणिकों का भारत महान् है? क्या अंग्रेजों का इण्डिया महान् है? क्या मुस्लिमों का हिन्दुस्तान महान् है? नहीं, आर्यों का आर्यावर्त महान् है।

अन्त में यतीन्द्र जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया और ऋषि उद्यान में होने वाले कार्यक्रमों में पधारने का निमन्त्रण भी दिया। आचार्य जी ने श्री दिगेन्द्र जी को ऋषि दयानन्द का साहित्य (दयानन्द ग्रन्थमाला, सत्यार्थप्रकाश आदि) भेंट किया। जाते समय आपने ऋषि उद्यान के विषय में ये शब्द कहे–**आज ऋषि की इस पावन भूमि पर आकर मैं अपने आपको धन्य अनुभव कर रहा हूँ।**

सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति–वेद से हमें क्या–क्या मिला है, यह प्रश्न वैसा ही है जैसे कोई पूछे कि व्यक्ति को अपने माता–पिता से क्या मिलता है। मनुष्य के पास आज जितना भी ज्ञान–विज्ञान है वो सब वेद से ही तो मिला है। इसी विषय को लेकर ऋषि उद्यान में ९ व १० फरवरी को **द्विदिवसीय वेद–सम्मेलन** का आयोजन किया गया। यह आयोजन राजस्थान संस्कृत अकादमी, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, परोपकारिणी सभा एवं ग्लोबल सिनर्जी के संयुक्त तत्वावधान में वेदमूर्ति **डॉ. फतहसिंह जन्मशती समारोह** के रूप में किया गया। सम्मेलन का विषय था– **''वेद की विश्व मानवता को देन''**। दो दिनों में लगभग ४५ से अधिक शोध–पत्रों का वाचन हुआ।

पहले दिन तीन सत्र हुए, जिनमें प्रो. शिवनारायण 'उपाध्याय', डॉ. नवल किशोर भाभड़ा व प्रो. सुरेन्द्र भटनागर ने अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि नगर सुधार न्यास के अध्यक्ष नरेन साहनी थे। साहित्यकार डॉ. देवेन्द्रचन्द्र दास ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''वास्तव में वेदों में ही भारतीय सनातन संस्कृति को एकता के सूत्र में बान्धने की क्षमता है।'' परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर ने कहा कि ''वेद से प्राचीन और वेद से आधुनिक कुछ भी नहीं।'' संचालन साहित्यकार उमेश चौरसिया ने किया। सभी वक्ताओं और विद्वानों ने एक बात अवश्य कही कि ''वेद आचरण और व्यवहार में होना चाहिये, तभी वेद की रक्षा हो सकती है।''

दूसरे दिन वनस्थली विद्यापीठ, टोंक की १२ छात्राओं ने अपने–अपने शोधपत्रों का वाचन किया। सायंकाल ४ बजे से समापन समारोह का आयोजन किया गया। समापन समारोह

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

में संस्कृत और वेद के गण्यमान्य विद्वान उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्षा डॉ. सुषमा सिंघवी ने की। मुख्य अतिथि वासुदेव देवनानी (विधायक) ने कहा कि ''हमारा प्राचीन इतिहास रामायण-महाभारत बताता है कि हमारा ज्ञान-विज्ञान कितने ऊँचे स्तर का था।'' मुख्य वक्ता डॉ. धर्मवीर ने कहा कि ''हम लोग कहते तो हैं कि संस्कृत भाषा का विस्तार हो रहा है, लेकिन आज आई.ए.एस. और आर.ए.एस. की परीक्षाओं से संस्कृत भाषा को हटा दिया गया है, तो संस्कृत घटी या बढ़ी? संस्कृत घटी, लेकिन हम यही सुनकर संतुष्ट हो जाते हैं कि संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा है और कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक अनुकूल है।'' अध्यक्षीय भाषण में सुषमा सिंघवी ने राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा वैदिक वाङ्मय और संस्कृत भाषा के लिए किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। कुछ पुस्तकों का विमोचन भी किया गया-''गीता तत्व दर्शन'' (ले.-स्वामी ओमानन्द सरस्वती, सं.-डॉ. मोक्षराज आर्य), ''देश तो मेरा'' (ले.-गोविन्द खुशलानी)। साथ ही वेद-सम्मेलन की स्मारिका ''श्रुति प्रवाह'' का भी विमोचन हुआ। स्मारिका का सम्पादन इस द्विदिवसीय कार्यक्रम के संयोजक, मुख्य आधार डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली ने किया है।

सफलाः सन्तु यजमानस्य कामाः-आर्यजन अपने पारिवारिक उत्सवों को ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में विद्वत् जनों के सान्निध्य में मनाते हैं और उनके आशीर्वचनों से जीवन को प्रगति के पथ पर ले जाने का संकल्प करते हैं। इसी क्रम में दिनांक १२ फरवरी को **श्री भगवती प्रसाद राठी व श्रीमती राजराठी** ने ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में देवयज्ञ के साथ अपने विवाह की ३४वीं वर्षगांठ मनाई। आशीर्वाद सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने दिया। १३ फरवरी को श्री शान्तिदेव सोमानी जी की पुत्री ''**पूर्वा**'' एवं **रवि** के विवाह की पहली वर्षगांठ के उपलक्ष्य में पूरे परिवार ने यज्ञ में भाग लिया। दम्पत्ती को आशीर्वाद डॉ. धर्मवीर जी ने दिया। दिनांक १५ फरवरी को आर्यवीर दल के शिक्षक एवं सक्रिय कार्यकर्ता **विश्वास पारीक** का ३२वां जन्मदिवस मनाया गया। आशीर्वाद एवं उपदेश **आचार्य सत्येन्द्र** जी ने दिया। दिनांक १६ फरवरी शनिवार को आर्यवीर दल के अधिष्ठाता, गोरक्षा दल अजमेर के अध्यक्ष व परोपकारिणी सभा के कार्यकर्ता **श्री यतीन्द्र** ने विवाह की १९वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सपरिवार यज्ञ में भाग लिया। यजमान दम्पती श्री यतीन्द्र व श्रीमती प्रियंका ने देवयज्ञ को सम्पन्न कर आचार्य सत्येन्द्र जी से आशीर्वाद व उपदेश प्राप्त किया। सभी यज्ञमानों को यज्ञशाला में उपस्थित सभी वरिष्ठ जनों ने आशीर्वाद दिया और उनके दीर्घायुष्य व सुखी जीवन की मंगल कामना के साथ पुष्प वर्षा की।

एक अनुभव-एक कार्यकर्ता जब किसी भी कार्यक्षेत्र में उतरता है, तो उसे अनेक प्रकार के ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक परम्पराओं, रूढ़ियों, अच्छाई-बुराई के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए आचार्य सत्यजित् जी विद्यार्थियों (ब्रह्मचारियों) को इस प्रकार के अनुभवों को प्राप्त करने का अवसर देते रहते हैं। ७ फरवरी को अजमेर में सन्त निरंकारी मण्डल के गुरु बाबा हरदेव सिंह का आगमन हुआ। सत्संग स्थल पर उनका व्याख्यान भी होना था। आचार्य जी के नेतृत्व में गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारी वहां पर गये, हरदेव सिंह जी का प्रवचन सुना। संत निरंकारी मण्डल की मान्यताओं, गतिविधियों, क्रियाकलापों व कार्यशैली के बारे में जाना। ''उनको सुनने के लिये पर्याप्त संख्या में लोग आये हुए थे, व्यवस्था भी उत्तम थी, लेकिन सिद्धान्त नहीं थे। हमारे पास सिद्धान्त हैं, लेकिन उन्हें सुनने के लिये लोग और अच्छी व्यवस्था नहीं है।''

ऋषि उद्यान में उपनिषद् की नई कक्षा-ऋषि उद्यान में चल रहे वैशेषिक दर्शन का अध्ययन सम्पन्न हो गया है, जो कि आचार्य सत्येन्द्र जी पढ़ाते थे। अब **आ. सत्येन्द्र जी के ही द्वारा उपनिषद् की नई कक्षा** का आरम्भ किया जा रहा है। यह कक्षा **१ मार्च २०१३ से प्रारम्भ** हो जायेगी। इसमें **एकादशोपनिषद् डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार** द्वारा लिखित का भाष्य पढ़ाया जायेगा। जो भी सज्जन उपनिषद् पढ़ने के इच्छुक हैं, वे कृपया संपर्क करें-९४१४००६९६१, रात्रि ८.०० से ८.३०। **-ब्र. प्रभाकर आर्य।**

जैसे मनुष्य लोग ब्रह्मचर्यपूर्वक अङ्ग और उपनिषद् सहित चारों वेदों को पढ़कर औरों को पढ़ाकर विद्या को प्रकाशित कर और विद्वान् होके उत्तम कर्मों के अनुष्ठान से सब प्राणियों को सुरवी करें, वैसे ही इन विद्वानों का सत्कार कर इनसे वैदिक विद्या को प्राप्त होकर शरीर वा आत्मा की पुष्टि से धन का अत्यन्त सञ्चय करके सब मनुष्यों को आनन्दित होना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. बीकानेर में योग तथा उपनिषद् प्रचार त्रिदिवसीय शिविर–सेन्ट एन.एन. पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, मुक्ता प्रसाद नगर, बीकानेर द्वारा तीन दिवस के लिए २६ से २८ दिसम्बर २०१२ तक विद्यालय प्रांगण में आचार्य सानंद जी ने प्रवचन के माध्यम से यम-नियम और ईशावास्योपनिषद् का ज्ञान विद्यार्थियों और अध्यापकगण तक पहुँचाया। आचार्य जी ने वेद के आधार पर समाज में फैली वर्ण व्यवस्था की भ्रान्ति को दूर करते हुए यह समझाने का प्रयास किया कि वर्ण-व्यवस्था कर्म आधारित होती है, न कि जाति आधारित। अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर युवा पीढ़ी को जकड़ चुकी समाज की एक लाइलाज बीमारी 'नशे' से मुक्ति के लिए घरेलू उपायों के बारे में भी आपने जानकारी दी। स्वामी जी के प्रवचनों के माध्यम से विद्यार्थी जीवन को उन्नत बनाने का मार्गदर्शन किया।

२. वानप्रस्थ साधक आश्रम का आगामी **क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर** ३१ मार्च से ०७ अप्रैल २०१३ को होने जा रहा है, कृपया शिविर में भाग लेने हेतु इच्छुक महानुभाव २००/- रुपयों का धनादेश प्रेषित करके, आवेदन पत्र, तथा नियमावली मंगवाकर पंजीकरण करवा लेवें। भोजन शुल्क ५००/- रुपये शिविर स्थल पर देय होगा। शिविर में स्थान सीमित है और शिविर में पूर्ण कालीन मौन रखना होगा। बिना पंजीकरण के हम प्रवेश देने में असमर्थ होंगे।

-संपर्क : ०२७७०-२८७४१७

३. आर्यवीर दल एवं **आर्यसमाज सनवाड़,** जिला-**उदयपुर** में **मन्थन प्रतियोगिता** राजकीय माध्यमिक विद्यालय परिसर चोरवड़ी में मनाया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष भगवती लाल मेनारिया, विशेष अतिथि सुरेश मित्तल व ख्यालीलाल आर्य थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ.एम.पी. सिंह आर्य सम्भाग संचालक आर्यवीर दल उदयपुर व दिलीप कुमार आर्य उप-प्रधान आर्यसमाज सनवाड़ थे। इस प्रतियोगिता परीक्षा में ५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

४. प्रो. महावीर, उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त-वैदिक विद्वान् प्रो. महावीर को उत्तराखण्ड राज्य के माननीय राज्यपाल डॉ. अजीज कुरैशी द्वारा उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त करने पर संस्कृत जगत्, आर्यजगत् और देश के गुरुकुलों में प्रसन्नता की लहर, व्याप्त हो गई।

संस्कृत वेद एवं हिन्दी में एम.ए. व्याकरण से आचार्य पी-एच.डी. तथा वैदिक वाङ्मय में डी.लिट् की सर्वोच्च शोधोपाधि से विभूषित प्रो. महावीर ४० वर्षों से अधिक समय से उच्च शिक्षा से जुड़े हुए हैं। आपके निर्देशन में ६० शोधार्थी पी-एच.डी. शोधोपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

देश-विदेश में वैदिक ज्ञान-गंगा प्रवाहित करने वाले आचार्य महावीर को विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष, कुलसचिव एवं उपकुलपति आदि पदों पर कार्य करने का सुदीर्घ अनुभव प्राप्त है। आपकी संस्कृत सेवा एवं विद्वत्ता को देखते हुए उत्तराखण्ड के संस्कृत प्रेमी मुख्यमन्त्रियों ने आपको उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी की सदस्य एवं उपाध्यक्ष मनोनीत किया था। इस प्रकार विश्वविद्यालय प्रशासन एवं संस्कृत अकादमी के सभी महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाले प्रो. महावीर की कुलपति पद पर नियुक्ति से सर्वत्र हर्ष व्याप्त है।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द एवं देश के अमर शहीदों को अपना आदर्श और प्रेरणास्रोत मानने वाले आचार्य महावीर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किये जा चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं-मुम्बई का वेद-वेदाङ्ग पुरस्कार, नागपुर का आर्य विभूषण पुरस्कार, इलाहाबाद का-पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार, भारतमाता मन्दिर, हरिद्वार का विशिष्ट पुरस्कार।

५. गुरुकुल हरिपुर का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न-गुरुकुल हरिपुर जुनवानी, जि-नुआपाड़ा (ओड़िशा) का **तृतीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ** एवं **वार्षिक महोत्सव** "प्राचीन ग्रन्थ परिचय, पितृयज्ञ विस्तार, पर्यावरण संरक्षण, आर्य कार्यकर्ता" आदि सम्मेलनों के साथ ११-१३ जनवरी २०१३ को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। त्रिदिवसीय इस महोत्सव में प्रतिदिन प्रातः ६-७ बजे तक ध्यान एवं **क्रियात्मक योग प्रशिक्षण** स्वामी शान्तानन्द सरस्वती गुजरात के निर्देशन में चला। ७.३०-९.३० तक **११ कुण्डीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ** जिसमें प्रतिदिन चौरालीस जोड़ा यजमान बैठकर यज्ञ में आहुति प्रदान करते थे।

महोत्सव के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में आर्यजगत् लेखनी के धनी, गुरुकुल के संरक्षक **श्री खुशहालचन्द्र जी**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्य (कोलकाता) का **सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह** हुआ। तदुपरान्त मध्याह्नोत्तर नुआपड़ा शहर में **विशाल शोभायात्रा** निकाली गई। १३ जनवरी को महायज्ञ की पूर्णाहूति के उपरान्त समापन समारोह को सम्बोधित करने के लिये श्री चन्द्रशेखर साहू कृषि मन्त्री छत्तीसगढ़ शासन और मुख्यवक्ता के रूप में पूर्व विधायक श्री बसन्त कुमार पण्डा नुआपड़ा उपस्थित थे। महोत्सव में बनने वाले कमरों का **शिलान्यास एवं लोकार्पण** कार्यक्रम भी हुआ। स्वामी विद्यानन्द जी कृत आर्य सिद्धान्त विमर्श का उड़िया आर्य सिद्धान्त विमर्श एवं वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य की जीवनी का विमोचन भी महोत्सवीय अवसर पर हुआ।

कार्यक्रम के अवसर पर **नि:शुल्क विकलांग सेवा शिविर** का आयोजन किया गया था। शिविर के माध्यम से १०० से अधिक विकलांगों का परीक्षण तथा छ: विकलांगों का पैर प्रत्यारोपण किया गया। **नौ सज्जन वानप्रस्थ दीक्षा** से दीक्षित हुए, १०० से अधिक सज्जन आर्यसामाजिक विचारधाराओं से प्रभावित होकर **यज्ञोपवीत** धारण किये। ५० के लगभग विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की चित्रांकन एवं भाषण प्रतियोगिता हुई, जिसमें विजयी छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

६. आदर्श विवाह-चि. हर्षवर्धन सुपुत्र श्री चन्दराम आर्य मन्त्री आर्यसमाज अजमेर का शुभविवाह दिनाङ्क ७ फरवरी २०१३ को सौ. मोनिका सुपुत्री श्री जगमिन्द्र सिंह उत्तम नगर निवासी के साथ वैदिक परम्परा से आर्य विद्वान् श्री श्रद्धानन्द शास्त्री के पौरोहित्य एवं डॉ. धर्मवीर कार्यवाहक प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर के ब्रह्मत्व में जयपुर सम्पन्न हुआ। दहेज के रूप में कुछ भी अङ्गीकार नहीं किया गया, यह विशिष्टता रही। यह आदर्शता अनुकरणीय है। स्वेच्छा से २१००/- रु. परोपकारिणी सभा को गौशाला हेतु, ११००/- रु. आर्यसमाज अजमेर एवं ५००/- आदर्शनगर को दिये गये।

७. आर्यसमाज कांसा (डभरा) जिला-जाँजगीर-चांपा (छ.ग.) का **वार्षिकोत्सव** दिनांक-२, ३ व ४ फरवरी २०१३ को मनाया गया। इस वर्ष उक्त कार्यक्रम में ''वेद कथा व वेद मन्त्रोच्चारण'' का विषय सामने रखकर उत्सव मनाया गया। इसमें परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी विशिष्ट विद्वान् के रूप में तथा कर्मवीर जी एवं साथ में ओमकुमार जी भजनोपदेशक रहे। २ फरवरी २०१३ को झण्डा फहराकर कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. धर्मवीर जी के द्वारा किया गया। रोज प्रात: ८ से १२ बजे तक हवन, भजन और प्रवचन तथा सायं ३ से ६ बजे तक एवं रात्रि ८ से १० तक भजन, प्रवचन उपरोक्त विद्वानों द्वारा सम्पन्न किये गये। गांव वालों को प्रतिदिन रात्रि में प्रोजेक्ट के माध्यम से विचार टी.वी. चैनल की फिल्में दिखाई गई। आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री आचार्य अंशुदेव जी व भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त जी ने अतिथि विद्वान् के रूप में पहुँचकर उत्सव का आनन्द बढ़ाया। रणबीर ब्रह्मचारी जी के निर्देशन में सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शोक-समाचार

८. आचार्य कीज्हानेल्लूर परमेश्वरन् नाम्बूतिरी का निधन-आर्यजगत् के वरिष्ठ विद्वान् और लाहौर गुरुदत्त भवन आर्य गुरुकुल के पूर्व आचार्य श्री कीज्हानेल्लूर परमेश्वरन् नाम्बूतिरी (९२) का निधन २४ जनवरी २०१३ को हुआ। उनका जन्म १९२१ की मालाबार विद्रोह के कुछ महीने पहले केरल के पालाक्काड जिला में हुआ। पढ़ने में अत्यंत रुचि होने के कारण वे अपने उपनयन संस्कार के बाद में आर्यसमाज के संपर्क में आये और लाहौर के गुरुदत्त भवन गुरुकुल में प्रवेश लिया। स्नातक होने के बाद उन्होंने उसी गुरुकुल की आचार्य के नाते सेवा भी की। १९४६ की भारत विभाजन वेला में हुए भीषण दंगों में इस गुरुकुल को विद्रोहियों ने आग लगा दी। गुरुकुल की जलती हुई कुछ पुस्तकें, जो वे हाथ में ले सके, उनके साथ वे अतिसाहसिक पूर्व कराची के रास्ते मुम्बई होते केरल पहुंच गये।

केरल में वे वेद प्रचार के साथ विद्यालयों में हिंदी के अध्यापक भी रहे। पण्डित रघुनन्दन शर्मा के विख्यात ग्रन्थ 'वैदिक सम्पत्ति' का उन्होंने मलयालम भाषा में भाषान्तरण किया। इसके अलावा महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य और ऋग्वेद के कुछ सूक्त, सामवेद भाष्य पूर्ण और अथर्ववेद के कुछ कांड का मलयालम में भाषांतरण किया। वैदिक विषय के बारे में बहुत लेख भी उन्होंने लिखे हैं। मलयालम के अलावा इंग्लिश, हिन्दी, संस्कृत, मराठी, गुजराती, पाली, बलूची इत्यादि भाषाओं के भी वे विद्वान् थे। केरल में आर्यसमाज प्रचार में वे हमारे मार्ग दर्शक रहे। उनके निधन से आर्यजगत् विषेशकर केरल को गहरा धक्का लगा है।

उनके निधन पर २७ जनवरी को वेद विद्या प्रतिष्ठान ने श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया। सभा में श्री प्रशान्त आर्य जी, श्री पं. वेणु गोपाल जी, डॉ. धर्मवीर जी, श्रीमती ज्योत्सना आर्या तथा राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ने उनकी सेवाओं का वर्णन करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

९. विख्यात विदुषी एवं वैदिक धर्म की प्रचारिका **डॉ.**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सुनीति का हैदराबाद (आं.प्र.) में ६ जनवरी २०१३ को देहावसान हुआ। ७ जनवरी को नगर के गण्यमान्य पण्डितों व नागरिकों द्वारा वैदिक मंत्रों के उद्घोष के मध्य उनकी सुपुत्री श्रीमती अपर्णा शुक्ल एवं दोहित्री सुश्री सुंकृति द्वारा अंत्येष्टि संस्कार किया गया।

सुनीति जी को २३ मार्च १९३४ को हैदाराबाद सत्याग्रह के संचालक व सूत्रधार कर्मवीर पं. वंशीलाल जी की द्वितीय सुपुत्री के रूप में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अमर शहीद श्यामलाल जी आपके सगे चाचा थे। आचार्य पं. वेदभूषण व प्राचार्य सदाविजय आर्य की आप बहन थीं। पं. मंजुनाथ शास्त्री, प्राचार्य, डी.ए.वी. विद्यालय, अजमेर से आप परिणय सूत्र में बँधी थीं।

डॉ. सुनीति ने गुरुकुल हाथरस एवं श्यामार्य गुरुकुल से आर्ष शिक्षा प्राप्त की। विवाह के पश्चात् विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में नेत्रदीपक सफलता प्राप्त की। उस्मानिया विश्वविद्यालय में एम.ए. हिन्दी में सर्वप्रथम स्थान व स्वर्ण पदक लेकर उच्चतम प्राप्तांकों का आपका कीर्तिमान आज भी बरकरार है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा तीन वर्ष तक प्रतिमाह छात्रवृत्ति प्राप्त कर पी-एच.डी. पूर्ण की। इसी विश्वविद्यालय में व्याख्याता के रूप में १९९३ में अवकाश ग्रहण किया।

वैदिक विचारों व संस्कारों से ओतप्रोत परिवार में पली-बढ़ी सुनीति जी पर आर्ष एवं महर्षि दयानन्द प्रणीत ग्रन्थों का गहरा प्रभाव था। आर्याभिविनय से उन्हें विशेष लगाव था। दक्षिण भारत की जानीमानी महिला पुरोहित के रूप में उन्होंने अपार लोकप्रियता अर्जित की। जीवन अनूठी शैली में वेद मंत्रों की व्याख्या व प्रवचन करते हुए उन्होंने देश भर की आर्यसमाजों में वेद पारायण यज्ञों में ब्रह्मापद सुशोभित किया। हैदराबाद में प्रथम महिला आर्यसमाज की स्थापना की। हैदराबाद में नगर आर्यसमाज एवं अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान की ओर से पारिवारिक सत्संग, नि:शुल्क संस्कृत शिक्षादान, महीनों चलने वाले 'चतुर्वेद पारायण' व अन्य यज्ञ, वेद प्रचार सप्ताह व भारत भर में आयोजित 'पुरोहित प्रशिक्षण शिविर' सफलता पूर्वक सम्पन्न किए। हिन्दी सत्याग्रह में कारागार की यातना भोगी व गौरक्षा आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। महिलाओं के वेदपाठ के अधिकारी विरोधी श्री. शंकराचार्य के बयान का तीव्र विरोध करते हुए, कलकत्ता के आर्यसमाज के मंच से उन्हें वेद मंत्रों के आधार पर अपना मत सिद्ध करने की खुली चुनौती दी।

डॉ. सुनीति ने वैदिक विषयों पर विपुल लेखन व संपादन किया। आपको अनेक पुरस्कार व सम्मान भी दिये गये। **प्रमुख प्रकाशन**-वेद में धर्म का स्वरूप, वेद में यज्ञ का स्वरूप, दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना, वेद में नारी का स्वरूप, वेद में योग का स्वरूप, हैदराबाद में आर्यसमाज के बढ़ते कदम, आदि। **प्रमुख संपादित पुस्तकें**-वैदिक सान्ध्य गीत, सत्संग सरोवर, यज्ञ सुरभि, जीवन सार, वैदिक सान्ध्य सौरभ, शांति बोध, आर्य गीतमाला आदि।

१०. स्वतन्त्रता सैनानी, समाज सेवक संन्यासी **स्वामी परमानन्दजी सरस्वती** दिनांक ०५.०२.२०१३ मंगलवार को पंचतत्व में विलीन हो गये। जिनका शान्ति यज्ञ दिनांक ०७.०१२.२०१३ गुरुवार को आर्यसमाज मन्दिर बारां में सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया सन् १९३९ से स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़े तथा १९४७ तक **नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के साथ आजाद हिन्द फौज में ड्राईवर के रूप में जुड़े रहे।** तत्पश्चात् स्वामी जी ने झांसी ग्वालियर, भिण्ड-मुरैना, कानपुर, कालपी, आगरा, श्योपुर, शिवपुरी, कोटा, बून्दी, झालावाड़ एवं बारां में लगभग **५२ आर्यसमाजों की स्थापना की।** स्वामी जी ने अपने बच्चों की परवरिश की जो आज आर्यसमाज की सेवा में तत्पर है।

११. स्वामी इन्द्रदेव 'यति' ने अपने जीवन की ९५ शरद् ऋतुओं को लांघकर दिनांक १४ फरवरी २०१३ को प्रात: ७.०० बजे अन्तिम सांस ली। आपके निधन से आर्यजगत् को अपूर्णनीय क्षति हुई है। स्वामी जी तपोनिष्ठ संन्यासी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, आर्ष गुरुकुल शाही, पीलीभीत के कुलपति, महर्षि दयानन्द के दृढ़ अनुयायी, वैदिक साहित्य, आयुर्वेद एवं सूर्य सिद्धान्त के उच्च-कोटि के विद्वान् थे। महर्षि की शिक्षानुसार यति जी अखिल भारतीय आर्य सभान्तर्गत-विद्यार्य, राजार्य एवं धर्मार्थ सभाओं के गठन में अन्तिम समय तक जुटे रहे। आप आर्य राष्ट्र (साप्ताहिक), सायन पञ्चाङ्ग एवं कई अन्य वैदिक सिद्धान्त आधारित-पुस्तिकाओं के नियमित सम्पादक रहे थे। ✱

भूल-सुधार

'फरवरी द्वितीय २०१३' पृष्ठ-२६ पर इन्द्रजित् देव के लेख 'वैदिक धर्म की जय' में सन् १९११, १९१२, १९२१ व १९२० को क्रमश: १९८१, १९८२, १९८१ व १९८० पढ़ा जावे। त्रुटि व असुविधा के लिए खेद है।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

राष्ट्रीय वेद सम्मेलन (९-१० फरवरी २०१३)

ऋषि उद्यान, अजमेर

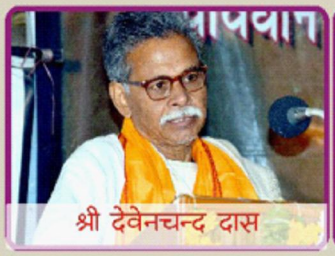
श्री देवेनचन्द दास

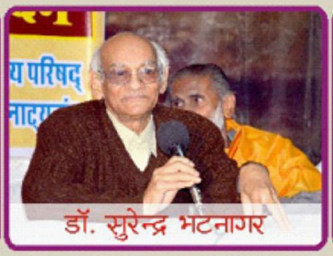
डॉ. सुरेन्द्र भटनागर

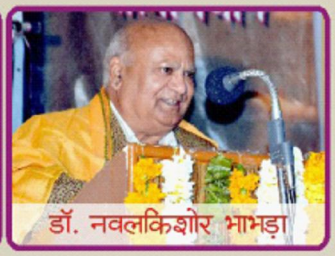
डॉ. नवलकिशोर भाभड़ा

श्री नरेन शाहनी भगत

डॉ. प्रतिभा शुक्ला

पं. शिवनारायण उपाध्याय

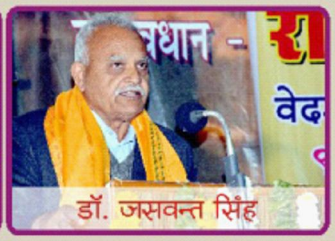
डॉ. जसवन्त सिंह

पुस्तक विमोचन

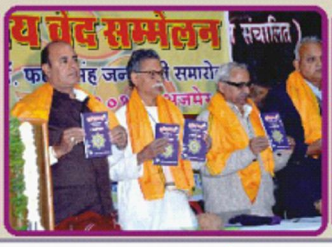

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : २८ फरवरी, २०१३ RNI. NO. ३९५९/५९

डॉ. धर्मवीर

श्रीमती श्रद्धा शेखावत

डॉ. अनन्तराम शर्मा

डॉ. रेणुका राठौड़

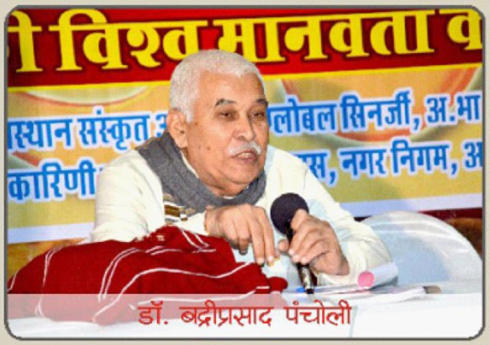

डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली

राष्ट्रीय वेद सम्मेलन (९-१० फरवरी २०१३)

ऋषि उद्यान, अजमेर

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

आवरण : MITTAL 9829797513